आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

G20 भारत 2023 INDIA

रेशम वाणी

अंक : 56 (दिसम्बर, 2022)

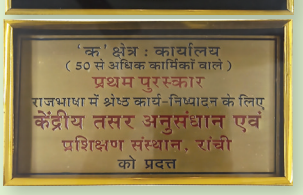

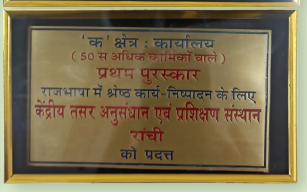

"सोंधी सुगंध, मीठी सी भाषा, गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा"

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
सेंटर ऑफ एक्सीलेंस
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
पिस्का नगड़ी, राँची - 835303, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक की कलम से...

रेशम वाणी, अंक–56 (दिसम्बर, 2022) पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। संस्थान तसर रेशम उद्योग के क्षेत्र में आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त प्रौद्योगिकियों को विकसित कर उनके व्यापक प्रचार–प्रसार का कार्य निरंतर कर रहा है। अपने अनुसंधान एवं विकास दायित्व के निर्वहन के साथ ही हम संघ की राजभाषा नीति का सुदृढ़ कार्यान्वयन सुनिश्चित करने की दिशा में भी सतत् प्रभावी कार्य कर रहे हैं। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि संस्थान को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए निरंतर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह गर्व का विषय है कि संस्थान को वर्ष 2020–21 एवं 2021–22 के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के रूप में लगातार दो प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। राजभाषा कार्यान्वयन के उत्तरदायित्व का निर्वहन करने की दिशा में ही संस्थान द्वारा रेशम वाणी का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। अतः संस्थान को मिले राजभाषा पुरस्कारों में रेशम वाणी के सम्मानित रचनाकारों का भी बहुत बड़ा योगदान है जिसके लिए हम हृदय से उनके आभारी हैं। यह धारणा प्रायः निर्मूल सिद्ध हो रही है कि विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिन्दी प्रभावी नहीं है। रेशम वाणी में प्रकाशित अनुसंधान एवं विकास संबंधी आलेख इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

किसी भी राष्ट्र की वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियाँ उसकी रीढ़ होती हैं। ये उपलब्धियाँ इनके वृहद प्रयोक्ताओं तक यदि उनकी भाषा में नहीं पहुँचेंगी तो ये प्रयोगशालाओं तक ही सीमित रह जाएंगी। आज आवश्यकता है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियाँ जन–साधारण को उनकी भाषा विशेषकर हिन्दी में उपलब्ध कराई जाएं। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में आज हिन्दी कहीं पीछे नहीं है। इसको प्रत्यक्ष रूप से सोशल मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों में देखा जा सकता है।

रेशम वाणी के माध्यम से हम वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग और विभिन्न साहित्यिक विद्याओं की रचनाधर्मिता को प्रचारित–प्रसारित करने का प्रयास करते हैं। हम अपने प्रयास में कितना सफल हुए हैं इसका मूल्यांकन हम रेशम वाणी के प्रबुद्ध पाठकों के ऊपर ही छोड़ते हैं। पाठकों के व्यापक वर्ग तक पत्रिका पहुँचाने के उद्देश्य से पत्रिका को राजभाषा विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट (www.rajbhasha.gov.in) के ई–पत्रिका पुस्तकालय के साथ ही संस्थान की वेबसाइट (www.ctrti.res.in) पर भी अपलोड किया जाता है।

पाठकों की प्रतिक्रियाएं हमें और अधिक परिमार्जन के अवसर प्रदान करेंगी, जिनकी हमें प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. के. सत्यनारायण)
निदेशक

रेशम वाणी
अंक : 56
(दिसम्बर, 2022)

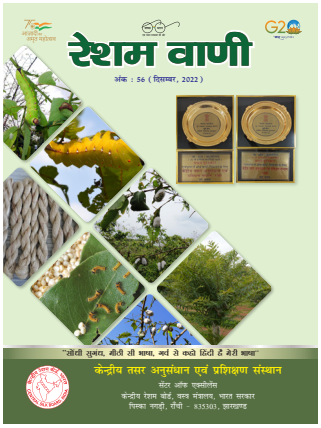

प्रधान सम्पादक
- डॉ. के. सत्यनारायण
  निदेशक

प्रबन्ध सम्पादक
- डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय
  वैज्ञानिक–डी

सम्पादक
- कमल किशोर बडोला
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

सम्पादन सहयोग
- हिमांशु शेखर राय
  वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी)

शब्द संसाधन
- सिकन्दर रविदास
  आशुलिपिक, ग्रेड–I

छायांकन
- तिमिर अधिकारी
  वरिष्ठ कलाकार

विभागीय पत्रिका
- निःशुल्क वितरण हेतु

सम्पर्क
सम्पादक, रेशम वाणी,
केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
पिस्का नगड़ी, राँची – 835303, झारखण्ड
ई–मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in
वेबसाईट : www.ctrti.res.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय–सूची

भाषा और साहित्य

• राजभाषा हिन्दी का महत्व	राजेन्द्र परदेसी	2
• कला, साहित्य और खेल की दुनिया में बाजार	श्यामल बिहारी महतो	4

तकनीकी आलेख

• बस्तर की नैसर्गिक प्रजाति रैली के परिप्रेक्ष्य में तसर रेशम प्रजाति का संरक्षण	सुनील कुमार मिश्र	5
• नीम आधारित कीटनाशी का निर्माण एवं तसर भोज्य पौधों की सुरक्षा हेतु इसका प्रयोग : एक लाभकारी तकनीक	जितेन्द्र सिंह	7
• उत्तराखण्ड राज्य में कुमाऊँ मण्डल के चम्पावत जनपद में ओक तसर रेशम उत्पादन की सम्भावनाएं	वी.सी.फुलोरिया	10
• तसर उत्पादन की उन्नत तकनीकियों के सम्यक उपयोग से रेशम उद्योग में उत्पादकता वृद्धि की संभावनायें	जय प्रकाश पाण्डेय	13
• तसर कीटपालन के लिये प्रक्षेत्र की तैयारी	मोहन दत्त तिवारी	15

विविधा

• प्राचीनतम 'तारापीठ' तथा माँ तारा के अनन्य साधक 'बामा खेपा' का मंदिर	नवीन कुमार सिन्हा	17
• नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और झारखण्ड	ममता बनर्जी 'मंजरी''	30
• रेशम	अमीन मल्ला	37

कहानी

• बहुत देर कर दी	ओम प्रकाश मंजुल	19
• बिन्दी	रंजना जायसवाल	22
• दृश्य से बाहर	देवांशु पाल	26
• हरी चूड़ियाँ	रंगनाथ द्विवेदी	28
• इंसान से बेहतर जानवर	विवेक कुमार पाठक	31
• रूममेट	महेश कुमार केशरी	33

लघु कथा

• धूल	नीना सिन्हा	18
• आखिरी नजर	चेनापल्ली रवि शंकर	21
• अपाहिज	रानी प्रियंका वल्लरी	25
• गरीबी	सावित्री शर्मा "सवि"	29

व्यंग्य

• ड्रैगन का जाल	मीरा जैन	3
• अलविदा..... मास्क भाई	एस.के.घोष	36

काव्य-कोना

• विलासी पौधे	सविता दास सवि	36
• ख्वाहिशें	नेतलाल यादव	37
• वो रोटियाँ	गीता चौबे गूँज	38
• बुनते रिश्ते	वीणा कुमारी	38
• गरीब घर की लड़कियाँ...	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	39
• दो गजलें	राजीव गुप्ता	40

राजभाषा हिन्दी का महत्व

राजेन्द्र परदेसी*

देश को जोड़ने के लिए तथा समुचित विकास के लिए हर राष्ट्र की एक सम्पर्क भाषा होना आवश्यक है। सम्पर्क भाषा से आशय उस भाषा से जिसे राष्ट्र के एक कोने से दूसरे कोने तक लोग समझ सकते हैं और जिसके माध्यम से राष्ट्र के किसी कोने में जाने पर वहाँ की जनता से सम्पर्क किया जा सकता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकता की सीमा का निरूपण है और आपस में संचार प्रक्रिया है – 'उत्तर भारत में सिंध से लेकर पूर्व में असम तक हिन्दी ही ऐसी क्रमिक श्रृंखला है जिसमें सम्पर्क के किसी बिंदु पर बोधगम्यता विछिन्न नहीं होती'। ऐसा अनुभव भारत भ्रमण के समय बीसवीं शताब्दी के मध्य में अमेरिका के भाषाविद् गम्पर्ज ने किया। इसका अर्थ यह निकलता है कि यदि हम पैदल ही एक गाँव से दूसरे गाँव होते हुए असम तक चले जायें तो कहीं भी संचार टूटने का अनुमान नहीं होगा। यदि बोधगम्यता को भाषी–बोली निर्धारण का आधार मान लिया तो सम्पूर्ण भारत को एक ही माननी होगी तथा वर्तमान सभी भाषाओं की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही हो सकती है। कारण हिन्दी हिन्द यूरोपीय भाषा परिवार के अन्दर आती है। यह हिन्दी ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अन्तर्गत वर्गीकृत है। उर्दू, कश्मीरी, बंगाली, उड़िया, पंजाबी, मराठी नेपाली, रोमानी जैसी भाषाएँ भी हिन्द आर्य भाषाएँ हैं। हिन्दी विश्व के सबसे बड़े भाषा, परिवार भारोपीय परिवार की प्रमुख भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या विश्व में दूसरे स्थान पर है। हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों की संख्या विश्व की समस्त भाषाओं से अधिक है। हिन्दी की शब्द सम्पदा अन्य भाषा शब्द समूह से बेहतर तथा समृद्ध है। इस प्रकार भाषा वैज्ञानिक एवं विस्तार की दृष्टि से हिन्दी विश्व की श्रेष्ठतम भाषाओं में से एक है। साहित्यिक दृष्टि से भी हिन्दी विश्व की प्रमुख भाषाओं में है जिसका साहित्य उद्‌भव काल से ही लिखा जा रहा है। आज हिन्दी विश्व में विद्यमान समृद्धतम भाषाओं में से एक है। संरचना की सौंदर्यशीलता भाव–भंगिमाओं की गहनता, अभिव्यक्ति की तीव्रता तथा शैलियों की विविधता को समेटती हुई हिन्दी भाषा अनेक उन्नत रूपों में प्रवाहमान है। आधुनिक युग में हिन्दी का व्यापक प्रचार और प्रयोग होने लगा है। आज हिन्दी का रूप सिर्फ साहित्यिक नहीं रहा। बल्कि यह प्रशासन, व्यापार, न्याय, शिक्षा, विज्ञान, पत्रकारिता के रूप में जनसम्पर्क की भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। सारे देश में समाचार माध्यमों,राजनीतिक कार्यक्रमों के लिए उत्तर–दक्षिण, पूरब–पश्चिम तक जिस भाषा का सर्वमान रूप से व्यवहार हो रहा है, वह हिन्दी है। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को जानकर ही विदेशी चैनल भी सर्वाधिक कार्यक्रम हिन्दी में तैयार कर रहे हैं। अतः आज निर्विवाद रूप से यह सत्य है कि हिन्दी विश्व बाजार की दृष्टि से भी एक सशक्त भाषा बन गयी है। वैसे हिन्दी के उद्‌भव काल से ही उसे प्रश्रय देने के स्थान पर विरोध ही हुआ, परंतु हिन्दी की प्रगति में

कहीं कोई व्यवधान नहीं पड़ी। फारसी तथा अंग्रेजी को राजभाषा बनाए रखने के बावजूद सदैव से हिन्दी ही भारत की सम्पर्क भाषा के रूप में कार्य कर रही है। आज भी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक केवल हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसके बोलने या समझने वाले सहजता से मिल जाते हैं। इसीलिए हिन्दी को राष्ट्रीय सम्पर्क की भाषा माना जाता रहा है। मध्यकालीन भारत के विभिन्न प्रान्तों में धार्मिक चेतना के विकास काल में भक्तिकालीन सांस्कृतिक आंदोलन के सूत्रधार विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले थे। बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा सुदूर दक्षिण में यह भक्ति आन्दोलन शुरू हुआ। इसके सूत्रधार सभी सम्प्रदाय के लोग थे। सभी ने सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रयोग किया। मुगल बादशाहों के दरबार में हिन्दी कवियों को काफी सम्मान दिया गया। महाराष्ट्र में शिवाजी के दरबार में हिन्दी कवि भूषण प्रसिद्ध थे। इसलिए हिन्दी उस युग में भी सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित थी। ब्रिटिशकाल में भी हिन्दी का सर्वाधिक विकास हिन्दी प्रदेश की अपेक्षा हिन्दीत्तर प्रदेशों में हुआ। 19वीं सदी में अब पुनर्जागरण का क्रम चला तो उसके प्रसार के लिए हिन्दी को ही सभी लोक नेताओं ने स्वीकार किया क्योंकि हिन्दी ही एकमात्र भाषा थी, जिसका पूरे देश में प्रसार था। उस समय अंग्रेजी भाषा की आवश्यकता पड़ती थी फिर भी हिन्दी आम जन की भाषा रही... बंगाल में जब ब्रह्म समाज की स्थापना हुई उसके नेता राजा राममोहन राय और केशवचंद ने इस समाज के प्रचार के लिए हिन्दी को ही अपनाया। स्वामी दयानंद ने हिन्दी के माध्यम से ही आर्य समाज का प्रचार किया। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में आर्य समाज की विशिष्ट भूमिका रही है। पंजाब में लाला लाजपत राय और श्रद्धानंद ने हिन्दी के प्रचार का कार्य किया। आर्य समाज आंदोलन तथा राजनीतिक क्षेत्र में जन–जन तक अपने विचार पहुँचाने के लिए उन्होंने हिन्दी का ही सहयोग लिया। महात्मा गाँधी ने तो हिन्दी के प्रश्न को स्वराज्य से भी बढ़कर मानते हुए 1918 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच पर हिन्दी में भाषण दिया और कुछ लोगों द्वारा विरोध करने पर जो उत्तर उन्होंने दिया वह सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व प्रतिपादक है–मैंने सन् 1915 से कांग्रेस के (एक के अलावा) सभी अधिवेशनों में भाग लिया है। इस अधिवेशनों का

मैंने इस अभिप्राय से अध्ययन किया है कि कार्यवाही को अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दुस्तानी में चलाने से कितनी उपयोगिता बढ़ जायेगी। मैंने सैकड़ों प्रतिनिधियों और हजारों अन्य व्यक्तियों से बातचीत की है और मैंने अन्य सभी व्यक्तियों से अधिक विशाल क्षेत्र का दौरा किया है और अधिक शिक्षित तथा अशिक्षित लोगों से मिला हूँ – लोकमान्य तिलक और श्रीमती एनीबेसेंट से भी अधिक और मैं इस दृढ़ निश्चय पर पहुँचा हूँ कि हिन्दुस्तानी के अलावा संभवतः कोई ऐसी भाषा नहीं है जो विचार विनिमय या राष्ट्रीय माध्यम बन सके।' आज राजनीतिक कारणों से हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में चाहे जितने व्यवधानों की शिकार हो परन्तु अपनी विविधता के कारण भारत में सम्पर्क भाषा के रूप में जन–जन की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। आज सारे देश में समाचार माध्यमों, राजनीतिक कार्यक्रमों के लिए उत्तर–दक्षिण, पूर्व–पश्चिम तक जिस भाषा का व्यवहार हो रहा है, वह हिन्दी है। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को जानकर ही विदेशी चैनल भी सर्वाधिक कार्यक्रम हिन्दी में तैयार कर रहे हैं। हिन्दी भाषा का बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से भी विश्व में दूसरा स्थान है। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी ही सर्वाधिक समुचित भाषा है। लेकिन राष्ट्रभाषा के रूप में अभी जितनी वृद्धि होनी चाहिए, उतनी नहीं हुई। हिन्दी को सम्पन्न बनाने के लिए एक पक्षीय दृष्टिकोण का परित्याग आवश्यक है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा शास्त्र, कृषि विज्ञान तथा इसी प्रकार के उपयोगी विषयों पर मौलिक एवं अनुदित पुस्तकों की आवश्यकता की जो चर्चा होती रहती है। उस पर विशेष ध्यान देकर स्तरीय ग्रन्थ निर्माण का कार्य युद्धस्तर पर करना चाहिए। लेकिन इस बात का भी भय है कि उपयोगी विषयों पर अतिशय आग्रह के कारण उदार मानवीय ज्ञान की उपेक्षा हो जाये। हिन्दी में आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की सभी शाखाओं में प्रामाणिक ग्रन्थों का जितना अभाव है । लगभग वैसा ही अभाव उदार मानवीय ज्ञान के क्षेत्र में जो विचार–चिन्तन पाश्चात्य देशों में हो रहा है उसे भी सबसे अद्यतन रूप में हिन्दी में सुलभ किया जाये। अंत में, राष्ट्रपति जैल सिंह के अनुसार –''मैं महसूस कर रहा हूँ कि लोकमान्य तिलक और महात्मा गाँधी जैसे महानुभाव हिन्दी भाषी प्रान्तों में पैदा नहीं हुए थे। इन सबने हिन्दी की लड़ाई हिन्दी के द्वारा ही लड़ी थी। हिन्दी भाषा न तो पंजाबी को मारना चाहती है, न गुजराती को, न मराठी को, वह तो सबको जिन्दा रखने के लिए तैयार है।'' महात्मा गाँधी ने कहा था कि–'हिन्दी के बिना राष्ट्र गूँगा है।'

❐❐❐

*136–मयूर रेजीडेंसी, फरीदी नगर, लखनऊ–226015

व्यंग्य

ड्रैगन का जाल

मीरा जैन*

सर्वप्रथम तुम तो सीमा विस्तारक मंत्र के प्रणेता चीन को हम सभी की ओर से कोटि–कोटि क्रंदन। पड़ोसी देश चीन का नाम सुनते ही हमारा सुप्तावस्था में पड़ा दिमाग जम–जम कर चटकने लगता है कि कहीं न कहीं धरती माँ को तोड़ा–तोड़ी कर अपने में जोड़ा–जोड़ी करने की जुगाड़ में शुतुरमुर्ग की भाँति एक पैर पर खड़ा होकर पड़ोसियों की ओर अपने अनेकों पैर दौड़ा रहा होगा। येन–केन–प्रकारेण प्रयास यही कि जमीन विस्तार के तार चाइना डोर की भाँति चहुँ ओर पसर जाये ताकि उसके देश की सीमा भी पसर–पसर कर फुग्गे से फुग्गारा बन जाए वह जिधर भी नजर दौड़ाये बस चीन ही चीन नजर आए। दो सेंटीमीटर की आँखें हजारों वर्ग किलोमीटर धरा पर आँखें गड़ाये बैठी है। इसके लिए उन्हें आँखों में धूल झोंकना पड़े तो झोकेंगे, पीठ पर छुरा भोंकना पड़े तो भोकेंगे, मरना पड़े मारना पड़े चाहे जो करना पड़े करेंगे लेकिन अपने प्राणों से प्यारी दूसरों की ध ारती माता को अपनी आँखों से तब तक ओझल नहीं करेंगे जब तक वह अपनी उनकी झोली में नहीं समा जाती। उसका अतीत इससे सराबोर और भविष्य पर काली नजर का दौर है। इस मंशा से जैसे ही हमारी धरती माँ की ओर रुख करता है तुरंत उसे

यहाँ से रुखसत होना पड़ता है क्योंकि चीन के प्यादों को हमारी सेना नाकों चने चबा, बिना घोड़े ही उन पर चाबुक चला उन्हें यूँ चलता करती है जैसे कोई नेता जनता से किए वादों को । लेकिन ऊँट के मुँह में जीरे के समान आस–पास के महीन–महीन देशों पर जल–थल विवादों का सिलसिला भी सदियों से निरंतर कायम रखे हुए हैं। ड्रैगन के वादे पानी की लकीरें एवं विवाद गिरिराज की तरह अटल है। अपनी शक्ति और अर्थ की आहुति हमेशा से अर्थ विस्तारीकरण हेतु ही देता आया है। विश्व के अधिकांश देश इसकी आहुति से बेहद आहत है। सभी की मंशा है कि इसकी आहुति शीघ्रातिशीघ्र पूर्णाहुति में तब्दील हो जिससे उसके इर्द–गिर्द शांति का साम्राज्य स्थापित हो सके। हमारी भी प्रार्थना यही है कि इस अशांत ड्रैगन अर्थात् भगवान बुद्ध के अनुयायी को सद्बुद्धि दे ताकि अड़ोसी–पड़ोसी चैन की नींद सो सके और मानवता सिर उठाकर हँसकर बोल सके कि विश्व का हर मानव भाई–भाई है।

❐❐❐

*516, साँईनाथ कॉलोनी, सेठीनगर, उज्जैन, म.प्र.।

कला, साहित्य और खेल की दुनिया में बाजार

श्यामल बिहारी महतो*

आज जब नयी सदी पर अमानवीय शक्तियाँ हावी है, हम बाजारवाद से नहीं बच सकते हैं। पहले मनुष्य बाजार को नियंत्रित करता था। आज बाजार मनुष्य को नियंत्रित कर रहा है। उत्पादन में श्रम की आवश्यकता कम होती दिखती हैं। आज टेक्नोलॉजी जीवन को नियंत्रित कर रही है। टेक्नोलॉजी ने श्रम को हाशिये पर ला दिया है। श्रमिक हाशिये पर आ गये हैं, उनका जीवन, उनके बाल–बच्चों का भविष्य सब दाँव पर लग गये हैं और यह सब कुछ टेक्नोलॉजी की मार है। टेक्नोलॉजी सिर्फ श्रम को ही नहीं प्रभावित किया है, खेत–खलिहान से लेकर बाजार और बाजार से लेकर मनुष्यों के बिस्तर तक को अपने कब्जे में ले लिया है । आदमी दो दिनों तक वगैर खाये रह लेगा लेकिन मोबाइल के बिना एक पल भी नहीं रह सकता है। यह टेक्नोलॉजी चमत्कार नहीं बल्कि वो बीमारी है जिसे मनुष्यों ने चादर की तरह ओढ ली है। इस विकास का लाभ भी खास वर्ग को ही मिल पा रहा है। मनुष्य, मनुष्य न रहकर एक साधन मात्र बनकर रह गया है। जहाँ उन्हें खपाना चाहो, खपा लो, मूल्य के आगे वह अपना मोल भूला चुका है। इस तरह देखें, तो बाजार का बाजा हर क्षेत्र में जोर–शोर से बज रहा है। अगर हम कला–सिनेमा की बात करें तो यहाँ कयामत से कयामत तक की प्रतिस्पर्धा है। बाजार का सिद्धांत है कि वह अपने लिए एक मॉडल चुनता है एक सुपर मॉडल जिसे आप चाहें तो नायक भी कह सकते हैं। वह केवल फायदे का सौदा करता है, सो आज हरेक क्षेत्र में एक नायक या महानायक मौजूद है। बाजार के व्यापार को बढ़ाने तथा भोली– भाली जनता को छलने के बडे औधोगिक घराने तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने फिल्म जगत के कुछ नायकों को महानायक बनाने की कोशिश की। इस दौड़ में जो सबसे अधिक प्रतिभा सम्पन्न थे वे आगे निकल गये। अमिताभ बच्चन फिल्म जगत के ऐसे ही नायक हैं जिन्हें महानायक बनाने में बाजार पूरी तरह से सफल रहा। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिनके पिता हरिवंश राय बच्चन हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि थे, जीवन और यौवन के हालावाद कवि के रूप में इनकी विशेष पहचान बनी थी, इनका नेहरू परिवार से काफी घनिष्ठ सम्बन्ध था । इंदिरा गाँधी अमिताभ बच्चन को बेटे सा स्नेह देती थी। बहुत कम लोगों को यह ज्ञात होगा कि इसी घनिष्ठता के कारण राजीव गाँधी और सोनिया गाँधी का विवाह हरिवंश राय बच्चन के मकान में सम्पन्न हुआ था। सात हिंदुस्तानी के पिटे हुए अमिताभ को एक नायक के रूप में पहचान डॉक्टर राही मासूम रजा द्वारा लिखित कहानी "रास्ते का पत्थर" और अलाप जैसी फिल्मों से मिली। फिर उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। प्रतिभाशाली संवाद अभिनय और भाषा से वे जनता के सर्वप्रिय नायक बन गये। कवि और संस्कारवान पिता का बेटा होने का भी उन्हें भरपूर लाभ मिला। वे पढ़े–लिखे अभिनेताओं में शूमार होने लगे। दशकों बाद भी बाजार में ऊँची कीमत इसी प्रतिभा सम्पन्न महानायक पर लगती है। जब देश में सरकार ने उदारीकरण की नीति अपनायी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को देश में आगमन का निमंत्रण दे दिया तो इससे छोटे उद्योग, घरेलू उद्योग लड़खड़ा गये। देखते–देखते समाप्त होते चले गये और भारत में नयी आर्थिक नीति के कारण चैनलों की बाढ़ आ गयी इससे भारतीय पूँजीपतियों ने भी अपने–अपने चैनल बाजार में उतारे। इसमें धर्म का भी व्यवसायीकरण खूब किया गया। बड़े–बड़े फिल्म निर्माताओं ने धार्मिक धारावाहिकों के जरिये भारतीय जनमानस में जबरदस्त घूसपैठ की नतीजा हर घरों के छत पर एंटिना नजर आने लगा । आस्था, संस्कार और कुरान पर आधारित चैनल बाजार में आ गये, इसका एक ही मकसद था सिर्फ पैसा कमाना। जिस कारण तथाकथित कितने बाबाओं और मुल्लाओं का उदय हुआ, रामदेव बाबा ने आस्था में पहले लोगों के बीच योगासन परोसा फिर पंतजलि नाम का ब्राण्ड ले आया और फिर आटा– तेल, च्यवनप्राश बेचने लगे तो निर्मल बाबा कैसे पीछे रहते वह हर दिन सूप–दाउरी का प्रचार करने लगे। बाँझ को बच्चे होने के नुस्खे बताने लगे और करोडों कमाने लगे। जिन औरतों को अपने पतियों से बच्चे प्राप्त नहीं हो रहे थे वे सूप–दाउरी बाबाओं को चढ़ा–चढ़ा कर घर में बच्चे लेकर आने लगीं, बाबाओं का जय जयकार होने लगा। बाजार की बाहें फैलने लगी यह सब आर्थिक उदारीकरण का किसी चमत्कार से कम नहीं है। इन बाबाओं का उद्धेश्य जनता का भला करना न होकर ज्यादा–से–ज्यादा पैसा बटोरना रहा है। जब पैसा बटोरना ही उद्देश्य हो तो जो ज्यादा बिकेगा उसी का ज्यादा प्रचार भी होगा, सो अंधविश्वास से लेकर अपराध तक सभी तेजी के साथ बिकने लगे। यहाँ भी विज्ञापनों का बाजार करोड़ों का भाव पार कर चुका है। पेप्सी, थमसप तथा कोक जैसी कम्पनियों ने करोड़ों रुपये खर्च करके फिल्म जगत और खेल जगत के महत्वपूर्ण लोगों से अपने–अपने माल का खूब प्रचार–प्रसार करवाये। भारतीय जीवन पर खेल और फिल्मों का जबरदस्त प्रभाव है। फिल्मों ने अमिताभ को महानायक बना दिया, विज्ञापनों से करोड़ों

शेष पृष्ठ 16 पर...

बस्तर की नैसर्गिक प्रजाति रैली के परिप्रेक्ष्य में तसर रेशम प्रजाति का संरक्षण

सुनील कुमार मिश्र*

एक विशिष्ट स्थानीय क्षेत्र की तसर रेशमकीट प्रजाति को उसी विशेष क्षेत्र की परि–प्रजाति कहा जाता है। ये पारि–प्रजातियाँ तसर उत्पादन वाले क्षेत्रों के विभिन्न जंगलों में पाए जाते हैं। स्थानीय निवासी ज्यादातर आदिवासी उन्हें वन क्षेत्रों से इकट्ठा करते हैं और बाजारों में बेचते हैं।

यह उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट देश के पूर्वी (बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा) मध्य (छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश) और दक्षिणी (महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश) पठार पर घने और आर्द्र पर्णपाती जंगलों के एक अलग क्षेत्र में और उत्तर प्रदेश एवं कर्नाटक के किनारे व्यापक रूप से पाया जाता है।

इन प्रजातियों के वितरण की सीमा 120 से 300 उत्तरी अक्षांश और 720 से 960 पूर्वी देशांतर के बीच काफी विस्तृत है। असम, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक क्षेत्र के छोटे अलग–अलग इलाकों में भी इन परि–प्रजातियों की उपस्थिति को दर्ज किया गया है। विभिन्न प्राकृतिक आवासों में इन प्रजातियों के विशिष्ट अनुकूलन के कारण इसे पारिस्थितिक प्रकारों में विभाजित किया गया है। सर्वेक्षण रिपोर्टों से पता चलता है कि तसर रेशम प्रजातियों की जनसंख्या वितरण की भौगोलिक सीमा मुख्य रूप से चार प्रकार की मिट्टी यानी लाल, रेतीली, लाल, काली मिट्टी और लेटराइटिक तक सीमित है।

तसर रेशमकीट प्रकृति में एक से ज्यादा खाद्य पौधों को ग्रहण करती है और इस प्रकार वे विभिन्न प्रकार के जंगली पौधों पर पलते हैं। आम तौर पर अर्ध–पालतू पारि–प्रजातियों में तसर रेशम कीटपालन नियमित रूप से अर्जुन और आसन का खाद्य पौधों का उपयोग किया जाता है। साल के पौधे पर बिहार के लरिया, ओडिशा के मोदल, छत्तीसगढ़ के रैली जैसी किस्मों के बड़ी मात्रा में प्रकृति में उगाए गए कोकून के संग्रह के लिए आधार बनते हैं।

अब तक 17 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेशों से 44 तसर पारि–प्रजातियों का संग्रह किया जा चुका है। ये सभी पारि–प्रजातियाँ एन्थीरिया माइलिट्टा का आनुवंशिक संसाधन बनाती है। ये बेहतर प्रजनन क्षमता रखती है और अपने प्राकृतिक आवास में अपने भौतिक और आनुवंशिक लक्षणों को बनाए रखती है जो बाहरी परिस्थितियों में पाले जाने पर बिगड़ जाती हैं। उपरोक्त 44 पारिस्थितिकी प्रजातियों में से डाबा, सरिहन, लरिया, रैली, सुकिंदा, मोदल, आंध्रा स्थानीय और महाराष्ट्र स्थानीय उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट एन्थीरिया माइलिट्टा की सामान्य पारिस्थितिकी है जिनको वाणिज्यिक रेशम उत्पादन के लिए दोहन किया जाता है।

यह पारि–प्रजातियाँ उनके वितरण, भू–पारिस्थितिक स्थिति के अधार पर प्रकृति में एक द्वी और त्रिचक्री विशिष्ट होते हैं और वे गुणात्मक और मात्रात्मक लक्षणों में एक–दूसरे से भिन्न होती हैं। प्रजातियों के जीवन चक्र की संख्या के आधार पर यह मुख्य रूप से एक वर्ष में एक, दो या तीन अर्थात जुलाई–अगस्त,

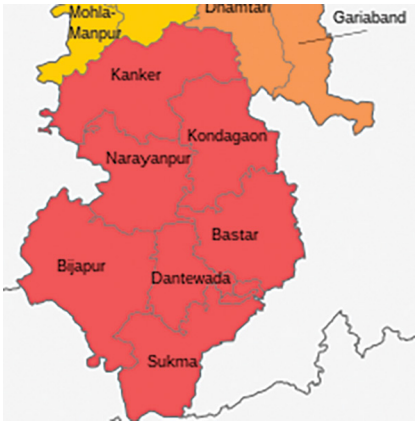

चित्र–1: बस्तर उपखण्ड का मानचित्र

चित्र–2: साप्ताहिक बाजारों में कोसों की बिक्री

चित्र–3: डंठल रहित कोसा

सितंबर–अक्टूबर और नवंबर से फरवरी के दौरान जीवन चक्र प्रदर्शित करती है। यह कीट शाकाहारी है, मुख्य रूप से अर्जुन, आसन, साल और अन्य द्वितीयक तथा बेर, काजू, अंजन, कुंभी आदि जैसे खाद्य पौधों की पत्ते को खाते हैं।

छत्तीसगढ़ का बस्तर जिला 3 एकड़ में घने साल के जंगलों से समृद्ध है। बस्तर जिले में वार्षिक औसत तापमान 19.34 से 35.52 तक आर्द्रता 40.38% से 87.10% वर्षा 83 दिनों में 1240 मिमी होती है। स्थानीय तसर पारि–प्रजाति रैली, जो बस्तर अनुमंडल के 7 जिलों में से 5 जिले बस्तर, कोंडागांव, कांकेर, दंतेवाड़ा और नारायणपुर जिलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अर्ध–पालतू तसर पारि–प्रजातियों के तुलना में रैली कोसों को उत्तम माना गया है। इन कोसों का औसत कोसा वजन 11.71 ग्राम लम्बाई, 52.92 से.मी. चौड़ाई, 35.66 से.मी. और कोसा आयतन 37.7 घन सेंटी मीटर और रेशम अनुपात 17.51% है। बस्तर जिला में वर्ष 2020 के दौरान कुल रैली कोसा उत्पादन 1.97 करोड़ है।

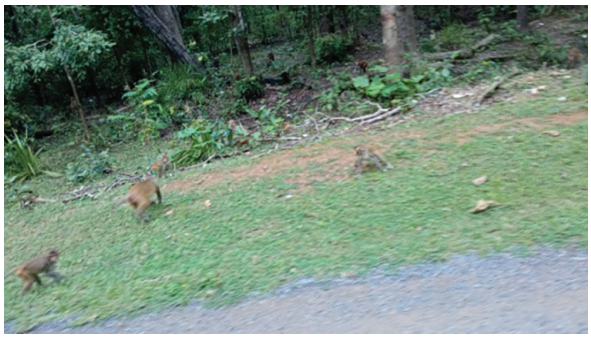

चित्र–4 : नैसर्गिक प्रजाति के कीटों के ऊपर अन्य प्राणियों, विशेष रूप से बंदरों का प्रभाव

आम तौर पर कोयों के संग्रह की प्रक्रिया के दौरान खाद्य पौधों से कोसों को खींचने के कारण डंठल टूट जाती है। स्थानीय आदिवासी कोयों के संग्रह के बाद उन्हें साप्ताहिक बाजारों में महाजनों को बेचते हैं और उन्हें उनकी दैनिक जरूरतों के लिए बदल देते हैं। इन कोयों को महाजन उच्च दरों पर बस्तर से दूर छत्तीसगढ़, ओडिशा, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में बेच देते हैं। लेन–देन की प्रक्रिया के श्रृंखला में, आदिवासी समाज, अन्य वर्गों की तुलना में नगण्य कमाते हैं।

उपलब्ध पिछले वर्षों की आँकड़ों के विश्लेषण में कोसों के उत्पादन में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। प्रस्तुत परिस्थितियों में रैली तसर नैसर्गिक प्रजाति की कीटपालन संस्कृति को जैविक तथा खाद्य पौधों, पीड़क, परजीवी और रेशमकीट के परभक्षियों और अजैविक तथा तापमान, आर्द्रता और वर्षा खतरों का सामना करना पड़ रहा है। चूँकि यह एक

चित्र–5 : जंगल कटाई

वन आधारित उद्योग है, वनों की वनस्पतियों की भारी कमी के साथ–साथ कोसों के बड़े पैमाने पर संग्रह तसर रेशमकीट आबादी के लिए प्रमुख जैविक खतरे हैं। लगातार बढ़ती मनुष्य की आबादी का ईंधन चारा और लकड़ी की माँग को पूरा करने के लिए तसर रेशमकीट खाद्य पौधों के वन क्षेत्र का सिकुड़ना प्रमुख चिंता का विषय है। यह पारिस्थितिकी और जलवायु में परिवर्तन के साथ–साथ पर्यावरणीय तनाव का भी परिणाम है। प्रजाति के संरक्षण की प्रक्रिया के बारे में जानकारी की कमी के एवम् आदिवासियों की निम्न आर्थिक स्थिति के कारण बड़े पैमाने पर संग्रह किए जा रहे कोसों की वजह से आगे जनसंख्या वृद्धि या प्रगुणन में कमी का पता चलता है।

इस प्रकार उपरोक्त स्थितियों में मानव हस्तक्षेप को रोककर संरक्षण प्रक्रिया को लागू करने के लिए कदम उठाना अति अवश्यक हो गया है। अतः जिला प्रशासन और वन विभाग के साथ टेक्नोक्रेट के हस्तक्षेप से पारिस्थितिकी को लुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल होने से रोका जा सकेगा।

❐❐❐

*वैज्ञानिक–डी, क्षे.रे.उ.अ.के., जगदलपुर

बिना मातृभाषा के हिन्दी साहित्य भी वीरान रहेगा, हिन्दी रहेगी तभी तो हिन्दुतान रहेगा ।

नीम आधारित कीटनाशी का निर्माण एवं तसर भोज्य पौधों की सुरक्षा हेतु इसका प्रयोग : एक लाभकारी तकनीक

जितेन्द्र सिंह*, विशाल मित्तल, हनमंत गडाद, सुस्मिता दास, डॉ.के.सत्यनारायण

सारांश

तसर भोज्य पौधों की सुरक्षा हेतु तसर कीटपालक अधिक–से–अधिक रासायनिक कीटनाशी का प्रयोग करते हैं जिससे न केवल पर्यावरण को नुकसान हो रहा है अपितु तसर भोज्य पौधों की सुरक्षा में लागत दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसके फलस्वरूप तसर कीटपलकों की आमदनी भी घटने लगी है। नीम एक ऐसा प्रकृति प्रिय कीटनाशी पौधा है जिसका उपयोग तसर भोज्य पौधों में लगने वाले हानिकारक कीटों के प्रबंधन हेतु कर सकते हैं। किसान अपने स्तर पर नीम की पत्तियों से कीटनाशक बनाकर कीटनाशी पर होने वाले खर्च को बचा सकते हैं। किसान 1 किलोग्राम साफ एवं धुली हुई नीम की पत्तियों को ढाई लीटर मठ्ठे में भिंगोकर मिट्टी के बर्तन को मिट्टी के ढक्कन से ढककर मसलीन के कपडे से मुँह बांधकर 15 दिनों के लिए घर के किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। अवधि समाप्त होने के पश्चात् इसे मिक्सी या सिलबट्टे की सहायता से अच्छी तरह से घोल बना लें, तत्पश्चात इसे मसलीन कपड़े की सहयता से इसे छान लें। इस विलयन को मात्री विलयन के नाम से जानते तथा इस घोल को अलग–अलग कीटों के प्रबंधन के लिए अलग–अलग मात्रा में पानी मिलाकर छिड़काव करके हानिकारक कीट प्रबंधन कर सकते हैं। भोज्य पौधों पत्तियों को नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख कीट मुख्य रूप से गॉल तथा पर्ण नाशक कीट (मई जून बीटल, रेड बीटल, एश वीभिल तथा वेपरर तसक मोथ) के प्रबंधन हेतु 1:30 अनुपात में मात्री विलयन और पानी का घोल बनाकर छिड़काव करने, तना को नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख कीट मुख्य रूप से छाल भक्षी, तना छेदक कीट के प्रबंधन हेतु 1:10 अनुपात में मात्री विलयन और पानी के घोल का छिड़काव तथा दीमक की आक्रामकता अधिक होने पर 1:15 अनुपात में मात्री विलयन और पानी के घोल का छिड़काव करके सभी हानिकारक कीटों का प्रबंधन कर सकते हैं। नीम आधारित कीटनाशी का निर्माण तथा इसका प्रयोग तसर भोज्य पौधों में लगने वाले प्रमुख कीट के सुरक्षा हेतु करके जहाँ एक तरफ पौधों की सुरक्षा हेतु रासायनिक कीटनाशी का प्रयोग कम होता है वहीं दूसरी तरफ रासायनिक कीटनाशी पर खर्च होने वाली लागत तथा पर्यावरण प्रदूषण भी कम होता है।

प्रस्तावना

तसर भोज्य पौधे में मुख्य रूप से भोज्य पौधों की पत्तियों को हानि पहुँचाने वाले हानिकारक कीट जैसे गॉल तथा पर्ण नाशक कीट (मई जून बीटल , रेड बीटल, एश वीभिल तथा वेपरर तसक मोथ) प्रमुख कीट हैं जबकि तना को हानि पहुँचाने वाले प्रमुख कीट छाल भक्षी, तना छेदक तथा दीमक प्रमुख कीट हैं। जहाँ एक तरफ पत्ती को नुकसान पहुँचाने वाले कीट पत्ती की मात्रा तथा गुणवता में कमी लाते हैं वहीं दूसरे तरफ तना को नुकसान पहुँचाने वाले कीट की आक्रामकता अधिक होने पर पत्ती की मात्रा तथा गुणवता के साथ–साथ पौधे के अस्तित्व ही समाप्त होने का खतरा बढ़ जाता है। इन समस्याओं को कम करने हेतु हमारे पास दो विकल्प होते हैं, पहला या तो हम रसायन कीटनाशी का प्रयोग करके हानिकारक कीटों का प्रबंधन करें या दूसरी तरफ प्रकृति में ऐसे पौधे जिनके पत्तियों में कीटनाशी के गुण विद्यमान हैं उससे कीटनाशी बनाकर तसर भोज्य पौधों में लगने वाले हानिकारक कीटों का प्रबंधन करें। नीम एक ऐसा प्रकृति प्रिय कीटनाशी है जिसके उपयोग से तसर भोज्य पौधों में लगने वाले कीटों के प्रबंधन के साथ रासायनिक कीटनाशी द्वारा होने वाले पर्यावरण नुकसान को भी कम किया जा सकता है। किसान अपने स्तर पर नीम की पत्तियों तथा बीजों से कीटनाशक बनाकर कीटनाशी पर होने वाले खर्च को बचा सकते हैं।

सारणी संख्या 1 : तसर भोज्य पौधों को प्रभावित करने वाले प्रमुख हानिकारक कीट

क्र. सं.	तसर भोज्य पौधों के पत्तियों को नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख कीट	तसर भोज्य पौधों के तना को नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख कीट
1	गॉल	छाल भक्षी
2	मई जून बीटल	तना छेदक
3	रेड बीटल	दीमक
4	एश वीभिल	
5	वेपरर तसक मोथ	

नीम आधारित कीटनाशी बनाने हेतु आवश्यक सामग्री :

1. नीम की पत्ती (1 किलोग्राम) आवश्यकतानुसार कम अथवा अधिक मात्रा।
2. मठ्ठा (2.5 लीटर) उपलब्ध नहीं होने पर आधा किलोग्राम दही को 2.0 लीटर पानी में मिलाकर बना लें। साथ ही

आवश्यकता अनुसार इसकी मात्रा कम अथवा अधिक करना चाहिए।

3. मिट्टी का बर्तन (10–15 लीटर क्षमता) तथा मिट्टी का ढक्कन।
4. मसलीन का कपड़ा (0.5 मीटर)।
5. मिक्सर (1)
6. हैण्ड स्प्रेयर 1 (2 अथवा 5 लीटर की क्षमता)।

नीम आधारित कीटनाशी बनाने की विधि :

नीम आधारित कीटनाशी बनाने के लिए सर्वप्रथम एक किलोग्राम नीम की पत्ती लेना चाहिए (जो टहनियों से अलग की गई हों) । तत्पश्चात् इस पत्ती को साफ पानी में धुल लेना चाहिए जिससे पत्ती पर लगे मिट्टी के कण आसानी से पत्ती से अलग हो जाये। धूली हुई नीम की पत्तियों को मिट्टी के बर्तन में डाल देते हैं, तत्पश्चात् मिट्टी के बर्तन में 2.5 लीटर मट्ठा डालते हैं। इसके बाद मिट्टी के बर्तन का मुख मिट्टी के ढक्कन

चित्र सं. 1–ए (टहनियों सहित नीम की पत्ती), बी (टहनियों से नीम की पत्ती को अलग करना), सी (पत्तियों पर लगे धुल को साफ करना), डी (नीम की पत्तियों में मट्ठा मिलाना), ई (नीम की पत्तियाँ तथा मट्ठा द्वारा तैयार मिश्रण को मिट्टी के बर्तन में रखना), एफ (मिट्टी के बर्तन के मुख को ढक्कन तथा मसलीन के कपड़े से बाँधना तथा अँधेरे में रखना), जी (मिश्रण को मिक्सी अथवा सिलबट्टा की सहायता से मिक्स करना), एच (मिक्सिंग के बाद पेस्ट तैयार करना), आई (मात्री घोल तैयार करना) जे (हानिकारक कीट के अनुसार मात्री घोल में पानी मिलाना)।

से अच्छी प्रकार से ढक देना चाहिए। साथ ही मसलीन कपड़ा से भी बर्तन के मुख को अच्छी प्रकार बांध देना चाहिए जिससे बाहर से धूल के कण अथवा किसी हानिकारक जीव का प्रवेश न हो। इसके बाद घड़े को अंधेरे घर में 15 दिनों के लिए रख देना चाहिए। पन्द्रह दिनों के पश्चात् नीम के पत्ती और मट्ठे के मिश्रण को अच्छी तरह मिलाने के बाद उसे मिक्सर अथवा सिलबट्टे की सहयता से पत्तियों को अच्छी तरह मिक्स करके पेस्ट बना लेना चाहिए। इस विलयन तथा विलयन युक्त पेस्ट को मसलीन के कपड़ा की सहायता से छान (निथार) लेना चाहिए। छनित भाग (द्रव) को अलग रखते हैं तथा बचे हुए भाग अर्ध ठोस भाग में पुनः 1.0 लीटर पानी अच्छी तरह से मिक्स करके मसलीन कपडा से छान लेते हैं। दोनों छनित घोल को मिला लें इस चनित घोल को मात्री घोल कहते हैं। हानिकारक कीट (पत्ती और तना को नुकसान) की आक्रामकता के अनुसार मात्री घोल में पानी मिलाकर छिड़काव करके तसर भोज्य पौधों की सुरक्षा आसानी से किया जा सकता है।

नीम आधारित कीटनाशी में बैक्टीरियल लोड तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा : विवरण

सारणी संख्या 2 : नीम आधारित कीटनाशी में बैक्टीरियल लोड तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा

क्र. सं.	बैक्टीरियल लोड	सूक्ष्म पोषक तत्व	मात्रा (पी.पी. एम /10 मि.ली
1	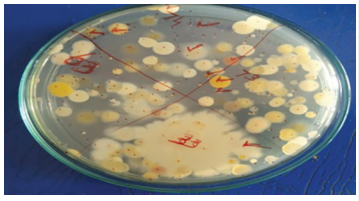	जिंक	5 .0
2		कॉपर	5 .0
3		मैंगनीज	1.0
4		आयरन	15.0
	2.4 ग 109 सी एफ यु/एम एल और 10 आइसोलेट		

तसर भोज्य पौधों की पत्तियों को नुकसान पहुचाने वाले कीटो के प्रबंधन हेतु नीम आधारित कीटनाशी का प्रयोग

तसर भोज्य पौधों में पत्तियों को हानि पहुँचाने वाले प्रमुख हानिकारक कीट गॉल तथा पर्ण नाशक कीट (मई जून बीटल, रेड बीटल, एश वीभिल तथा वेपरर तसक मोथ) कीट के प्रबंधन हेतु नीम आधारित कीटनाशी के मात्री विलयन में 1:30 के अनुपात में मात्री विलयन और पानी का घोल बनाकर तैयार कर लें तथा इस घोल में पहले से तैयार (एक दिन पूर्व 5 ग्राम साबुन को रात भर 100 मिली लीटर पानी में भिंगोकर रख दें तथा सुबह इसे अच्छी तरह मिक्स करके विलयन) दोनों विलयनों को अच्छी तरह मिला लें। साबुन का घोल मिलाने से यह विलयन छिड़काव के समय पत्तियों के ऊपर अपना आवरण बनती है जिससे कीटनाशी का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। इस प्रकार तैयार विलयन को प्रूनिंग के एक महीने बाद (अधिकतर

शाखाओं में अधिक पत्ती आ जाने पर) लगातार कम–से–कम तीन बार 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करने पर गॉल तथा पर्ण नाशक कीट की आक्रामकता बिना छिड़काव किये गए पौधों की तुलना में लगभग 40–70% आक्रामकता कम पाया गया। हानिकारक कीटों के प्रबंधन के साथ–साथ नीम आधारित कीटनाशी में उपलब्ध सूक्ष्म तत्वों की मात्रा के कारण तसर भोज्य पौधों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी नहीं होती है जिसके फलस्वरूप गुणवत्तायुक्त अधिक मात्रा में तसर कीटपालन हेतु पत्ती उपलब्ध होती है तथा पौधे का अच्छा स्वास्थ्य भी बना रहता है।

तसर भोज्य पौधों के तना को नुकसान पहुँचाने वाले कीटो के प्रबंधन हेतु नीम आधारित कीटनाशी का प्रयोग।

तसर भोज्य पौधों में तना को नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख कीट छाल भक्षी, तना छेदक तथा दीमक जैसे हानिकारक कीटों के प्रबंधन नीम आधारित कीटनाशी के मात्री विलयन में पानी मिलाकर कर सकते हैं। छाल भक्षी तथा तना छेदक कीट तसर भोज्य पौधों के तना पर अंडा न दे इसके लिए मात्री विलयन में 1:10 (मात्री विलयन तथा पानी का घोल बनाकर) के अनुपात मॉनसून प्रारम्भ होने के पूर्व एकबार तथा मॉनसून के दौरान वर्षा न होने की स्थिति में तना पर दो बार छिड़काव करना चाहिए। यह विलयन इन हानिकारक कीटों के लिए बिकर्षक का कार्य करता है जिससे कीट तसर भोज्य पौधों के तना पर अपना अंडा देना पसंद नहीं करते हैं। किसी कारण वश यदि ये कीट तना पर अंडे दे दिए तब भी इन दोनों कीट के भोज्य पौधों में पाए जाने वाले लक्षण (तना के ऊपर कीट मल) दिखे तो इस विलयन को पहले से साफ किये (चाकू की सहायता से जाल/कीट मल को अच्छी तरह से साफ कर लें तथा एल्युमीनियम अथवा लोहे के तार को संक्रमित छिद्र में डालकर लार्वा अथवा प्यूपा को मारने के बाद) अच्छी तरह से छिड़काव करना चाहिए। नीम आधारित कीट नाशी का छिड़काव कम–से–कम तीन बार पाँच दिन के अंतराल पर करना चाहिए। इसके छिड़काव से बार्क इटर द्वारा प्रभावित भाग में तेजी से सुधार होता है तथा साथ ही भविष्य में उस पौधे पर बार्क इटर लगने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। दीमक की आक्रामकता अधिक होने पर मात्री विलयन में 1:15 (मात्री विलयन तथा पानी का घोल बनाकर) के अनुपात में दीमक से प्रभावित तसर भोज्य पौधों पर कम–से–कम तीन बार दस दिन के अंतराल पर छिड़काव करने से दीमक से ग्रसित तसर भोज्य पौधों को बचा सकते हैं।

निष्कर्ष

तसर भोज्य पौधों की सुरक्षा हेतु किसान मुख्य रूप से रसायन कीटनाशी का प्रयोग करते हैं जिससे न केवल उनका आर्थिक नुकसान होता है बल्कि तसर पारिस्थितिकी तंत्र तथा पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। संस्थान द्वारा निर्मित/किसानों द्वारा बनाई गई नीम आधारित कीटनाशी के उपयोग से तसर भोज्य पौधों में लगने वाले हानिकारक कीटों के प्रबंधन के साथ–साथ रासायनिक कीटनाशी द्वारा होने वाले पर्यावरण नुकसान को कम करके किसान अपनी आय में वृद्धि भी कर सकते हैं। नीम आधारित कीटनाशी द्वारा पौध सुरक्षा करने से इसमें उपस्थित सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा से भोज्य पौधों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा की कमी नहीं होता है। साथ ही पौधे का अच्छा स्वास्थ्य भी बना रहता है

❐❐❐

*वैज्ञानिक–सी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

संस्थान को राजभाषा पुरस्कार

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची को वर्ष 2020–21 एवं 2021–22 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्यवन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्वी क्षेत्र में 'क' क्षेत्र के 50 से अधिक कर्मचारी संख्या वाले कार्यालयों में लगातार 2 वर्ष हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 8 दिसम्बर 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में दोनों वर्ष के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण को शील्ड एवं सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री कमल किशोर बडोला को प्रशस्ति–पत्र से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार 'ग' क्षेत्र में क्षे.र.उ.अ.केन्द्र, बारीपदा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार श्री बी.डी. पटनायक, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा ग्रहण किया गया।

उत्तराखण्ड राज्य में कुमाऊँ मण्डल के चम्पावत जनपद में ओक तसर रेशम उत्पादन की सम्भावनाएं

वी.सी.फुलोरिया*, ए.एस. वर्मा, ए शेख एजाज अहमद

परिचय : ओक तसर रेशम कृषि आधारित ग्रामीण कुटीर उद्योग है जो एक प्रकार का वन्य रेशम हैं जिसे शीतोष्ण तसर रेशम के नाम से भी जाना जाता है जो भारत के उप–हिमालिया क्षेत्र पश्चिमोत्तर में कश्मीर से पूर्वोत्तर में मणिपुर तक विभिन्न ओक प्रजातियों पर पाला जाता है परन्तु लोग तसर रेशम के प्राकृतिक रंग को ज्यादा पसंद करते हैं। इसका विस्तार उत्तर–पश्चिम में जम्मू व कश्मीर से उत्तर–पूर्व में मणिपुर तक किया गया है ताकि इन क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध ओक तसर खाद्य पौधों की पत्तियों के संसाधन का उपयोग किया जा सके। उत्तराखण्ड राज्य में इसके कीटपालन हेतु जो प्राकृतिक रूप से खाद्य पौधे राज्य के वन क्षेत्र में उपलब्ध हैं, से कीटपालन हेतु पत्तियों का दोहन कर दिया जाता है। समुद्र तल से ऊँचाई की दृष्टि से निम्न ऊँचाई–500 मी.से 1100 मी. पर क्वै. ल्यूकोट्राइकोफोरा (बाँज) एवं क्वै. सेरेटा (मणिपुरी बाँज) मध्य ऊँचाई – 1100–2100 मी. ऊँचाई पर भी क्वै. ल्यूकोट्राइकोफोरा (बाँज) एवं क्वै. सेरेटा (मणिपुरी बाँज) तथा 2100–2700 मी. एवं 2400–3700 मीटर की ऊँचाई पर उपलब्ध क्वै. हिमालियाना (मोरू, तिलौज) अथवा सेमीकापीफोलिया (खरसू) के पौधों पर कोपलें पर कीटपालन कार्य किया जाता है। राज्य में ओक तसर उत्पादित क्षेत्र जिनमें ओक तसर का उत्पादन किया जाता है : भीमताल जनपद–नैनीताल, कपकोट जनपद–वागेश्वर, मदकोट, मुनश्यारी जनपद–पिथौरागढ, गोपेश्वर, जोशीमठ जनपद –चमोली, गुप्तकाशी जनपद–कर्णप्रयाग एवं चकराता, लखामंडल जनपद–देहरादून हैं। राज्य सरकार द्वारा जनपद चम्पावत में रेशम उत्पादन की संभावनाओं तलासने के प्रयोजन से सर्वेक्षण करने हेतु राज्य सरकार द्वारा तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया था जिसमें क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल द्वारा मुझे नामित किया गया। गठित समिति ने जनपद चम्पावत के विभिन्न विकास खण्डों का भ्रमण/सर्वेक्षण कर उन क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियों, जलवायु, एवं समाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का सर्वेक्षण/अध्ययन किया गया।

क्रिया विधि : समिति द्वारा जनपद चम्पावत के विभिन्न विकासखण्डों के क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियों, जलवायु, एवं समाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का सर्वेक्षण/अध्ययन किया गया, के अनुसार कुमाऊँ मण्डल के दक्षिण पूर्व में पड़ोसी देश नेपाल की सीमा से लगा हुआ राज्य के पूर्वी क्षेत्र में स्थित चम्पावत जनपद जो 15 सितम्बर 1997 को पिथौरागढ़ जनपद से अलग होकर एक नया जनपद बनाया गया। जनपद चम्पावत की सीमा उत्तर में पिथौरागढ़, पश्चिम में अल्मोड़ा तथा नैनीताल और दक्षिण में उधमसिंह नगर जनपद की सीमाओं से मिलती है। जनपद का क्षेत्रफल करीब 1766 वर्ग किमी है। जिस कारण चम्पावत उत्तराखण्ड राज्य में सबसे कम क्षेत्रफल वाले जनपद के रूप में भी जाना जाता है। जनपद की न्यूनतम ऊँचाई समुद्र तल से 700 मीटर (टनकपुर) व अधिकतम ऊँचाई लगभग 2600 मीटर है। यह उच्च हिमालय में निहित घाटियों और पहाड़ियों वाला जनपद है। यहाँ चोटी और घाटियां श्रृंखला में है। अंतहीन श्रृंखलाओं वाली चोटियों में बहुत ठंडा होता है, जनपद का अधिकांश भू–भाग पहाड़ी है।

परिणाम परिचर्चा : चम्पावत की प्रतिकूल भौगोलिक स्थिति, बिखरी हुई आबादी और बीहड़ स्थलाकृतिक परिस्थितियों को देखते हुए इसमें जनपद पिथौरागढ़ की तहसील चम्पावत तथा जनपद उधम सिंह नगर के 35 राजस्व ग्राम व नगरपालिका परिषद टनकपुर के साथ–साथ नैनीताल जिले के कुछ गाँवों को सम्मिलित करते हुए 15 सितम्बर 1997 को यह जिला अस्तित्व में आया। वर्ष 2011 की जनगणना के अुनसार विकास के दृष्टिकोण से जनपद को कुल 04 विकास खण्डों यथा– चम्पावत, पाटी, लोहाघाट एवं बाराकोट में विभाजित किया गया है। जिले में कुल 705 गाँव हैं, जिनमें से 632 आबाद, 55 निर्जन और 18 वन गाँव हैं, जिले के अन्तर्गत 313 ग्राम पंचायत हैं।

वर्ष के अन्तर्गत चम्पावत जिले के कुछ क्षेत्रों में दिसम्बर, जनवरी तथा फरवरी माह के मध्य मौसम आमतौर पर बर्फबारी का रहता है। जनपद चम्पावत में वर्षभर न्यूनतम तापमान 4°C तथा अधिकतम तापमान 30°C रहता है। 1766 वर्ग किलोमीटर के भौगोलिक क्षेत्रफल में फैला जनपद चम्पावत उत्तराखण्ड राज्य का सबसे छोटा जनपद है जिसमें कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल 301.50 हेक्टेयर है। जनपद की रूपरेखा तालिका–01 एवं मानचित्र–01 द्वारा दर्शायी गई हैं –

मानचित्र–01

तालिका–01

चम्पावत जिले की रूपरेखा		
1	स्थापना	15 सितम्बर 1997
2	क्षेत्रफल	1766 वर्ग किमी0
3	जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार)	259648
4	लिंगानुपात (जनगणना 2011 के अनुसार)	980
5	साक्षरता	79.83%
6	विकासखण्ड की संख्या	04
7	ग्रामों की संख्या	705
8	ग्राम पंचायत की संख्या	313
9	अनु.जाति की जनसंख्या (2011 के अनुसार)	47383
10	अनु.जनजाति की जनसंख्या (2011के अनुसार)	1339
11	जनसंख्या घनत्व	147

चम्पावत की मुख्य रूप से कृषि अर्थव्यवस्था है। छोटे और सीमांत किसानों के पास लगभग 73 प्रतिशत खेत है, जिन पर वो कृषि गतिविधि करते हैं। खरीफ के मौसम में चम्पावत में सबसे बडे पैमाने पर मक्का, मंडुवा, और उड़द, गहत, तिल और सोयाबीन आदि दालें उत्पादित होती हैं, जबकि रबी के मौसम में गेहूँ, जौ, मटर और मसूर आदि फसलें उगाई जाती हैं।

टनकपुर और बनवसा क्षेत्रों में आम और लीची प्रमुख कृषि उत्पाद है। यह क्षेत्र पशुओं के चारे के उत्पादन के लिये भी अधिक उपयुक्त है, चम्पावत में परती भूमि की मात्रा अधिक होने के कारण पानी की कमी, गरीबी और खेती की गैर–पारिश्रमिक प्रकृति है।

जनपद चम्पावत के अन्तर्गत निम्नलिखित आर्थिक और वाणिज्यिक गतिविधियाँ गतिमान है जिनमें चावल मिल, आटा मिल, धातु और प्लास्टिक आधारित इकाइयाँ, खाद्य/कृषि प्रसंस्करण, बेकरी, कोल्ड स्टोरेज, होटल, स्टोन क्रेशर, बॉटलिंग प्लांट, इंजीनियरिंग इकाइयाँ, वन सम्बन्धी गतिविधियाँ, औषधीय प्रसंस्करण, दलहन पॉलिश एवं मसाला उद्योग आदि सम्मिलित हैं।

गैर–कृषि क्षेत्र में कुटीर उद्योग और अन्य सूक्ष्म इकाइयों जैसे वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स मरम्मत और चमड़ा आदि व्यवसाय ही मौजूद हैं। चम्पावत अपनी प्राकृतिक सुन्दरता और ऐतिहासिक मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है, जो हजारों देशी और विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। चम्पावत में धार्मिक महत्व के स्थान में मीठा रीठा साहिब, देवीधुरा, पूर्णागिरि मन्दिर, मायावती आश्रम, पंचेश्वर, लोहावती नदी के तट पर स्थित स्वामी विवेकानन्द आश्रम के साथ–साथ हिमालय की मनमोहक सुन्दर चोटियों के दृश्य बहुत प्रसिद्ध हैं।

भ्रमण/सर्वे के दौरान जनपद चम्पावत के अन्तर्गत शहतूती रेशम एवं ओक तसर रेशम उत्पादन की सम्भावनाएं परिलक्षित हुई हैं, शहतूती रेशम के उत्पादन में प्रयोग होने वाले शहतूती रेशमकीट के लिये मुख्य भोज्य पौधा, शहतूत होता है, जो एक बहुवर्षीय पतझड़ पौधा है। शहतूत की खेती के लिये आवश्यक मौसमी दशायें जैसे 24.28°C आदर्श तापमान, 600 मिमी. से 2500 मिमी. तक वार्षिक वर्षा होनी चाहिए। यह पौधा समुद्र तल से 1000 मीटर तक की ऊँचाई में आसानी से उगाया जा सकता है।

जनपद चम्पावत के घाटी एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में शहतूत की खेती हेतु उपयुक्त मौसमी दशाये पायी जाती है, जहाँ पर शहतूत की खेती कर शहतूती रेशम का उत्पादन किया जा सकता है।

ओक तसर रेशम उत्पादन हेतु ओक तसर रेशमकीट के लिये मुख्य भोज्य पौधा बाँज प्रजाति के पौधे होते हैं, बाँज की विभिन्न प्रजातियाँ समुद्र तल से 1500–9000 फीट तक होती है, जनपद चम्पावत के अन्तर्गत वन भूमि क्षेत्रों में बाँज की विभिन्न प्रजातियाँ प्राकृतिक रूप से उपलब्ध हैं, इनके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में मणिपुरी बाँज पौधारोपण भी किया जा सकता है। समिति के सदस्यों द्वारा जनपद के चारों विकास खण्डों के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों/गाँवों का भ्रमण किया गया है।

भ्रमण के समय ग्रामीणों से जानकारी प्राप्त करते हुए समिति के सदस्य एवं जनपद चम्पावत का एक दृश्य

जनपद चम्पावत के विकास खण्ड क्षेत्रों में शहतूती एवं ओक तसर उत्पादन की सम्भावनाएं :–

1. **विकास खण्ड चम्पावत** : जनपद चम्पावत क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा विकास खण्ड है, विकास खण्ड चम्पावत में 08 न्याय पंचायतें व 113 ग्राम पंचायतें हैं। जनपद के भ्रमण के दौरान सुखीढांग, चल्थी, अमोडी, स्वांला, बाजरीकोट, खेसरकोट, शक्तिपुर क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण किया गया व स्थानीय निवासियों और जनप्रतिनिधियों से सम्पर्क कर चर्चा की गयी। विकास खण्ड चम्पावत का टनकपुर एवं वनबसा क्षेत्र पर्यटन स्थल है इसका अधिकांश क्षेत्र वन क्षेत्र हैं। सुखीढांग का क्षेत्र जनपद मुख्यालय से 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र की जलवायु गर्म है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन है, परन्तु वन क्षेत्र से लगे होने के कारण जंगली जानवरों का काफी प्रकोप है। विकास खण्ड का चल्थी क्षेत्र पूर्ण रूप से खनन क्षेत्र है जहाँ के लोग मुख्यतः खनन कार्य से जुड़े हैं। सर्वे में यह दृष्टिगत हुआ कि इन ग्रामों के इतर क्षेत्र के अन्य ग्रामों में भी समान भौगोलिक परिस्थितियां एवं जलवायु पायी जाती है। चम्पावत मुख्यालय से 08–10 किमी. के निकट के क्षेत्र में पाये जाने वाले ग्राम मुडियानी, बनलेख, चक्कू, ललवापानी, ढकना आदि के वन क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से बाँज, देवदार प्रजाति के पौधे उपलब्ध हैं। यहाँ की जलवायु ठंडी है नगरीय क्षेत्र के निकट होने के कारण यहाँ के निवासियों द्वारा कृषि व पशुपालन के अतिरिक्त बाजार क्षेत्र में मजदूरी कार्य किये जा रहे हैं। इस क्षेत्र के अधिकांश ग्रामों में समान ठंडी जलवायु पायी जाती है। सर्वे समिति द्वारा निरीक्षण में यह पाया गया कि विकास खण्ड चम्पावत के गर्म घाटी व गर्म जलवायु वाले निचले क्षेत्र में शहतूती रेशम उत्पादन एवं ठण्डी जलवायु वाले क्षेत्र ओक तसर रेशम उत्पादन की सम्भावनाएं हैं।

2. **विकास खण्ड लोहाघाट** : यह विकास खण्ड 216 वर्ग किमी. में फैला हुआ है, भ्रमण के समय लोहाघाट विकास खण्ड के कोलीढेक, फोर्ती, बनीगाँव, कलीगाँव, बन्देलाढेक, मारागाँव, चौमला, ढेरनाथ, सलना, सुई, किमतोली, नाकोट आदि क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण किया गया, जो कि मुख्यालय चम्पावत से 05–15 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, इस क्षेत्र की जलवायु ठंडी है, तथा यहाँ पर बाँज एवं देवदार के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं। नगरीय क्षेत्र के निकट होने के कारण यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय सब्जी उत्पादन, दुग्ध व्यवसाय है तथा काफी लोग बाजार क्षेत्र में स्वयं की दुकानों या अन्य दुकानों में रोजगाररत हैं। लोहाघाट ब्लॉक के दूरस्थ घाटी क्षेत्र जो कि मुख्यालय से 35–50 किमी. की दूरी पर स्थित है, के ग्रामों हरखेड़ा, मौड, धौनीशिलिंग, पन्तयूडा, पंचेश्वर आदि ग्राम जो कि नेपाल सीमा तक फैले हैं, घाटी क्षेत्र में स्थापित हैं, यह क्षेत्र पलायन से काफी प्रभावित है, साथ ही यहाँ पर रोजगार एवं कृषि की सीमित सुविधाएं उपलब्ध हैं, यह क्षेत्र अपनी जलवायु के कारण शहतूती रेशम कार्य हेतु उपयुक्त है। विकास खण्ड लोहाघाट के उच्च पहाड़ी क्षेत्र अपनी ठंडी जलवायु के कारण ओक तसर रेशम उत्पादन कार्य हेतु एवं निचले घाटी क्षेत्र अपेक्षाकृत गर्म जलवायु के कारण शहतूती रेशम उत्पादन हेतु उपयुक्त है।

3. **विकास खण्ड पाटी** : यह विकास खण्ड 244 वर्ग किमी. में फैला हुआ है, इस विकास खण्ड के अन्तर्गत सर्वे समिति द्वारा ओलीगाँव, खेतीखान, सुनारगाँव, मानर, तपनीपाल, नरसिंहडाडा, पोखरी, धूनाघाट का भ्रमण किया गया। इस क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से बाँज व चीड़ के पेड़ उपलब्ध हैं। इस विकास खण्ड के जाख, तल्लाकोट, चौडाकोट जो कि जिला मुख्यालय से 35–40 किमी. की दूरी पर स्थित है, अपेक्षाकृत गर्म जलवायु वाला क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पलायन के फलस्वरूप कृषि कार्य कम है एवं कृषि भूमि बंजर छोड़ी गयी है। सर्वे में यह दृष्टिगत हुआ है कि क्षेत्र के अन्तर्गत अन्य ग्रामों में भी लगभग इसी तरह की जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियां हैं। विकास खण्ड पाटी के गर्म घाटी व गर्म जलवायु वाले निचले क्षेत्र में शहतूती रेशम उत्पादन एवं ठंडी जलवायु वाले क्षेत्र ओक तसर रेशम उत्पादन की सम्भावनाएं सर्वे में दृष्टिगत हुई।

4. **विकास खण्ड बाराकोट** : यह विकास खण्ड 181 वर्ग किमी. में फैला हुआ है, विकास खण्ड बाराकोट जनपद पिथौरागढ़ से लगा हुआ विकासखण्ड है। जिला मुख्यालय से लगभग 24 किमी. की दूरी पर बाराकोट विकास खण्ड के अन्तर्गत दयारतोली, रेगडू, बन्तोली, बापरू ग्रामों का निरीक्षण किया गया। इस क्षेत्र की जलवायु ठंडी है तथा यहाँ पर बाँज व देवदार के वृक्ष प्राकृति के रूप से बहुतायत में उपलब्ध हैं, साथ ही घाटी क्षेत्रों में भी कुछ ग्राम स्थित है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है। बाराकोट विकास खण्ड के अन्य क्षेत्र में भी इसी प्रकार की जलवायु व भौगोलिक परिस्थितियां पायी जाती हैं। बाराकोट विकास खण्ड के ऐसे इलाके जो ऊँची पहाड़ियों पर स्थित है, उनमें ओक तसर रेशम एवं घाटी वाले क्षेत्रों में शहतूती रेशम उत्पादन की सम्भावनाएं हैं।

निष्कर्ष : चम्पावत जनपद का जो सर्वेक्षण/अध्ययन किया गया, के अनुसार यह पता चलता है कि जनपद चम्पावत के विभिन्न विकास खण्डों एवं उनके क्षेत्रों की जो भौगोलिक परिस्थितियों, जलवायु, एवं समाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ हैं, जिनमें गर्म घाटी वाले इलाकों और निचले क्षेत्रों में शहतूती रेशम एवं उच्च पहाड़ी एवं ठंडे क्षेत्रों में ओक तसर रेशम के उत्पादन कार्य को किये जाने की प्रवल संम्भावनाएं हैं। ओक तसर रेशम एवं शहतूती रेशम उद्योग को अपनाने से कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार सम्भव है, जो जनपद से हो रहे पलायन को रोकने में सहायक सिद्ध होगा। जनपद चम्पावत में ओक तसर एवं शहतूती रेशम का कीटपालन कराकर राज्य में रेशम के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। ❐❐❐

*वरिष्ठ तकनीकी सहायक, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल।

तसर उत्पादन की उन्नत तकनीकियों के सम्यक उपयोग से रेशम उद्योग में उत्पादकता वृद्धि की संभावनाएँ

जयप्रकाश पाण्डेय*,अरुणा रानी,कर्मबीर जेना एवं के. सत्यनारायण

सारांश

रेशम बनाने की विलक्षण प्रणाली तसर रेशम कीट में हैं; तसर रेशम उद्योग लगभग 3.5 लाख लोगों की जीविका का प्रमुख साधन बना हुआ है। इस उद्योग की मदद से प्रायः ग्रामीण एवं गरीब लोगों को रोजगार मिलता है एवं उनका जीवन यापन होता है। संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकियों के बहुधा एवं प्रभावी उपयोग से तसर रेशम का उत्पादन विगत वर्षों में कई गुना बढ़ा है। परिणाम स्वरूप तसर कृषकों की आय में भी वृद्धि हुई है। आने वाले दिनों में किसानों की आय और अधिक बढ़ाने हेतु धान की खेती के साथ तसर कीटपालन करने की प्रणाली पर कार्य किया जा रहा है जिससे अतिरिक्त आय मिले। साथ ही तसर कीट के अपशिस्ट से उत्पादकता बढ़ाने में मद्य मिलेगी। विकल्प के तौर पर तसर रेशम उद्योग के उप–उत्पादो के प्रयोग पर भी शोध चल रहा है। संस्थान द्वारा विभिन्न परि–प्रजातियों के संरक्षण हेतु भोगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप तकनीकी विकसित की है ताकि इसके उत्पादित रेशम भाति–भाति से उपयोग किया जा सके। इस दिशा में सस्थान द्वारा विभिन्न प्रकार के तकनीकियो के उपयोग करके उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। तसर उत्पादन की उन्नत तकनीकियों एवं उत्पादों के उपयोगिता से रोजगार सृजन की संभावनाएँ है। जिनका सम्यक उपयोग करके तसर उद्योग को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया जा सकता है।

प्रस्तावना

विभिन्न प्रकार के रेशम में तसर–रेशम का उद्योग अत्यधिक महत्व का है। तसर रेशम उद्योग लगभग 3.5 लाख लोगों की जीविका का प्रमुख साधन है यह उद्योग ग्रामीण एवं गरीब लोगों को रोजगार प्रदान करने में सहायक है। इस उद्योग की मदद से प्रायः ग्रामीण एवं गरीब लोगों को रोजगार मिलता है एवं उनका जीवन यापन होता है। तसर उद्योग ग्रामीण स्तर पर अनोखा व्यवसाय है जिसमें परिवार के प्रत्येक उम्र के लोगों को रोजगार मिलता है, जैसे बड़े–बुजुर्ग लोगों के लिए कीटपालन की देखरेख का कार्य, युवाओं के लिए कीटपालन का कार्य एवं महिलाओं के लिए धागाकरण। साथ ही कुशल व्यक्तियों हेतु वस्त्र निर्माण का कार्य, तसर कीट पालन के साथ विभिन्न प्रकार की सह खेती पर कार्य किया जा रहा है। निरंतर शोध एवं कृषकों के इस उद्योग के प्रति रुझान से भारत में रेशम उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है जिसके फलस्वरूप रेशम उत्पादन के क्षेत्र में विश्व–परिदृश्य में भारत का दूसरा स्थान है। वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे अनुसंधान कार्यों का लाभ किसानों तक पहुंचाने का निरन्तर प्रयत्न होना चाहिए एवं पूर्व में किये गए शोध कार्यों को प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है। तसर रेशम उत्पादन कार्य के विभिन्न क्षेत्र से जुड़े मुख्य विषय निम्नवत हैं : 1. पादप संवर्धन एवं रोग प्रबन्धन 2. रेशम कीट संवर्धन 3. कीट पालन एवं उत्पादन 4. कोसा परिरक्षण एवं बीजागार 5. प्रसार एवं विकास तथा 6. रेशम प्रौद्योगिकी विपणन एवं मानव संसाधन हैं। व्यापक शोध से ज्ञात हुआ है कि कोकूनेज एवं इसके प्रतिरूप के उपयोग से धागाकरण किया जा सकता है। संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकियों के बहुधा एवं प्रभावी उपयोग से तसर रेशम का उत्पादन और बढ़ेगा जिसके परिणाम स्वरूप तसर कृषकों की आय में वृद्धि होगी।

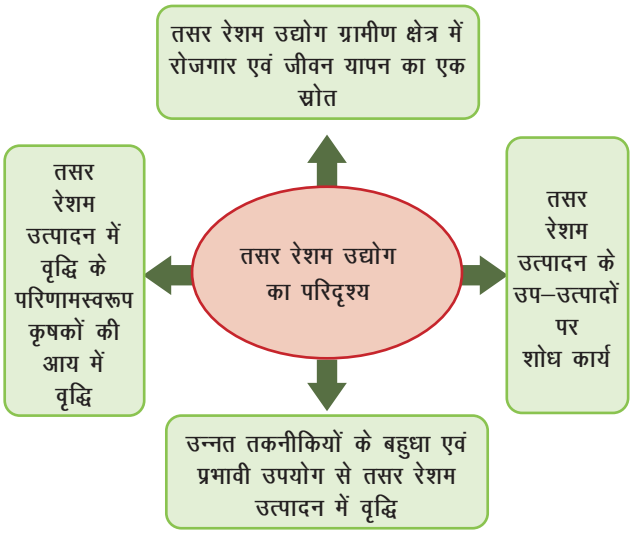

चित्र 1 : तसर रेशम उद्योग का वर्तमान परिदृश्य

संस्थान द्वारा विकसित उन्नत तकनीकियाँ

- डेपुराटेक्स : तसर रेशमकीट के अंडे की सतह की सफाई हेतु कीटाणुनाशक।
- लीफ सरफेस माइक्रोब : तसर रेशमकीट रोग का जैविक नियंत्रण।
- जीवन सुधा : तसर रेशमकीट में वायरोसिस के नियंत्रण के लिए एक जैविक उपाय।

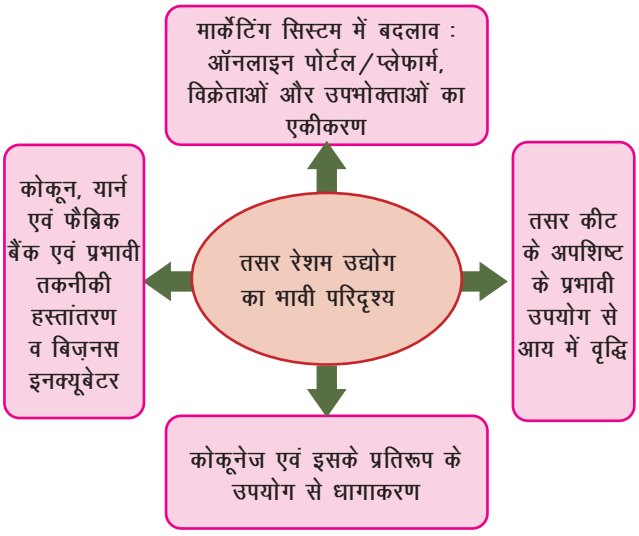

चित्र 2 : तसर रेशम उद्योग का भावी परिदृश्य

- पेब्रीन विजुअलाइजेशन सॉल्यूशन : बीज उत्पादक स्तर पर पेब्रीन बीजाणुओं की आसान और त्वरित पहचान।
- नायलॉन नेट के तहत तसर चॉकी रेशमकीट पालन : प्रारंभिक नुकसान (20–30%) को कम करने के लिए।
- टर्मिनलिया प्लांट्स में गॉल फ्लाई के नियंत्रण के लिए आईपीएम पैकेज।
- सोडियम कार्बोनेट और सोडियम बाई–कार्बोनेट का उपयोग करके उष्णकटिबंधीय तसर कोकून का गैर पेरोक्साइड कुकिंग।
- लेजरस्ट्रोमिया स्पेसिओसा : तेजी से बढ़ने वाला प्राथमिक तसर पोषक पौधा।

चित्र 3 : (क) डेपुराटेक्स : तसर रेशमकीट के अंडे की सतह की सफाई हेतु कीटाणुनाशक (ख) पेब्रीन विजुअलाइजेशन सॉल्यूशन : बीज उत्पादक स्तर पर पेब्रिन बीजाणुओं की आसान और त्वरित पहचान के लिए

चित्र 4 : (ग) नायलॉन नेट के तहत तसर चॉकी रेशमकीट पालन : प्रारंभिक नुकसान (20–30%) को कम करने के लिए (घ) तसर कीट के अण्डों को धुलने की मशीन

चित्र 5 : (च) जीवन सुधा : तसर रेशमकीट में वायरोसिस के नियंत्रण के लिए एक जैविक उपाय (छ) कोकूनेज एन्जाइम–प्रतिरूप के उपयोग से पकाए गए तसर कोसे से निकाले गए धागे

उपसंहार

तसर रेशम उद्योग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से लगभग 3.5 लाख लोगों की जीविका का प्रमुख साधन बना हुआ है। इस उद्योग की मदद से प्रायः ग्रामीण एवं गरीब लोगों को रोजगार मिलता है एवं उनका जीवनयापन होता है। तसर उत्पादन की उन्नत तकनीकियों एवं उत्पादों के उपयोगिता से रोजगार सृजन की संभावनाएँ हैं, जिनका सम्यक उपयोग करके तसर उद्योग को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया जा सकता है। ❐❐❐

* वैज्ञानिक–डी, केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
रांची–835303, झारखंड,

हिन्दी में पत्राचार हो, हिन्दी में हर व्यवहार हो, बोलचाल में हिन्दी ही अभिव्यक्ति का आधार हो ।

तसर कीटपालन के लिये प्रक्षेत्र की तैयारी

मोहन दत्त तिवारी*

तसर कीटपालन का प्रारम्भ, तसर रेशमकीट के खाद्य पौधों मुख्यतः आसन एवं अर्जुन पौधों के चयन से होता है। खाद्य पौधों की पर्याप्त संख्या वाले स्थान का चयन किया जाना चाहिए। खाद्य पौधों की ऊँचाई 10 फीट से अधिक न हो। खाद्य पौधों का चुनाव कीटपालन से लगभग 30 दिन पूर्व कर लेना चाहिए। कीटपालन स्थल हवादार तथा जल–जमाव वाले स्थान से दूर होना चाहिए। घने पौध रोपण में कीटपालन करने से विषाणुजनित, रोगाणुजनित एवं फफूँदजनित रेशमकीट बीमारियों का प्रकोप अधिक होता है। अधिक तसर कोसा उत्पादन के लिये नवजात तसर कीटों हेतु कम उम्र के छोटे पौधों (3–4 फीट) का चुनाव करना तथा उत्तरावस्था के कीटों के लिये अधिक उम्र के खाद्य पौधों (8–10 फीट) का चुनाव उत्तम होता है। तसर कीट अपनी पाँच अवस्थाओं तथा चार निर्मोचन (मोल्ट) के द्वारा अपना कृमिकाल पूर्ण करता है। द्वितीय निर्मोचन के पश्चात् तृतीय अवस्था के कीटों का स्थानांतरण उत्तरावस्था कीटपालन के लिये ऊँचे एवं हवादार प्लॉट में किया जाना चाहिए। पौधों की निश्चित ऊँचाई (5–6 फीट) पर कटाई करके कीटपालन के अनुकूल बनाया जाता है। कटाई के पश्चात् गोबर खाद/रासायनिक खाद के उचित खुराक की मात्रा का प्रयोग पौधों के विकास गुणवत्तापूर्ण पत्तियों की प्राप्ति के लिये आवश्यक है। नवजात तसर कीटों का कीटपालन चॉकी बागान में नायलॉन नेट के अंदर छोटे पौधों (3–5 फीट) पर करने से तेज वर्षा, आँधी एवं परभक्षियों द्वारा होने वाले नुकसान से शिशु कीटों को बचाया जा सकता है।

कीटपालन में स्वस्थ वातावरण एवं सफाई का विशेष महत्व है। कीटपालन स्थल को स्वास्थ्यकर बनाने के लिए पौधों के आस–पास की घास हटाकर तने के चारों ओर की जमीन का फ्लेगमन से विसंक्रमण करने से हानिकारक सूक्ष्मजीवी का सफाया हो जाता है। उचित सफाई के अभाव में नाशक जीव एवं सूक्ष्मजीव तसर कीटों को भारी नुकसान पहुँचाते हैं। कीटपालन क्षेत्र में चूना तथा ब्लीचिंग पाउडर के मिश्रण (9:1) का भूमि पर भुरकाव समय–समय पर करते रहने से सूक्ष्मजीवी का विकास नहीं होता है। विषाणुजनित, जीवाणुजनित तथा मस्कार्डिन एवं पेब्रीन बीमारियों से होने वाले नुकसान को रोकने के लिये यह सर्वोत्तम उपाय है। कीटपालन के पूर्व खाद्य पौधों को झकझोड़ कर साफ कर लेने से परभक्षी कीटों के विभिन्न प्रकार एवं अवस्था के पीड़कों का आश्रय नष्ट होने के साथ खराब पत्तियाँ भी गिर जाती हैं एवं नाशकजीवों की संख्या काफी कम हो जाती है। नाशक कीटों को मारने हेतु विभिन्न विधियों एवं उपायों का प्रयोग कीटपालन के पूर्व तथा कीटपालन के दौरान करते रहना अत्यंत ही लाभदायक है। खाद्य पौधों के आस–पास की मिट्टी की गुड़ाई मॉनसून के पहले कर लेने से भूमिगत कीटों पर नियंत्रण के साथ पौधों के विकास पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

आसन एवं अर्जुन पौधों की पत्तियों को गॉल एवं अन्य नाशी कीटों से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए रोगर कीटनाशी के 3 मिली मात्रा का एक लीटर जल में (छिड़काव की आवश्यकता के अनुसार) घोल बनाकर स्पेयर से दिन के ठंडे समय में हवा की दिशा में पौधों पर छिड़काव करना चाहिए। 15 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव ब्रशिंग के 30 दिन पहले पूर्ण कर लेना चाहिए। अग्रिम योजना बनाकर कीटपालन से पूर्व ही खाद्य पौधों को तैयार कर, उन्नत तरीकों को

अपनाकर उचित समय में ब्रशिंग करने, चॉकी कीटपालन विधि का प्रयोग एवं संसाधनों का व्यवस्थित ढंग से उपयोग करते हुए कीटों को पत्तियाँ खत्म हो जाने के पूर्व नये पौधों पर स्थानांतरित करते रहें। एक पौधे पर कीटों की संख्या अधिक न रखें अन्यथा बार–बार नये पौधों पर स्थानांतरित करते रहने से कीटों की वृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। निर्मोचन (मोल्ट) के दौरान कीटों का स्थानांतरण वर्जित है। कीटों का स्थानांतरण पॉलिथीन लगी टोकरी द्वारा करना चाहिए।

कीटपालन स्थल के पौधों में कैंथिकोना, काली चींटी, लाल चींटी, प्रेईंग मैंटिस, बर्रे, काली सूंडी इत्यादि परभक्षी कीटों के विभिन्न अवस्थाओं एवं इनके घोसलों की पहचान कर नष्ट कर देना चाहिए। पौधों के तने पर जमीन से 2 फीट ऊपर पॉलिथीन की पट्टी बाँधकर ग्रीस लगा दें ताकि पत्तियाँ कम होने पर/ तेज धूप के कारण कीटों का पलायन रोका जा सके तथा रेंगने वाले कीट जमीन से पौधों पर न चढ़ सकें। उड़ने वाले परजीवी कीटों (ऊजी मक्खी) से बचाव के लिए गोंददार छड़ी अथवा कीट पकड़ने वाली जाली का उपयोग बहुत ही लाभदायक तथा प्रभावी उपाय है।

गैर कीट परभक्षियों जैसे नेवला, गिलहरी, गिरगिट, सर्प तथा विभिन्न पक्षियों आदि से कीटों को बचाने के लिये निरंतर चुस्त निगरानी एवं यांत्रिक उपायों जैसे गुलेल, धनुष आदि का उपयोग करना आवश्यक होता है।

मृत एवं रोगग्रस्त कीटों को पौधों से एकत्र कर कीटपालन क्षेत्र से बाहर गहरे गड्ढे में दबाया जाना अति आवश्यक है, ऐसा न करने से सूक्ष्मजीवी का प्रगुणन भारी मात्रा में होने से बीमारी फैलने की पूर्ण संभावना है। ❐❐❐

*वैज्ञानिक–डी (सेवानिवृत्त), के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

... पृष्ठ 4 का शेष

बटोरे तो दूसरी तरफ पहले सचिन फिर धौनी को विज्ञापनों के जरिए धन बटोरने का मौका दिया। अमिताभ के बाद सचिन और धौनी ने विज्ञापन से करोड़ो रुपये कमाये। भारत में क्रिकेट को राष्ट्रीय खेल का दर्जा प्राप्त नहीं है। हॉकी और फूटबॉल बरसों से राष्ट्रीय खेल रहे हैं लेकिन बाजार ने कभी इसे राष्ट्रीय खेल नहीं माना। किक्रेट की तरह विज्ञापन दाताओं ने कभी इनको गोद नहीं लिये। कुश्ती का तो और भी बुरा हाल रहा है। प्रचार कम्पनियाँ तो इधर झाँकती तक भी नहीं है। इस तरह कला और खेल का खेल जैसे समाप्त कर दिया परन्तु क्रिकेट खेल को उन्होंने व्यापार का केन्द्र बनाया। मीडिया ने भी उनका खूब साथ दिया। आज क्रिकेट गाँव–गाँव का खेल बन गया है और यह सब बाजार ने कर दिखाया। आज अगर हम साहित्य की बात करें तो बाजार ने यहाँ भी अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। खासकर हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य में। एक जमाना था जब देश के बड़े–बड़े बुक स्टॉलों पर धर्मयुग, सारिका, हंस, कहानीकार और कथन जैसी साहित्यक पत्रिकाएँ धड़ल्ले से बिकती और पाठकों को सुलभताओं के साथ मिल जाती और अगले अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा रहती थी। अब वही साहित्यिक पत्रिकाएँ बुक स्टॉलों से गायब हो चुकी हैं। किताबों के साथ यही बात लागू होती है। आज लेखक और पाठकों के बीच दूरी बढ़ती जा रही है। आज साहित्य में संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गयी है और इसके लिए प्रकाशक और लेखक दोनों जिम्मेदार हैं। आज पुस्तकें बहुत महँगी और पाठकों की क्रय शक्ति से बाहर हो गई है। वर्तमान में पुस्तकें पाठकों के लिए नहीं बल्कि पुस्तकालयों को ध्यान में रखकर लिखा और छपा करती है। अतः प्रकाशकों ने ही अपने फायदे के लिए पुस्तकों को पाठकों से दूर कर दिया है। प्रेमचंद ने महाजनी सभ्यता के बारे में जो परिकल्पना की थी, वह आज पूरी तरह सच साबित हो रही है। उन्होंने कहा था ''कि महजनी सभ्यता का केवल एक उद्देश्य होता है–मुनाफा और केवल मुनाफा कमाना।'' आज बाजार यही काम कर रहा है। आज बाजार पहले लेखक खरीदता है फिर उसकी कृति का मूल्यांकन कर बाजार में उतारता है। बुकर पुरस्कार कृति ''रेत समाधि '' को देश में हिन्दी साहित्य अकादमी का पुरस्कार तक नहीं मिला लेकिन बुकर पुरस्कार मिलते ही यह किताब चर्चा में आ गई। अब यह किताब हार्ड कापी हजार में बाजार में आएगी जो हिन्दी पाठकों के बूते से बाहर हो जाएगी। इसी तरह बाजार ने आज अच्छे साहित्य को समेटकर सीमित कर दिया है। अच्छी–अच्छी किताबें पाठकों से दूर हो गयी हैं। आज बाजार में वही किताबें बिक रही हैं जिन्हें बाजार बेचना चाहता है इससे न सिर्फ साहित्य पर बुरा असर पड रहा है बल्कि समाज की संरचना, सामाजिकता और सांस्कृतिक वेश–भूषा तक का नाश हो रहा है और अच्छी पुस्तकें पढ़ने से पाठक वंचित होते जा रहे हैं जो बेहद दुखद है !! ❐❐❐

*तारमी कोलियरी, कार्मिक विभाग, सीसीएल, पोस्ट–तुरीयो जिला–बोकारो, झारखंड।

प्राचीनतम 'तारापीठ' तथा माँ तारा के अनन्य साधक 'बामा खेपा' का मंदिर

नवीन कुमार सिन्हा*

हम सबने दस महाविद्याओं एवं देवी दुर्गा के नौ रूपों के विषय में सुना है। झारखण्ड बासी माँ छिन्नमस्ता से तो भलीभाँति परिचित हैं और प्रायः सभी लोगों ने राजरप्पा (राजगढ़ जिला) स्थित मंदिर में इनके दर्शन किए होंगे जो दस महाविद्याओं में से एक हैं। वीरभूम जिला जो पश्चिम बंगाल राज्य में है के तारापीठ मंदिर की प्रसिद्धि से भी काफी लोग भिज्ञ हैं। मेरे मन में बहुत दिनों से इच्छा थी कि हम माँ तारा के दर्शन को तारापीठ जाएँ। कुछ मित्रों से माँ के दरबार में उपस्थित होकर असीम आनन्द उठाने की बात ने मुझे भी अचानक वहाँ जाने का कार्यक्रम बनाने को विवश कर दिया और हमने राँची से वनांचल एक्सप्रेस ट्रेन में सीटें आरक्षित करवा लीं। राँची से अधिकतर लोग गाड़ी से देवघर–दुमका–पाकुड़–फरक्का होते सड़क मार्ग से रामपुर हाट पहुँच कर तारापीठ जाते हैं क्योंकि ऐसा कार्यक्रम बना कर वे बाबा बैद्यनाथ, बाबा वासुकीनाथ और फिर माँ तारा का दर्शन एक ही यात्रा में कर लेते हैं। राँची–हावड़ा इंटरसिटी पकड़ कर जो सुबह राँची से खुलती है, संध्या 5.00 बजे तारापीठ पहुँचा जा सकता है, मगर इसके लिए आसनसोल जंक्शन पर ट्रेन बदलना पड़ता है। एक अन्य ट्रेन राँची–अलीपुर दुआर से यदि यात्रा की जाए तो सुबह 5.00 बजे रामपुर हाट रेलवे स्टेशन पहुँचा जा सकता है। इस यात्रा से हमें एक सीख जिन्दगी भर के लिए मिल गई और वह यह कि बिना पूरी जानकारी के कहीं भी जाना परेशानी का बहुत बड़ा कारण भी बन सकता है। अतः कहीं भी आप जाएँ, पूरी जानकारी लेकर जाएँ। आज तो इंटरनेट की सुविधा से आप हर तरह की जानकारी घर बैठे ही ले सकते हैं। होटल में कमरा आरक्षित करा सकते हैं तथा और भी बहुत सारे काम कर सकते हैं। खैर हम राँची से सितम्बर महीने में वनांचल एक्सप्रेस ट्रेन से दोपहर के समय रवाना हुए। मौसम बड़ा ही सुहावना था न गर्मी, न ठंड सब तरह हरियाली, खेतों में धान के पौधे लहरा रहे थे, जब हवा चलती वे नागों की तरह फन उठाये झूमते नृत्य में रत लगते। संध्या होते–होते हम कतरास पहुँचे और फिर धनबाद जंक्शन। हमने अपने साथ सैंडवीच और चाय रख ली थी जिसका आनंद हमने ट्रेन में उठाया। ट्रेन आसनसोल, रानीगंज होते हुए अंडाल स्टेशन पर रूकी। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रात नौ बजे यहाँ यात्री लिट्टी–चोखा का आनंद ले रहे थे और प्रायः हर खोमचे वालों के पास यही व्यंजन था जो बिहार का है। यहाँ से गाड़ी चली तो पाण्डेश्वर, सिउड़ी होते सैंथिया पहुँची जहाँ इसका 20–25 मिनट का ठहराव है। यहाँ हॉकरों द्वारा बड़े आमलेट और मूढ़ी–पकौड़े के शोर से आप परेशान हो जायेंगे। हम 24 बजे ठीक रामपुर हाट पहुँचे। चाय पीने की तलब जोर मार रही थी पर कोई भी ठेले वाला 2–5 कप बनाने को तैयार नहीं हुआ और देर से बनी चाय हम पीना नहीं चाहते थे। अतः चाय पीने का विचार छोड़ हम टेम्पों वालों के पास पहुँच गये। टेम्पो टेम्पो स्टैंड पर टेम्पों तो थी मगर रामपुर

हाट स्टेशन से कुल 18–20 यात्रियों का समूह ही तारापीठ जाना चाह रहा था। टेम्पों की क्षमता 8 व्यक्ति बैठाने की है। मगर वे 11 व्यक्ति बैठाते हैं। 30 रुपए प्रति व्यक्ति भाड़ा हमें बताया गया। रात्रि गहरा रही थी किन्तु हमने सुन रखा कि तारापीठ में होटल 24 घंटे खुले रहते हैं। अतः हमें होटल की चिन्ता नहीं नहीं थी। हम टेम्पों पर बैठ चल दिए।

एक–डेढ़ किलोमीटर के बाद रास्ता बिल्कुल सुनसान, स्तब्ध रात्रि, निविड़ अंधकार, हवा तेज बह रही थी सांय–सांय; कभी टेम्पो की रोशनी में दूर एकाक झोपड़ी दीख जाती; न कोई अन्य गाड़ी पीछे–पीछे से न कोई सामने से, सिर्फ हम 11 लोग बढ़े जा रहे थे। करीब आधी दूरी तय करने के बाद एक मोटर साइकिल सामने से आता दिखा; हवा में ठंडक थी। लगता था या तो नदी तट पास था या फिर समुद्र तट, अंधेरा इतना घना कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था; खैर राम–राम कर हम तारापीठ चौक पर पहुँचे। टेम्पों वाले ने जब हमें उतार दिया तो हमने देखा सारी दुकानें बंद थी और एक बंद की जा रही थी। पास में कोई भी होटल नहीं दिखा। कुछ लोग हमें देख पास आ गये और होटल के लिए साथ चलने को कहा, हमें वो अच्छे प्रतीत नहीं हो रहे थे; हम तय नहीं कर पा रहे थे कि किसके साथ जायें क्योंकि रात भर चौक पर रूकना भी तो मुश्किल था। हम अभी यह सब सोच ही रहे थे कि 4 लड़के (टेम्पों में हमारे सहयात्री) हमारे पास आये जो कुछ दूर जाकर लौट पड़े थे और मेरी पत्नी से कहा काकी माँ ! ओदेर छाडुन। आपनारा आमादेर संगे आसुन। मैं और मेरा पुत्र बंगला नहीं समझते हैं पर पता नहीं क्यों उन लोगों ने मेरी पत्नी से ही बात की जो बंगला भाषा बोल–समझ सकती है। मेरी पत्नी से वे बात कर रहे थे तो मेरी पत्नी ने उसने पूछा–बाबूरा तोमरा कोथाय थेके आसचो ? उन लोगों ने कहा आमरा कोलकोताय थाकी। इस वार्तालाप का अर्थ था–चाची उन्हें छोड़िये, हमारे साथ आइये; बेटे तुम लोग कहाँ से आ रहे हो ? हम लोग कोलकाता में रहते हैं। खैर ! हम उनके साथ माँ तारा लॉज की सीढ़िया चढ़ रहे थे। काफी देर बाद गार्ड ने दरवाजा खोला। लड़कों ने बताया कि उनका कमरा आरक्षित

था, उन्होंने कह सुनकर हमें एक अच्छा कमरा दिलवाया और पीने का पानी भी। हम अच्छा किया था जो हम खाना भी साथ लाये थे; हमने खाना खाया और बिछावन पर लेट गये। हमने सोचा था हम लोग सबेरे 4.00 बजे माँ के मंदिर चलेंगे, मगर रात ढाई बजे सोने के बाद 7.00 बजे सुबह ही नींद खुली। 8.00 बजे नहा–धोकर हम नीचे आकर चाय पी रहे थे कि वर्षा होने लगी। एक व्यक्ति बोला वर्षा अभी नहीं रूकेगी; हम छाता साथ लाये थे। अतः धीरे–धीरे मंदिर की ओर हम बढ़ चले। चौक से आधा किलोमीटर की दूरी पर मंदिर है। सड़क के दोनों ओर दूकानें भरी हैं–पेड़ा, कैसेट, मूर्तियाँ पूजा के सामान, प्रसाद–फल, खिलौने, मिठाइयाँ और न जाने क्या–क्या बिक रहे थे। बीच में कई होटल भी थे जहाँ लोग नाश्ता–खाना खा रहे थे। हम मंदिर की सीढ़ियों पर थे कि हमें एक पंडित जी मिले, वे हमें मंदिर से बाहर से ही संकल्प कराकर पूजा करवाना चाह रहे थे। हमने कहा हम माँ की मूर्ति का दर्शन करना चाहते हैं; तो उन्होंने कहा आप लोग लाईन में लग जाएँ–फ्री दर्शन, 100/– रुपए का टिकट लेकर और 200/– का टिकट लेकर आप अलग–अलग पंक्तियों में दर्शनार्थ खड़े हो सकते हैं। पंडित जी (श्री गौड़ मुखर्जी) ने कहा वे पूजा कराने हेतु आ जायेंगे। हम माँ के मूर्ति के पास पहुँच रहे थे किन्तु पंडित जी का पता नहीं था। जब वे नहीं आये तो हमने दूसरे पंडितजी श्री प्रशांत मुखर्जी से पूजा के लिए कहा। उन्होंने हमें माँ का दर्शन, पूजन कराया, माँ के चरणों में प्रणाम करवाया और माँ के स्नान का जल पीने दिया। हमने उन्हें दक्षिणा देकर संतुष्ट किया। इस प्रांगण में हनुमान जी, शिव जी, गणेश जी, शनि देव, काली जी आदि देवताओं के मंदिर भी हैं। शनिदेव पत्थर के त्रिकोण स्वरूप में थे जिनपर लाल सिन्दूर लगा था; हमने इन्हें हनुमान जी समझा क्योंकि अभी तक हमने सिन्दूर हनुमान जी के मूतियों पर देखा था जबकि शनि देव को काले पत्थरों का ही देखा था। मंदिर प्रांगण में माँ तारा के अनन्य भक्त, साधक और पुत्र बामदेव (इन्हें बामा खेपा भी कहते हैं) का भी मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि जब तक माँ इन्हें भोजन नहीं करा लेतीं स्वयं खाना नहीं खाती थी। पूजा के बाद हम लोग मंदिर के मुख्य द्वार के ठीक सामने वाले श्मशान में गये। यह एशिया का सबसे बड़ा और 24 घंटे जाग्रत श्मशान है जो द्वारका नदी के तट पर काफी दूर तक फैला हुआ है।

❐❐❐

*फ्लैट सं.2–सी, अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके रोड, राँची–834008

लघु कथा

धूल

नीना सिन्हा*

"स्नान–ध्यान में कुछ ज्यादा ही देर हो गई आपको !", धूप में बाल सुखाता देख पड़ोसन से पूछा।

"हाँ! संक्रांति के पहले की कुछ विशेष साफ–सफाई में उलझ गई थी। खिड़कियाँ बंद कर घर को कुछ हद तक बचा भी लें हम, पर उनके ग्रिल धूल से अँट जाते हैं। हवा में धूल कण दिनोंदिन बढ़ते ही जा रहे हैं।"

"सच है।"

"पर संदर्भ में अक्सर फैक्ट्रियों–गाड़ियों का धुँआ, पराली जलाना इन्हीं की बातें होती है। एक अन्य मुद्दा है, जिस पर लोगों का ध्यान कम जाता है, निर्माण कार्यों से हवा में घुलते जाते सीमेंट और रेती कण।"

"पर बिना रैन बसेरे के इंसान रहेगा कहाँ? पुल, सड़कें, मेट्रो, इत्यादि का निर्माण मानवीय तरक्की के लिए आवश्यक है।"

"पर कुछ अनावश्यक भी है, जैसे घर बनाने का व्यसन।'' इंसान फ्लैट के बाद घर, फिर घर की दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी मंजिल बनाने लगता है! बहाना, 'संतति का सुरक्षित भविष्य।' वश चले तो मानो स्वर्ग तक सीढ़ियाँ बनवा दें ताकि सशरीर स्वर्ग की सैर की जा सके। घर के बाद फार्म हाउस बने तो अधिक बढ़िया। कुछ लोग बिल्डर बनकर पच्चीस–पचास मंजिली इमारत ठोक देते हैं। पर जो बनाया, उसका रख–रखाव भी लगेगा।

'भाड़ा लगाकर पैसे आएँगे तो रख–रखाव होता रहेगा', सोचते हैं। पर कोरोना के बाद से लोग, सस्ता भाड़े का मकान तलाश कर रहे हैं क्योंकि 'मंदी में हाथ तंग हैं।' अक्सर लोग आसान किस्तों में फ्लैट खरीदने के चक्कर में लगे रहते हैं, 'भाड़ा ही क्यों दें?' पर आवश्यक हो या अनावश्यक, इन निर्माण कार्यों से महीन सीमेंट और रेती हवा में घुलती जाती है।"

"आपका नजरिया स्पष्ट भी है, सही भी। सरकार के नये नियमानुसार निर्माण स्थल को तथा सीमेंट–रेती को ढोते समय ढँकना आवश्यक हो गया है। पर अनावश्यक निर्माण कार्य क्या है, हमें ही तय करना होगा।"पड़ोसन सहमत थी।

❐❐❐

,*पटना, बिहार।

बहुत देर कर दी

ओम प्रकाश मंजुल*

हर चीज के दो पहलू होते हैं। सौन्दर्य, जवानी और ज्ञान अच्छी चीजें हैं और ये ही चीजें जब किसी निर्दोष का जीवन चौपट कर दें, तो बुरी बन जाती हैं। प्रो.कमल के साथ और क्या हुआ ! उनके शारीरिक सौन्दर्य और बौद्धिक विकास ने उन्हें कहीं का न रखा। कमला ने उनके इन्हीं गुणों पर रीझ कर ही दो जीवन बर्बाद किये थे, एक प्रो. कमल का और दूसरा स्वयं अपना। आप पूछ सकते हैं कि प्रो.कमल कौन हैं ? प्रो.कमल उसी डिग्री कॉलेज में हिन्दी के प्रवक्ता थे, जिसमें कमला के पिता प्राचार्य थे। प्रो.कमल का सम्पर्क कमला से उस समय हुआ, जब वह एम.ए.(हिन्दी) प्रथम वर्ष की छात्रा के रूप में हिन्दी विभाग में पहुँची थी। कमला के प्राचार्य पिता के आग्रह पर प्रो.कमल को उसे गाइड भी करना पड़ा था। यद्यपि विद्यालय की राजनीति के कारण कमल के सम्बन्ध प्राचार्य से कोई खास नहीं थे, तथापि कमल के रूप–माधुर्य व बुद्धि–चातुर्य एवं कमला के पिता की शीर्ष स्थिति के प्रभाववश उन्हें कमला को कुछ समय निकाल कर पढ़ाना ही पड़ा। जो कमल आरम्भ में कमला को पढ़ाने में ना–नुकर कर रहे थे, वे ही शिक्षण आरम्भ करने के बाद कमला के प्रति रबर जैसे खिंचते चले गये। कमल को भी क्या मालूम था कि उनका एक वाक्य दो लोगों की जिन्दगी को घुलाकर खत्म कर देने को काफी होगा। कमल ने कमला को पढ़ाते समय एक दिन रीझ कर उससे यही तो कह दिया था, ''कमला आई लव यू।'' आप यह सोचकर आश्चर्य भी कर सकते हैं और हास भी कि हिन्दी के प्रवक्ता ने आखिर अपनी प्रेमाभिव्यक्ति अंग्रेजी में क्यों की। संभवतः कमला के कानों को अप्रत्याशित लगने वाले अपने कथन से कमला के हृदय में उत्पन्न आशंकित प्रतिकूल प्रतिक्रिया के प्रभाव को कम करने की सम्भावना से ही कमल को अंग्रेजी भाषा का आश्रय लेना पड़ा था। फिर भी वही हुआ, जिसका उन्हें डर था। कमल के कथन को सुनकर कमला का श्याम मुख लाल पड़ गया। वह अपने अन्दर गुदगुदी पैदा करने वाली जागृत प्रेम भावना पर क्रोध का आडम्बरी आवरण पहना कर बोली, ''आपने यह कहने की हिम्मत कैसे की ? ऐसा तो मुझसे आज तक किसी ने नहीं कहा।'' कमल की प्रतिक्रिया थी, ''तुम्हारे शारीरिक–सौन्दर्य और बुद्धि–चातुर्थ ने मुझे ऐसा कहने के लिए बाध्य कर दिया है। क्यों, क्या नाराज हो गयीं ?'' कमला ने कोई उत्तर नहीं दिया। कमल ने इसी प्रश्न को कई बार पूछा, पर कमला ने तो मानो मौन व्रत धारण कर लिया था। उसकी भाव–मुद्रा देखकर कमल को किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन था। अंत में कमल ने यही तो कहा था, ''यदि तुम मुझसे नाराज हो, तो मैं भी तुमसे नाराज हूँ। मैं भी नहीं बोलूंगा।'' बहुत देर तक सन्नाटा छाया रहा। संभवतः कमला प्रेम–पीर से अब असह्य हो उठी थी। कमल के प्रति हृदयस्थ उसका प्रेम तरल हो चुका था। वह वाग्धारा के रूप में प्रवाहित होना चाहता था

और अंततोगत्वा वह प्रवाहित हो ही चला। उस समय कमला ने बार–बार यही तो कहा था, ''कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। आप मुझे प्यार करते हैं, तो मैं भी आपको प्यार करती हूँ।

सानिध्य की निरंतर दो दिलों को और भी समीप ला देती है। ऐसे में जब दिल जवां हों, तब तो जो भी हो जाए, वह कम है। कमल कमला को जब छायावाद तथा रीतिकालीन कवियों के नायक–नायिका–भेद का वर्णन करते थे, तो लगता था प्रो. कमल को ईश्वर ने प्रसाद, पंत, कालिदास, भवभूति, कीट्स तथा शैले की देह–भस्मों से एक–एक मुट्ठी भस्म लेकर बनाया है। लगता था, मानो वे रोमांटिक पोयट्री के साक्षात देवता हो, अंग्रेजी के रोमांटिक रिवाइल में वे सशरीर शरीक हुए हों, कालिदास और भवभूति से उनकी मित्रता रही हो तथा बिहारी और घनानंद उनके सहपाठी रह चुके हों। कमला प्रो. कमल की व्याख्या को अब मस्तिष्क से ही नहीं, दिल और आँखों से भी समझने लगी थी। कमल का साहित्य सम्बन्धी अतिशय ज्ञान ही बाद को उनकी असामयिक मृत्यु का कारण बना। श्रृंगार रस के वर्णन के समय कमल ने पंडित राज जगन्नाथ और जहाँगीर की पुत्री, लवंगलता की प्रणय–गाथा सुनाकर, जो गलती की थी, उसने उनकी जान ही ले ली। कमला ने प्रो.कमल से इस प्रणय–प्रसंग को कई बार सुना था, फिर भी वह इसके श्रवण से कभी अघायी नहीं थी।

जहाँगीर ने अपनी पुत्री, लवंगलता को पढ़ाने के लिये काशी के प्रसिद्ध विद्वान एवं वैयाकरण पंडितराज जगन्नाथ की शिक्षक के रूप में नियुक्ति की। पढ़ने–पढ़ाने के बीच ही लवंगलता और पंडितराज जगन्नाथ में प्रेम हो गया। जब उनका प्रेम जग–जाहिर होने लगा, तो जहाँगीर के एक शुभचिन्तक ने जहाँगीर को बताया तथा उसे जगन्नाथ का सर कमल करवाने की सलाह दी। जहाँगीर सहिष्णु भी था, समझदार भी था और उदार हृदय पिता भी। उसने दोनों को बुलाकर सचाई ज्ञात की और दोनों को उसी रात जगन्नाथ के घर बनारस भेज दिया। इधर बनारस के लोगों को जब ज्ञात हुआ कि पंडितराज मुसलमान

की पुत्री को भगा लाये हैं, तो उन्होंने इन्हें पंडितराज बेधर्मनाथ कहकर उनका उपहास किया। स्थिति यह हो गयी कि जगन्नाथ जिस गली में भी जाते, असंख्य आवाजें इन्हें बेधर्मनाथ के नाम से पुकारने लगतीं। अंत में समाज के इन लाज–शर्म के कोड़ों से मार खाने की शक्ति भी जब पंडितराज में न रही, तो उन्होंने पतित–पावनी, गंगा को अपना पार्थिव शरीर समर्पित कर दिया। उधर जब लवंगलता को ज्ञात हुआ कि समाज के उपहास से अपने को बचाने के लिए पंडितराज जगन्नाथ गंगा में डूब गये हैं, तो वह भी उसी तट पर आयी और गंगा जी का स्तवन कर अपने पति से मिलने हेतु गंगा की धार में छलांग लगा गयी। प्रत्यक्ष दर्शियों का कहना था कि पंडितराज जगन्नाथ का शव बहुत दूर से उलटा बहकर लवंगलता के शव की ओर आया और जैसे ही दोनों पास–पास आये, वैसे ही दोनों के दाहिने हाथ निकल कर एक–दूसरे से भिंच गये। इस वर्णन को सुनकर कमला अपनी सुध–बुध खो देती थी और कमल की ही होकर रह जाती थी। तब प्रो.कमल कमला की ठोड़ी पकड़कर ऊपर करते थे और कमला हड़बड़ाकर अपने को यों व्यवस्थित करती थी, मानो किसी सपने में बिखर कर अपने को समेट रही हो।

अब प्रो.कमल और कमला भी जगन्नाथ और लवंगलता बन चुके थे। उनका प्रेम–प्रसंग भी चर्चित हो चुका था। कमल को हर समय यही प्रतीक्षा रहती थी कि कभी कमला के पिता उससे वैसा ही कहेंगे, जैसा जहाँगीर ने पंडितराज जगन्नाथ और अपनी पुत्री लवंगलता से कहा था। प्राचार्य सुलझे हुए विचारों वाले तथा दयालु हृदय पिता थे। पर, उनके समक्ष दो बाधायें थीं। एक प्रो. कमल का विवाहित होना, दूसरी उनका भिन्न जाति का होना। इतना होने पर भी वे कमला का हाथ कमल को दे सकते थे। पर, वे अपनी पोंगापन्थी और संकीर्ण दृष्टिकोण वाली पत्नी के प्रतिकूल निर्णय लेने का साहस न जुटा पाये।

समय से अधिक बलवान और निर्णायक कौन हो सकता है। पंत और प्रसाद के उन्मुक्त आकाश में उड़ने वाली स्नातकोत्तर चिड़िया को इंटर पास अमीर दुकानदार के पिंजड़े में बन्द करने का रिश्ता तय हो जाता है। मंगली की रस्म पर सारा स्टाफ पहुँचता है। साहब के निवास पर नहीं पहुँचते हैं, तो केवल प्रो. कमल। वे एक दिन पूर्व ही ज्वर पीड़ित हो जाते हैं। मंगनी के समय की जो फोटोग्राफ होती है, उसकी एलबम अचानक एक दिन प्रो.कमल के हाथ लग जाती है। उन्हें एलबम में कमला का फोटो देखकर बहुत आश्चर्य होता है। एलबम में अनेक औपचारिकताओं से सम्बद्ध भिन्न–भिन्न पोज हैं। सभी लोग हँसते और मुस्कुराते हुए हैं। पर, कमला के उदास चेहरे से यही लगता है, मानो उसकी कोई बहुमूल्य वस्तु खो गई हो। खो ही तो गई थी, उसकी कीमती वस्तु। उसके लिए कमल से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं था और कमल अब उससे सदा–सर्वदा के लिए छूट रहा था। अपने मंगेतर से अंगूठी पहनती कमला का फोटो भी इसी एलबम में है–एकदम निर्जीव व नीरस। लगता है, वह अपने दाँए हाथ को अपनी ओर खींच रही है ताकि उसे अंगूठी न पहनायी जा सके। पर, क्या करे निष्ठुर समाज और नासमझ माँ–बाप की लाज–शरम को रखने के लिए वह खुद जहर का घूँट पिए ले रही है। कितनी हताश–उदास दिखाई दे रही है कमला ! जैसे किसी हरिणी को जंजीर से बाँधकर डाल दिया हो।

पिछले 24 घण्टे प्रो. कमल कितना बेचैन रहे, इसे वे ही जानते थे। पढ़ाते–पढ़ाते ही उसने कमला के बाएँ हाथ की आनामिका उंगली को पकड़ लिया और उसमें अंगूठी पहना दी। इस साधारण अंगूठी को कमल कल ही कॉलेज के बाद खरीद कर लाए थे। अंगूठी पहनाते समय मानो कमला की उंगली अद्‌भुत रूप से बढ़ गई थी। अंगूठी ढंग से पहन लेने के बाद एक मिनट तक रूककर कमला ने एक दर्द भरी आह के साथ अंगूठी निकाली और उसे कमल को वापस करते हुए म्लान मुख से बस इतना भर कहा, ''बहुत देर कर दी।''

❐❐❐

*प्रधानाचार्य, कामायनी काय स्थान, पूरनपुर–262122,
पीलीभीत, उ.प्र.

रस की भाषा, शिष्टाचार की भाषा, अमर रहे हिन्दी, राष्ट्र की भाषा ।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता करते श्री ओंकार नाथ सिंह, कुलपति, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची।

संस्थान में आयोजित केन्द्रीय रेशम बोर्ड के युवा वैज्ञानिकों की बैठक की अध्क्षता करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार एवं साथ में हैं संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

बागवानी विभाग, पंजाब सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक दृश्य।

दिल्ली में आयोजित सिल्क एक्पो का उद्घाटन करतीं केन्द्रीय राज्य वस्त्र मंत्री श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश। साथ में हैं (दायें) केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व.से.

संस्थान भ्रमण पर आये गोस्सनर कॉलेज, राँची के छात्र/छात्राएँ द्वारा तसर कीट का अवलोकन का एक दृश्य।

संस्थान भ्रमण पर आये राँची के उपायुक्त श्री राहुल कुमार सिन्हा द्वारा संस्थान के प्रयोगशाला का निरीक्षण किया गया। साथ में हैं नगड़ी प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सुश्री नूतन कुमारी।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का एक दृश्य ।

झारखण्ड में प्रौद्योगिकी प्रसार एवं अनुभव साझाकरण पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार एवं साथ में हैं झारखण्ड राज्य रेशम विभाग के निदेशक सुश्री आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से. एवं अन्य ।

संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशाला का एक दृश्य।

संस्थान में आयोजित रेशम दिवस का एक दृश्य।

संस्थान भ्रमण पर आये असम एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय, जोरहाट (असम) के विद्यार्थियों के साथ संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण एवं अन्य।

सतर्कता–जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत ग्राम बरसा में आयोजित ग्राम सभा जागरूकता कार्यक्रम का एक दृश्य।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा, 2022 के उद्घाटन समारोह का एक दृश्य।

हिन्दी पखवाड़ा, 2022 के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता कर रहे वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों का एक दृश्य।

राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु अधिक पत्राचार करने वाले अनुभागों में पीएमईसी अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि डॉ.के.के. शर्मा, निदेशक, भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, राँची।

राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कम पत्राचार करने वाले अनुभागों में कोसोत्तर प्रौद्योगिकी अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. के. के.शर्मा, निदेशक, भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, राँची।

राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु वैज्ञानिक अनुभागों में जैव प्रौद्योगिकी अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि डॉ.के.के.शर्मा, निदेशक, भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, राँची।

हिन्दी पखवाड़ा, 2022 के मुख्य समारोह में उपस्थित वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी ।

मीडिया सुर्खियाँ

देशप्राण — राजधानी

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी राँची में हिन्दी पखवाड़ा का मुख्य समारोह आयोजित

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में रेशम दिवस आयोजित

राष्ट्रीय सागर सवांददाता

पिस्का नगड़ी : केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगडी में मंगलवार को स्वतंत्र भारत के प्रथम उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के योगदान एवं दूरदर्शिता की स्मृति में रेशम दिवस का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का केन्द्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना में उल्लेखनीय योगदान रहा है। वे बोर्ड के प्रथम पदेन अध्यक्ष थे तथा उन्हीं की अध्यक्षता में केन्द्रीय रेशम बोर्ड की पहली आम सभा की बैठक आयोजित की गई थी। रेशम दिवस के अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण द्वारा डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए निदेशक ने अपने सम्बोधन में कहा कि डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी का न केवल केन्द्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना में योगदान रहा है बल्कि भारतीय शिल्प बोर्ड, अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड तथा खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि हमें रेशम के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहना होगा। वर्तमान में तसर रेशम उत्पादन कई गुणा बढ़ा है तथा हमारा प्रयास होगा कि हम इसके उत्पादन एवं उत्पादकता में निरंतर वृद्धि करते रहें। उन्होंने रेशम हितधारकों के निरंतर वृद्धि एवं विकास के लिए केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान परिवार से सहयोग का आह्वान किया। इस अवसर पर निदेशक द्वारा संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों /कर्मचारियों/ पीजीडीएस छात्रों इत्यादि को रेशम दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा भी दिलवायी गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ.जे.पी.पाण्डेय द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन के.के.बडोला द्वारा दिया गया।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित

वन्य रेशम पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया

प्रयोगशालाओं में नव स्थापित उपकरणों का उद्घाटन समारोह आयोजित

केन्द्रीय तसर अनुसंधान में प्रेस मिलन कार्यक्रम आयोजित

बीएचयू, बाराणसी, एफआरसीईआर, प्रयागराज, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची के साथ समझौता तथा तसर डेवलपमेंट फाउंडेशन एवं हिंडालको इंडिया लिमिटेड के साथ करार किए गए हैं। कार्यक्रम का संचालन करते ...

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी के तत्वावधान में वन्य रेशम पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

पिस्का नगड़ी : केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, के तत्वावधान में वन्य रेशम पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का ...

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में प्रेस मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया

डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी के योगदान एवं दूरदर्शिता की स्मृति में रेशम दिवस का आयोजन किया गया

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी राँची में गुरुवार को हिन्दी पखवाड़ा का मुख्य समारोह आयोजित किया

प्रौद्योगिकी प्रसार एवं अनुभव साझाकरण पर राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है : शम

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं में नवस्थापित उपकरणों का हुआ उद्घाटन

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के योगदान एवं दूरदर्शिता की स्मृति में रेशम दिवस आयोजित

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में प्रेस मिलन कार्यक्रम का आयोजन

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में सोमवार को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा का मुख्य समारोह आयोजित

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में सतर्कता जागरूकता सप्ताह संपन्न

... अक्टुबर से 07 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। 31 अक्टुबर को निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण ने संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सतर्कता जागरूकता का मौखिक एवं ई सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा दिलायी। सतर्कता-जागरूकता ...

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी में अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक आयोजित

किसानों के लिए उपयोगी परियोजना बनाएं : रजित

कीटपालकों की आजीविका बढ़ाना है प्राथमिकता : रंजन

किसान हित में परियोजना बनायें : रंजन

पिस्कानगड़ी. केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में केंद्रीय रेशम बोर्ड के युवा वैज्ञानिकों की बैठक हुई. अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव राजित रंजन ओखंडियार (भावसे) ने देश से आये वैज्ञानिकों को आह्वान करते हुए कहा की सभी वैज्ञानिक ऐसी परियोजना बनायें जो कृषकों के लिए उपयोगी व लाभकारी हो. संस्थान के निदेशक डॉ के सत्यनारायण ने सभी वैज्ञानिकों को शुभकामना देते हुए प्रक्षेत्र उन्मुखी परियोजना बनाने पर बल दिया. युवा वैज्ञानिकों ने रेशम उत्पादन से संबंधित विभिन्न विषयों पर पावर प्वाइंट के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी. बैठक में पूरे देश से 28 युवा वैज्ञानिकों ने भाग लिया. इस दौरान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ निरंजन कुमार, डॉ एएच नकवी, डॉ एस गांधी दास, सुष्मिता दास, डॉ जेपी पांडेय, डॉ कर्मवीर जेना, डॉ विशाल मित्तल उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन डॉ मंजू नाथ व धन्यवाद ज्ञापन डॉ एस मंथिरा मूर्ति ने किया.

कीटपालकों की आजीविका बढ़ाना है प्राथमिकता : रंजन

सेमिनार में शामिल अधिकारी • जागरण

संसू, पिस्कानगड़ी : केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में झारखंड में प्रौद्योगिकी प्रसार एवं अनुभव साझाकरण पर राज्यस्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि निदेशक हस्तकरघा, हस्तशिल्प एवं रेशम झारखंड आकांक्षा रंजन ने कहा राज्य रेशम विभाग का उद्देश्य है कि राज्य के तसर रेशम कीटपालकों की आजीविका बढ़े।

अध्यक्षता करते केंद्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव राजित रंजन ओखण्डियार ने कहा किसी भी गतिविधि में अनुभव का बड़ा योगदान होता है। कार्यशाला के माध्यम से प्रक्षेत्र में कीटपालकों की समस्याओं पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि केंद्रीय रेशम बोर्ड, राज्य रेशम विभाग और वन विभाग द्वारा सामंजस्य स्थापित कर तसर रेशम उत्पादन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक के सत्यनारायण ने कहा कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के कार्य का अनुभव को साझा करें, ताकि इसका लाभ कितपालकों को मिले। मौके पर डा. एस मंथिरा मूर्ति, शमसाद आलम, जेपी पांडेय सहित विज्ञानी शामिल हुए।

क्विक बाइट्स

तसर अनुसंधान संस्थान में मना रेशम दिवस

पिस्कानगड़ी. केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में मंगलवार को देश के प्रथम उद्योग मंत्री डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की स्मृति में रेशम दिवस मनाया गया. निदेशक डॉ के सत्यनारायण ने कहा कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का न सिर्फ केंद्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना में बल्कि भारतीय शिल्प बोर्ड, अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड व खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है. हम रेशम के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है.

केंद्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का मुख्य समारोह आयोजित

हिंदी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम

पिस्कानगड़ी. केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में गुरुवार को हिंदी पखवाड़ा का समापन किया गया. मुख्य अतिथि राल एवं गोंद संस्थान नामकुम के निदेशक डॉ केके शर्मा ने कहा कि हिंदी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है. इससे हमारा संप्रेषण अधिक प्रभावी होगा. हमें हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग का प्रण लेने की आवश्यकता है. अध्यक्षता वैज्ञानिक एस गांधी ने की. कहा, हिंदी के प्रयोग पर अधिक बल दें. ताकि सरकारी कार्यों में हिंदी का महत्व बढ़ सके. संचालन कमल किशोर बडोला व धन्यवाद ज्ञापन डॉ जितेंद्र सिंह ने किया. मौके पर डॉ जेपी पांडे, सुष्मिता दास, डॉ केभी जेना, डॉ जगत सहित अन्य उपस्थित थे. सभारोह में संस्थान में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाली अनुभाग को राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया. वहीं हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया.

वन्य रेशम क्षेत्र में कई चुनौतियां : कुलपति

बैठक में शामिल लोग • जागरण

संसू, पिस्कानगड़ी : केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में अनुसंधान सलाहकार समिति की 51वीं बैठक हुई। बैठक में संस्थान के निदेशक डा. के सत्यनारायण ने अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों का ... परिषद केंद्रीय अंतरदेशीय मत्स्यकी संस्थान बैरकपुर पश्चिम बंगाल के सहयोग से मत्स्य आहार के रूप में रेशमिन का विकास किया है। बीएयू के कुलपति डा. ओंकार नाथ सिंह ने कहा वन्य रेशम क्षेत्र में कई चुनौतियां हैं। हमें उन चुनौतियों पर ...

तसर अनुसंधान केंद्र में दी गई जानकारी

ठंड में मछलियों के लिए रेशमीन आहार तैयार

15 परियोजनाओं की समीक्षा की गई

पिस्का नगड़ी में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया

केंद्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान में उद्घाटन समारोह का आयोजन

नवीनतम उपकरणों को अपना कर ही मिल सकता है सटीक परिणाम : डॉ. अय्यपन

भास्कर न्यूज | पिस्का नगड़ी

प्रयोगशाला में नव स्थापित उपकरणों का उद्घाटन करते अतिथि।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

संसू, पिस्कानगड़ी : नगड़ी के लालगुटवा स्थित वन उत्पादकता संस्थान में 31 अक्टूबर से भ्रस्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत के अन्तर्गत सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इसका समापन समारोह सोमवार को मनाया गया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी एवं संस्थान के सतर्कता अधिकारी डा. अनिमेष सिन्हा के द्वारा संस्थान के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एव विद्यार्थियों को अपने कार्यकलापों में ईमानदारी एवं पारदर्शिता बनाए रखने की शपथ दिलाकर की गई। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताओं ...

सतर्कता जागरूकता की शपथ लेते कर्मचारी • जागरण

... पर डा. अनिमेष सिन्हा ने विश्व तथा भारत में भ्रष्टाचार के आंकडों को दर्शाते हुए उनसे उन्मूलन के प्रयासों की जानकारी दी। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मौके पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. योगेश्वर मिश्रा, डा. शरद तिवारी, संजीव कुमार आदि थे। इधर, नगड़ी ... प्रशिक्षण संस्थान में भी सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। मौके पर डा. के. सत्यनारायण ने संस्थान के कर्मियों को सतर्कता-जागरूकता का मौखिक एवं ई सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा दिलायी। अध्यक्षता वैज्ञानिक डा. एस गांधी दास, संचालन डा. जेपी पांडेय तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. जगत ज्योति ...

क्विक बाइट्स

तसर अनुसंधान केंद्र में प्रशिक्षण व उपलब्धियों पर चर्चा

पिस्कानगड़ी. नगड़ी स्थित केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में शुक्रवार को तसर का संवर्धन के क्षेत्र में उपलब्धियां एवं भावी रणनीति पर चर्चा हुई. संस्थान के निदेशक डॉ के सत्यनारायण ने संस्थान के अनुसंधान, तकनीकी, हस्तांतरण, प्रशिक्षण समेत अन्य उपलब्धियों की जानकारी दी. उन्होंने कहा कि तसर के समावेशी विकास हेतु संस्थान ने बीएचयू (वाराणसी), एफआरसीइआर (प्रयागराज), बिरसा कृषि विश्वविद्यालय सहित कई संस्थानों के साथ करार किया है. संस्थान कृषकों की आय दोगुना करने के लिए प्रयत्नशील है. कार्यक्रम का संचालन करते हुए सहायक निदेशक राजभाषा कमल किशोर बड़ौदा ने कहा कि समाज में मीडिया की भूमिका अहम होती है. कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिक

आखिरी नजर

डॉ.चेनापल्ली रवि शंकर*

एसएससी तक एक साथ पढ़ने वाले चार दोस्तों ने परीक्षा के बाद होटल जाकर चाय–नाश्ता करने का फैसला किया। रविवार का दिन था, साइकिल से होटल पहुँचा। नाश्ता करते हुए दिनेश, संतोष, मनीष और प्रवीण बात करने लगे। चारों ने सर्वसम्मति से पचास साल बाद उसी तारीख को 04 अप्रैल को इस होटल में फिर से मिलने का फैसला किया। तब तक हम सभी को कड़ी मेहनत करनी होगी और बेहतर बनना होगा। तब तक चारों दोस्तों को चाय–नाश्ता परोसने वाले वेटर राजू ने यह सब सुना और कहा, सर, अगर मैं यहाँ रहूँगा तो मैं इस होटल में आप सभी का इंतजार करूँगा। चारों आगे की पढ़ाई के लिए अलग हो गए। दिन, महीने, साल बीत गए। पचास वर्षों में शहर में आमूल–चूल परिवर्तन हुए हैं, शहर की आबादी बढ़ी है, सड़कें, फ्लाई ओवर, महानगरों ने शहर की रूपरेखा बदल दी है। अब वह होटल फाइव स्टार होटल बन गया है, वेटर राजू अब उस होटल का मालिक बन गया है। पचास साल बाद, 04 अप्रैल की दोपहर को एक लग्जरी कार होटल के दरवाजे पर आ गई। दिनेश कार से उतरे और बरामदे की ओर चलने लगे, दिनेश के अब तीन ज्वैलरी शोरूम हैं। राजू कहता है कि प्रवीण सर ने एक महीने पहले आपके लिए टेबल बुक किया था। एक घंटे के भीतर संतोष आ गया और संतोष उस शहर में बड़ा बिल्डर बन गया। जब दिनेश और संतोष दोनों बात कर रहे थे और दूसरे दोस्तों का इंतजार कर रहे थे, तो तीसरा दोस्त मनीष आधे घंटे में आया और उनसे मिल गया। उससे बात करने के बाद दिनेश और संतोष को पता चलता है कि मनीष एक बिजनसमैन बन गया है। तीनों दोस्तों की निगाहें बार–बार दरवाजे की तरफ जा रही हैं, सोच रही हैं कि प्रवीण कब आएगा। तीनों पचास साल बाद एक–दूसरे से मिलकर खुश हैं। घंटों तक उनकी बातचीत चलती रही लेकिन प्रवीण नहीं आया। बिल माँगते ही

तीनों का जवाब मिला कि बिल का भुगतान ऑनलाइन कर दिया गया है। शाम करीब आठ बजे एक युवक कार से उतरा और निकलने की तैयारी कर रहे तीन दोस्तों के पास पहुँचा। तीनों ने उस आदमी को देखा। युवक कहने लगा कि मैं आपके दोस्त का बेटा रवि हूँ और मेरे पिता का नाम प्रवीण है। पिताजी ने मुझे आज आपके आने की बात बताई, मैं इस दिन का इंतजार कर रहा हूँ क्योंकि मेरे पिताजी का पिछले महीने एक गंभीर बीमारी के कारण निधन हो गया था। मेरे पिता ने मरने से पहले मुझे कहा था कि मेरे दोस्त खुश नहीं होंगे जब उन्हें पता चलेगा कि मैं इस दुनिया में नहीं हूँ और वे एक–दूसरे से मिलने की खुशी से चूक जाएंगे। इसलिए मुझे आज देर से होटल जाने के लिए कहा गया। उन्होंने आपको अपनी ओर से उसे गले लगाने के लिए भी कहा है, "रवि ने अपनी दोनों बाहों को फैलाते हुए और उन्हें गर्मजोशी से गले लगाते हुए कहा। आसपास के लोगों ने उस दृश्य को बड़ी दिलचस्पी से देखा और सोचा कि उन्होंने युवक को कहीं देखा है। मेरे पिता एक शिक्षक बन गए, लेकिन उन्होंने मुझे एक कलेक्टर के रूप में शिक्षित करने के लिए बहुत मेहनत की। तीनों दोस्त यह महसूस कर वापस लौटे कि उन्होंने एक अच्छा दोस्त खो दिया है, उनकी आँखों में आ रही उदासी के अंतिम दर्शन को न देखकर। इसलिए सगे–सम्बन्धियों और दोस्तों से मिलते रहो, बरसों तक इंतजार मत करो, न जाने कब किसी की बारी आये ! अपने परिवार और दोस्तों की संगति में रहें और जब तक आप जीवित हैं, इसका आनंद लें। सर्वेजनाः सुखिनो भवन्तु। ❐❐❐

*वैज्ञानिक–डी, क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, अनंतपुर

रचनाकारों के लिए सूचना

रेशम वाणी के सभी सम्मानित रचनाकारों से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाओं के साथ अपना बैंक विवरण यथा-बैंक का नाम, खाता संख्या, IFSC कोड एवं मोबाइल नम्बर भी भेजें ताकि रचनाओं के मानदेय का भुगतान केवल ऑन-लाइन माध्यम से उन्हें समय पर किया जा सके। साथ ही रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ भी भेजें।

रचनाकारों से अनुरोध है कि रचनाएँ साफ-साफ हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टंकित रूप में भेजें तथा यदि संभव हो तो रचना की सॉफ्ट प्रति ई-मेल (ctrtihindi@gmail.com) के माध्यम से भेजें। रचनाएँ यथा समय रेशम वाणी में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा तथापि अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाएंगी।

संपादक

बिन्दी

डॉ. रंजना जायसवाल*

एक छोटे से शहर का एक बड़ा सा मोहल्ला जिसकी छतें आपस में जुड़ी हुई थी। कभी–कभी लगता मानो आपस में गलबहियाँ कर रही थी वो...छतों पर सूखते पापड़, चिप्स और उड़द–मूँग की सादी और मसालेदार बड़िया और उनकी रखवाली करते वे नन्हे–नन्हे हाथ और उन हाथों में अपनी लम्बाई से भी लम्बी वो बड़ी–बड़ी लाठियाँ। आलू के पापड़ के मसाले को चखने के बहाने वो बढ़ाये हुए हाथ और उस कच्चेपन के स्वाद को चखने के बहाने तेल में लिपटी हुई आलू की न जाने कितनी लोइया उनके उदर तक पहुँच जाती। आज विन्नी का मन यादों के गलियारों में यूँ ही तफरीह करने चल पड़ा था। इन मुहल्लों की गलियाँ भी इनकी तरह ही अजीब थी, बाँस गली, फूलों वाली गली, बताशे वाली गली और न जाने क्या–क्या। फूलों वाली गली जिसमें कभी फूल जरूर मिलते और बिकते रहें होने पर अलबत्ते आज वहाँ फूल तो क्या एक पत्तियाँ भी नहीं मिलती पर बताशे वाली गली उसकी वो सोंधी सी खुशबू आज भी मन को तृप्त कर देती है। बताशे वाली गली जहाँ बड़े–बड़े कड़ाहों में पकती सफेद चीनी से उठते धुंवे में पसीने से तर–बतर आकृति कहीं गुम सी हो जाती। उन गरम–गरम बताशों का स्वाद ऐसा कि महँगी मिठाइयाँ भी पानी भरे। सधे हाथों से सफेद चादर पर कलछुल से समान दूरी पर डाली गई चाशनी की गोलाई ऐसी कि बड़े–बड़े आर्टिटेक्ट भी फेल...। इन छोटे–छोटे शहरों के बड़े–बड़े मोहल्लों में आज तक शहरी हवा घुस नहीं पाई थी। इन मोहल्लों में रहने वालों की अपनी एक अलग ही दुनिया थी। छोटी–छोटी बातों में भी वो अपनी खुशियाँ ढूँढ लेते थे। विन्नी...विन्नी भी तो इसी मोहल्ले में रहती थी। उस मुहल्ले में रामराज और चूने में आवश्यकता से अधिक नील डालकर कूँची से पोते हुए मकान लगभग एक जैसे ही दिखते थे। इन मोहल्लों की एक बात कभी समझ नहीं आती, माचिस की डिबिया से बन्द दरबों में एक–दूसरे के ऊपर तल्ले पर तल्ले खिंचवाते मकानों को बाहर से प्लास्टर करवाने में लोग न जाने क्यों कंजूसी कर जाते थे। बजबजाती नालियों से बचते–बचाते मुँह पर हाथ, दुपट्टा, गमछा, आँचल रखकर निकलते लोग फिर भी कितने खुश थे। उस मुहल्ले के घर के चबूतरे भी एक–दूसरे से लगे हुए थे। वो चबूतरे कम, संसद भवन का प्रांगण से कम नहीं थे, जहाँ बैठे–बैठे सत्ता बनाई और पलट दी जाती थी। वही चबूतरे पर बैठे–बैठे सुबह की राम–राम और ब्रश से दाँतों के साथ कुश्ती करते हुए पड़ोसी के दिनभर की दिनचर्या भी पूछ ली जाती और मुँह में भरे पेस्ट और पानी को गुलगुलाते हुए पिच्च के साथ लगे हाथों एक मनुहार भी कर दी जाती। ''बेटा! अब वहाँ तक जा ही रहे हो तो अपनी चाची को भी लेते जाना, हफ्तों से जान खा रही है। मायके में बुआ की देवरानी के बेटे की शादी पड़ी है और जान हमारी हलकान किये पड़ी है। वो पुल के उस पार जो महँगा वाला दर्जी है न...वही जो फिल्मी तारिकाओं

वाले ब्लाउज हूबहू उतार देता है। बस वही... तुम्हारी चाची जिद पकड़कर बैठी है, अबकी बार बस उसी से सिलवायेंगे वरना शादी में नहीं जायेंगे। अब बताओ भला ये भी कोई बात हुई, पीढ़ियाँ बीत गई हमारी पिछली गली वाले जुम्मन चाचा की दुकान से कपड़े सिलवाते–सिलवाते...हमारी अम्मा भी उसी से सिलवाती थी। बाबूजी का कच्छा, पायजामा, छुटकी की फ्रॉक, नन्हे का बुशर्ट सब कुछ तो सिलते है पर..।'' इन मोहल्लों में एक अलग ही तरह का भाईचारा था, दीवारे अलग थी पर आँगन सबके एक थे। कटियाँ मारने की संस्कृति घर–घर में थी। बाँस की एक मरियल सी डंडी में तार खोसे हर घर से एक जंग लगा बहादुर ऐसे निकलता कि बस पूछो ही मत और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर बाँस पड़ोसी को ऐसे पकड़ा देता जैसे कोई राजगद्दी की बागडोर दूसरे को सौंप रहा हो और वो डंडा एक घर से दूसरे घर होता मोहल्ले के अंतिम छोर तक पहुँच जाता। यकीन मानिए वो महज बाँस का एक डंडा नहीं था वो था उस जैसे न जाने कितने ही मोहल्ले की एकता और भाईचारे का प्रतीक...और उसके बाद शुरू होता था सड़क पर ही पानी भरने के लिए टुल्लू के साथ साक्षात्कार। ये बिजली के तार महज घरों में रौशनी देने का काम नहीं करते थे बल्कि मोहल्ले में एकता भाईचारे और सौहार्द का भी काम करते थे। बंदरों की उछल–कूद से धाराशाही हुए तारों को संगम कराने वाले हाथों के इंतजार में पूरी रात उसी चबूतरे पर रात्रि जागरण के साथ इंतजार में कट जाती। माँ नींद में कुलबुलाते बच्चों को पंखा झलते–झलते नींद में ऊँघने लगती पर ढिबरी की रौशनी में खेलते हाथ बड़ी फुर्ती के साथ गमछे के ऊपर ताश की पत्तियाँ फैला देते और जीत–हार की उत्तेजना में ये भी भूल जाते कि बच्चे बिजली के इंतजार में वही चटाई पर ही लुढ़क गए हैं। माँओं की बड़ी–बड़ी आँखें बच्चों की नींद में खलल के डर से क्रोध में और भी बड़ी–बड़ी हो जाती। मच्छरों के साथ कदम के साथ कदम और ताल के ताल बजाते कब सुबह हो जाती पता भी नहीं चलता। उस छोटे से शहर के बड़े से मुहल्ले की सँकरी सी गलियों में तीसरी गली में चौथा मकान था बुआ जी का। बुआ जी !....उनका नाम क्या था शायद कोई नहीं जानता...सच पूछो तो किसी को जरूरत भी नहीं थी। किसी

भी उम्र का आदमी हो, सब उन्हें बुआ जी ही तो कहते थे। जब से होश संभाला था तब से उन्हें बस हँसते–मुस्कुराते ही देखा था। लम्बी, सुबह के सूरज की तरह उजली, छरहरी सी बुआ जी. ..जिनके तम्बाई रंग में हर रंग का वस्त्र घुल–मिल जाता, मानो वो रंग बस उन्हीं के लिए ही बना हो। उन दिनों ये समझना मुश्किल था कि घर किसका है और बच्चे किस घर के...विन्नी भी तो दिनभर बुआ जी के घर पर ही पड़ी रहती। बुआ जी...काका और काकी की इकलौती संतान थी, सुघड़ तो इतनी कि पूछो मत। हाथों में जादू था, उँगलियों में ऐसा रस की उनका बनाया खाना जो खाये उँगलियाँ चाटता रह जाये। घर की हर दीवार उनकी बनाई कलाकृतियों का गवाह था। सलाई के फंदे तो ऐसे डालती की बाजारु स्वेटर भी उसके सामने फेल था। चादरों पर रंगीन धागों से फूल चिड़िया ऐसे उकेरती की लगता बस अभी बोल पड़ेगी। उन दिनों लड़कियों का पढ़ाई का चलन कम ही था पर काका ने उनकी पढ़ाई में कोई कसर न छोड़ी थी। घर पर गुरु जी आकर हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत की शिक्षा देते थे। ''छोरी को इतना न पढ़ाओ, वरना ब्याह में दिक्कत आयेगी।'' नन्ही सी विन्नी को समझ नहीं आता कि बुआ जी की पढ़ाई से उनका ब्याह का क्या रिश्ता...? बुआ जी का वो गुदगुदा सा शरीर गालों पर पड़ते गड्ढे विन्नी को हमेशा आकर्षित करता। अपनी बड़ी–बड़ी कजरारी आँखों को वो न जाने क्यों और कजरारी करने में लगी रहती थी। अपनी लम्बी–लम्बी सधी उँगलियों में चाँदी की शलाका को पकड़े जब वो आँखों के पास ले जाती तो नन्ही विन्नी डर जाती । कहीं उनकी आँखें घायल न हो जाये...एक दिन नन्ही विन्नी ने उनकी उस शलाका से काजल निकाल कर अपने माथे पर बिंदी लगा ली..

''वन्नी ! पागल है क्या...ये क्या कर रही है।''

नन्ही विन्नी सहम कर सिकुड़ गई, डर से उसके हाथ से शलाका गिर गई।

''वो$$$..वो मैं...''

बुआ जी ने विन्नी ने गालों को प्यार से थपथपाया और उसको गोदी में बैठा लिया।

''विन्नी ! काली रंग की बिंदी नहीं लगाते, अशुभ होता है।''

''अशुभ !...पर माँ भी तो मेरे छोटे भाई को लगाती है।''

हिरनी के बच्चे की तरह सहमी विन्नी की आँखें डर और घबराहट से जल्दी–जल्दी झपकने लगी। बुआ जी के चेहरे पर एक मासूम मुस्कान बिखर गई,

''वो बिंदी नहीं नजर का टीका होता है, दुनिया की बुरी नजर से बचाने के लिए..''

''पर लगाते तो उसको भी माथे पर ही है।''

बुआ जी के पास विन्नी के सवालों का कोई जवाब नहीं था। विन्नी के सवाल खत्म नहीं हो रहे थे पर विन्नी गलत तो नहीं कह रही थी। विन्नी का बिंदी के प्रति प्रेम कभी खत्म नहीं हुआ। बुआ जी काका–काकी का इकलौता सहारा थी। उनके बिना तो वो जीवन के बारे में सोच भी नहीं सकते थे पर लड़कियों को कौन जीवन भर अपने पास रख पाया। बुआ जी उस दिन विन्नी से कितना लिपट कर रोई थी। विन्नी आश्चर्य से बुआ जी को देख रही थी। लाल साड़ी, मांग में लाल सिंदूर और माथे पर वही विन्नी की चहेती बिंदिया चमक रही, सच कहूँ तो विन्नी का मुँह चिड़ा रही थी। विन्नी मुँह फुला कर बैठी थी, बुआ को नये–नये कपड़े, गहने और बक्सा भर कर सामान मिला और वो तब भी रो रही थी। काश उसे भी ऐसे सामान मिलता तो वो खुशी से नाच उठती। न जाने कितनी रातों तक विन्नी की आँखों के सामने बुआ जी वो सिंदूरी गोल–गोल बिंदी घूमती रही। ''हाय... बुआ कित्ती सुंदर लग रही थी।'' ससुराल वाले बुआ जी को विदा करने को तैयार नहीं हो रहे थे। काका से बिटिया का विछोह झेला नहीं जा रहा था, आखिर कब तक मन को मनाते । काका बुआ जी के ससुराल वालों के हाथ–पैर जोड़कर आखिर सावन में विदा कर ले ही लाये। काकी ने अम्मा को बताया था।

''पूरे एक महीने के लिए कहकर लाये हैं। अरे भाई कन्यादान किए हैं। कोई अपराध नहीं किए हैं कि मायका पलट कर नहीं देखेगी। ऐसा भी क्या कि बिटिया को विदा नहीं करेंगे।'' विन्नी के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे, उसकी खुशियों का कोई छोर नहीं था। उसकी खुशियों में बुआ नामक रंग भर गया था। बुआ जी के बिना वो मुरझा सी गई थी। बुआ के आने की खबर से वो खुशी के मारे चिड़िया की तरह इधर से उधर फुदक रही थी। सच भी तो था विन्नी का अधिकतर समय उन्हीं के पास तो बीतता था। काकी ने विन्नी के माथे को चूमते हुए कहा था, ''आ रही है तेरी बुआ अब मन भर के रहना उनके साथ...एक दिन तुम भी ऐसे ही किसी के घर चली जाओगी, तब पुछूँगी कि बुआ के बिना मन कैसे लगेगा।'' उस दिन अम्मा और काकी ठठा मारकर हँस पड़ी थी। कितने दिनों बाद काकी को इस तरह हँसते देखा था। बुआ जी के जाने के बाद तो मानो वो हँसना भूल गई थी। हाथों में मेंहदी, पैरों में महावर, भर–भर चूड़ियाँ और उजले माथे पर बड़ी सी नगदार बिंदी.. हाय कित्ती सुंदर थी न, मानो कोई तारा टूटकर बुआ जी के माथे पर चिपक गया हो। विन्नी ने ऐसी बिंदी पहली बार देखी थी। अम्मा तो हमेशा वही सादी सी बिंदी लगाती थी। बुआ जी के आने से विन्नी के चेहरे की रौनक लौट आई थी। बुआ जी अपने साथ कितने सुंदर–सुंदर कपड़े लाई

थी, साड़ियाँ तो ऐसी मुलायम कि मुट्ठी में आ जाये। अम्मा बता रही ससुराल वालों ने कलकत्ता से खरीदारी की थी, वहाँ का कपड़ा बहुत अच्छा होता है पर नन्ही विन्नी की आँखें तो बुआ जी की बिंदी पर अटकी रहती थी। कितने सारे पत्ते लाई थी वो...हर रंग के गोल, चौकोर, तिलक, अंडाकार, नग वाली, मोती वाली। बुआ जी बता रही थी सब कलकत्ता की है.. कोई–कोई पत्ता तो पचास रुपये का है। नन्ही विन्नी को तो इतनी गिनती भी नहीं आती थी। बुआ जी की बिंदिया कभी बिस्तर के सिरहाने पर तो कभी गुसलखाने की दीवारों पर चिपकी मिल जाती।

हरदम हँसती–मुस्कुराती बुआ जी ने अपने सपनों की दुनिया में खोई हुई थी और नन्ही विन्नी उनकी बिंदी में...आज भी याद है उसे वो मनहूस दिन। बुआ जी सुबह से भूखी थी, सावन का पाँचवां सोमवार था। बुआ जी अक्सर कहती थी ''विन्नी ! तू भी व्रत रखा कर शंकर जी बड़े दयालु हैं। तुझे भी राजकुमार मिलेगा..'' और नन्ही विन्नी एकदम से खिल गई। तब तो उसे सुंदर–सुंदर कपड़े, गहने और रंग–बिरंगी बिंदिया भी मिलेगी। ''बिल्कुल आप की तरह...!''

''हाँ–हाँ ! बिल्कुल मेरी तरह, बल्कि मैं तो कहूँगी मुझ से भी अच्छा राजकुमार मिलेगा तुझे..''

बुआ जी दिन भर अपने राजकुमार के सपनों में खोई रहती, कभी–कभी बैठे–बैठे अचानक से कुछ सोचकर मुस्कुरा देती तो कभी फिस्स से लजाकर हँस पड़ती, मानो उनका राजकुमार चुपके से हौले से उन्हें गुदगुदा गया हो। नन्ही विन्नी सोच में पड़ जाती, बुआ यहाँ तो अच्छी–भली थी ससुराल जाकर क्या हो गया ? विन्नी अम्मा के साथ हर सोमवार को पहाड़ी वाले मंदिर पर जाती थी, वहाँ मैले–कुचैले कपड़ों में एक आदमी ऐसे ही तो मुस्कुराता रहता था, कभी अचानक से रोने लगता तो कभी बच्चों की तरह खिलखिला कर हँस पड़ता। कितना डर गई थी वो उस दिन...अम्मा ने बताया था अच्छा–भला आदमी था, यही पास में नुक्कड़ पर दुकान लगाता था, शायद किसी ने टोना–टोटका कर दिया था बस तभी से... विन्नी कितना डर गई थी उस दिन, रात भर उसे सपने में वही आदमी दिखता रहा। कभी अपने गन्दे नाखूनों से बाल खुजाता तो कभी शरीर. .अचानक से ऐसे हँस पड़ता जैसे कोई चुटकला सुन लिया हो। कही बुआ जी के ऊपर ससुराल वालों ने कोई टोटका तो नहीं कर दिया। नन्ही विन्नी को क्या पता था कि बुआ जी के ऊपर अपनी नई–नई शादी और कुँवर सा का टोना चढ़ा हुआ था। सुंदर तो वो थी ही पर शादी के बाद उनकी रंगत और भी खिल गई थी। अम्मा कहती थी ''छोरी पर सिंदूर का असर है।'' बुआ का मन खुशियों के सागर में डूब–उतरा रहा था, काकी–काकी बिटिया के सुख से सुखी हो रहे थे। अम्मा ने कई बार काकी से कहा, ''अरी मालती ! बिटिया से पूछ तो ससुराल में सब ठीक तो है..'' और काकी की आँखें बिटिया के सुख की कल्पना मात्र से भीग–भीग जाती। ''पूछना क्या विन्नी की अम्मा, उसका चेहरा तो देखो खुशी उसके चेहरे से टपकती है, भगवान जोड़ी बनाये रखे।'' पर शायद काकी की गुहार भगवान तक नहीं पहुँची। किसे पता था कि बुआ जी के सपनों का राजकुमार उनका सपना तोड़कर यूँ चला जायेगा। सुना था बुआ को विदा कराने आ रहे थे पीछे से गाड़ी को ट्रक ने धक्का दे दिया और कुँवर सा अपनी दुल्हिन की छवि आँखों में लिए इस दुनिया से चले गये। निर्मोही ने एकबार भी बुआ के बारे में नहीं सोचा, अभी तो बुआ जी को कुँवर सा के साथ झूले पर कजरी सुनना बाकी थी। बुआ के पैरों की पायल की रुनझुन अचानक से खामोश हो गई थी। चूड़ियाँ खनकना भूल गई। बुआ दहाड़े मारकर रो रही थी, उनका रुदन देख सबकी आँखें भीग गई। बुआ से कहाँ गलती हो गई, भोले बाबा ऐसे रुष्ट हो जायेंगे किसी ने नहीं सोचा था... बुआ रोते–कलपते ससुराल पहुँची और उल्टे पाँव मायके लौट भी आईं। बुआ की मांग का सिंदूर कुँवर सा के अंतिम स्नान के साथ चला गया था। पहले सावन में भर–भर हाथ पहनी हरे काँच की चूड़ियाँ जमीन पर पटक–पटक तोड़ दी गई थी। निर्मोही हाथों ने एक–एक श्रृंगार एक–एक सुहाग की निशानी नोच–नोचकर बुआ के शरीर से अलग कर दी थी। हमेशा गहरे चटक रंग के कपड़ें पहनने वाली बुआ के तन पर सफेद साड़ी लपेट दी गई। उन्हें इस रूप में देख एक पल को ऐसा लगा मानो सफेद रंग भी लज्जित होकर मुँह छिपाये उनके तम्बाई तन में कहीं घुल–मिल गया था। जिस ससुराल ने हाथ बढ़ाकर बुआ का स्वागत किया था, कुँवर सा के जाने से अचानक से निर्मोही हो गया था। ''जब बेटा ही नहीं रहा तो बहू किस काम की..'' यही तो कहा था ससुराल वालों ने...बुआ की सिंदूरी बिंदी न जाने किस सागर में डूब गई, कभी भी न निकलने के लिए.. नन्ही विन्नी बुआ का सूना माथा देखकर डर गई थी। विन्नी ने कभी नहीं सोचा था कि न जाने कितनी ही रातों और सपनों में विन्नी ने जिन बिन्दियों की उसने कल्पना की थी वो इस तरह नोंच कर फेंक दी जायेगी। कुँवर सा जो बुआ की जिंदगी थे वो हाथ छुड़ाकर इस दुनिया से चले गये थे। दिन बीतते रहे बुआ के आँसू सूख से गये थे, बुआ ने अपने आपको कमरे में बंद कर लिया था। जिस ससुराल में राजरानी की तरह स्वागत हुआ था, वहाँ से ऐसे दुत्कार दी जायेगी...ये बात उन्हें जीने नहीं दे रही थी। अम्मा बुआ और काकी का दर्द अच्छी तरह समझ रही थी, काकी तो फिर भी अम्मा के सामने रोकर जी हल्का कर लेती पर बुआ...बुआ तो पत्थर हो गई थी। वो घण्टों छत की तरफ देखती रहती...बुआ की चुप्पी ने मासूम विन्नी को भी झकझोर कर रख दिया था। बुआ बिस्तर के सिरहाने पर चिपकी अपनी बिन्दियों को घूरती

रहती, क्या किसी ने सोचा था इन बिंदियों की उम्र इतनी कम होगी। काकी से बुआ का दुख देखा नहीं जा रहा था। एक दिन कलेजे पर पत्थर रखकर काकी ने उनके बिस्तर और गुसलखाने की दीवारों से सारी बिंदिया निकाल कर फेंक दी। बुआ तड़पकर रह गई, हफ्तों से जमा दर्द आँखों की सीमा–रेखा को तोड़कर भरभरा कर निकल आया। बुआ घण्टों रोती रही, उनके सिसकने की आवाज बाहर तक आ रही थी। उस दिन घर में चूल्हा नहीं जला क्योंकि अंदर जो आग जल रही थी आज उसको बुझाना सबके लिए भारी हो रहा था। काकी ने बुआ को चुप कराने का प्रयास नहीं किया। समय तेजी से बदल रहा था पर बुआ के लिए वक्त कहीं ठहर सा गया था। काकी ने गृह शांति के लिए पूजा रखवाई थी। बुआ मुस्कुरा रही थी...जीवन में हलचल मचा देने वाली परिस्थितियाँ को आखिर कौन सी पूजा शांति प्रदान कर सकती है। बुआ दीवार का सहारा लिए एक कोने में चुपचाप बैठी थी...नन्ही विन्नी दौड़–दौड़कर सबको प्रसाद बाँट रही थी, अम्मा ने उठकर भगवान के चरणों में चढ़े रोली के टीके की कटोरी उठाई और सबके माथे पर टीका लगाने लगी। श्रद्धा से लोग सर झुकाते जा रहे थे और अम्मा सबके माथे पर रोली का टीका लगा रही थी कि विन्नी ने टीके की कटोरी अपने हाथों में ले ली। ''क्या हुआ री मैं लगा रही हूँ न तेरे हाथ खराब हो जायेगे।'' ''अम्मा अब मैं बड़ी हो गई हूँ, मुझे दो न ...मैं लगती हूँ न सबको टीका, आप कोई और काम देख लो।'' अम्मा विन्नी की मासूमियत पर मुस्कुरा दी। ''वो तो देख ही रही हूँ तू कितनी बड़ी हो गई है।'' जब से बुआ जी के साथ यह हादसा हुआ था विन्नी उनके साथ साए की तरह चिपकी रहती। अम्मा भी समझ रही थी कि नन्ही सी विन्नी अपनी तरफ से बुआ के दर्द को कम करने की कोशिश कर रही है। मासूम सी विन्नी टीका लगाते–लगाते बुआ के पास आ गई और अपनी नन्ही–नन्ही उँगलियों से लाल रोली का टीका बुआ के माथे पर लगा दिया

नन्ही विन्नी आज बहुत खुश थी...बुआ के माथे पर रोली का टीका सज रहा था। विन्नी नहीं जानती थी कि बिंदी के हर रंग के साथ बुआ का जीवन का रंग अचानक से क्यों इतना बदल गया था पर विन्नी आज खुश थी बहुत खुश...उसकी बुआ का जीवन में अब नए रंग भर रहे थे। ❐❐❐

*लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही,
मिर्जापुर– 231001, उत्तर प्रदेश

लघु कथा

अपाहिज

रानी प्रियंका वल्लरी*

डॉ विनीता एक गाँव में लगने वाली विकलांग शिविर के लिए घर से निकली थी। वह हड़बड़ी में बस स्टॉप के तरफ भागी जा रही थी। तभी एक पैर से विकलांग नौजवान सामने आ खड़ा हुआ।

''मैडम ! मैडम..... ।''

वह कुछ आगे बोलता उसके पहले ही विनीता गुस्से में तिलमिलाती उठी, ''तुम सबकी यही सबसे बड़ी विडंबना है। स्त्री देखें नहीं की बहाने ढूँढ़कर टकरा गए। ना जाने कौन–सा सुख मिल जाता है तुम सब को।''

''अरे मैम ! देखकर तो चलिए। आगे नो एंट्री की बोर्ड लगी है !'' एक प्लास्टिक स्माइल देते हुए वह नौजवान आगे बढ़ गया।

विनीता को अपाहिज का यूँ मुस्कुराना जरा भी अच्छा नहीं लगा। बस में बैठते ही सोचने लगी, ''काश ! अपनी गाड़ी से आई रहती तो मूड खराब नहीं होता। सुबह– सुबह ना जाने किस अपाहिज से मुलाकात हो गई।''

''टिकट ! मैडम टिकट !''

आवाज सुनते ही डॉ विनीता की तंद्रा भंग हो गई।

जैसे ही नजर ऊपर की फिर से वही अपाहिज सामने खड़ा था।

''मैडम जरा जल्दी कीजिए ! मुझे आपको आपके मंजिल तक पहुँचाने हैं ! हमारा कंडक्टर आज डबल दिहाड़ी पर कहीं और कमाने गया हैं, उसको अपने पत्नी को डॉक्टर बनाना है और मुझे उसके पत्नी को उसके मंजिल तक पहुँचाने में मदद करनी है।''

डॉ विनीता सन्न थी। सोच में डूब गई, अपाहिज कौन मैं या ये कंडक्टर ?

❐❐❐

*बहादुरगढ, हरियाणा

दृश्य से बाहर

डॉ.देवांशु पाल*

मेरी नजर उसकी तरफ एकाएक ही पड़ी थी। जब मैंने अपनी नजरें फाइल के पन्नों से हटाकर सामने की ओर देखा था तब मुझे वह दिखा। वह मेरी ही तरफ टुकुर–टुकुर देख रहा था और आगे बढ़ रहा था। बीच–बीच में रूक भी रहा था। उसकी साँसें फूल रही थी। वह खाँस रहा था। शायद उसका गला सूख रहा था।

वह किसान था। वह किसान ही था। एकदम ठेठ भारतीय किसान। घुटनों के ऊपर तक उठी उसकी मटमैली धोती, शरीर पर हाफ बाहों वाली बदबूदार शर्ट। आँखें धसी हुई, गाल पिचका हुआ। अधपकी दाढी, बदरंगे दाँत, बिना तेल कंधी किये हुए सफेद काले बिखरे सिर के बाल। उसका पूरा हुलिया भारत के किसी गरीब गाँव के दरिद्र किसान जैसा ही था।

जब वह मेरे टेबल के करीब आ पहुँचा तब मैं समझ गया कि यह बूढ़ा गरीब किसान मेरे पास ही आ रहा है। अपने खेत में बिजली का पम्प लगवाने के लिए। उसके साथ एक औरत भी थी। दुबली–पतली, साँवली वह उसकी पत्नी होगी। उसके भी कपड़े मैले और गंदे थे। मुझे वह औरत बीमार सी लग रही थी। वह अपने आँचल में कोई पोटलीनुमा चीज छुपाये रखी थी। मुझे लगा यह दोनों पहली बार शहर आए हुए हैं और पहली बार सरकारी दफ्तर में। दोनों के चहरे पर भय और थकान थी। आँखों में आशा–निराशा के बीच झूलती थोड़ी सी उम्मीदों की गुंजाइश। दोनों मेरे टेबल के सामने आकर खड़े हो गए।

उस वक्त सुबह के ग्यारह–साढ़े ग्यारह बज रहे थे। दफ्तर का काम–काज शुरू ही हुआ था।

–'' बाबू साहब नमस्ते.....''

दोनों ने एक साथ हाथ जोड़कर कहा।

–'' नमस्ते ! बोलो क्या काम है.....''। मेरी नजर फाइल के पन्नों पर गड़ी रही। वे दोनों बहुत देर तक यूँ ही खड़े रहे। मैंने उन्हें चुप खड़े देखकर फिर पूछा।

–'' बोलो क्या काम है.....''

–'' मोर कागज आइस हावय का.....'' बूढ़े ने छत्तीसगढ़ी भाषा में पूछा।

–'' कौन सा कागज.....'' मैंने उसकी तरफ देखकर पूछा।

–'' बिजली के पम्प कनेक्शन बर.....''

–'' किस नाम से.....''

–'' मोर नाव से.....''

–'' तोर का नाव हावय.....'' मैंने उससे पूछा। उसने सहज होकर कहा–

–'' काशीराम सूर्यवंशी.....''

–'' गाँव का क्या नाम है?

–'' सीपत, गुडी.....''

मैं अलमीरा से रजिस्टर निकालकर उसका नाम ढूँढ़ने लगा। वह बूढ़ा वही नीचे फर्श पर बैठ गया। मैंने उसे वहां बैठने से मना किया। वह नहीं सुना, मैं उसे समझाने की कौशिश में कहने लगा–'' अरे.....यहाँ मत बैठो, यह बैठने की जगह नहीं है। सामने बेंच पर जाकर बैठो.....''। वह नहीं सुना। अपना दोनों पैर पसार कर वही बैठ गया। वह कुछ ज्यादा ही थका हुआ लग रहा था। जोर–जोर से हाफ रहा था। चपरासी को आवाज देकर मैंने उसके लिए पानी मँगवाया। पानी पीने के बाद वह कुछ ठीक लगने लगा। मैं रजिस्टर पर उसका नाम ढूँढने लगा। थोडी देर बाद रजिस्टर बंद कर मैंने उससे कहा–'' तुम्हारा कागज तो इस कार्यालय में आया था लेकिन दस्तावेजों में कुछ कमी के कारण उसे सीपत ऑफिस लौटा दिया है.....''।

यह सुनते ही बूढ़े का चेहरा उदास हो गया। पसीने से उसका चेहरा गीला तो था ही उस पर मेरी बातों के असर ने उसके चेहरे को काला बना दिया –'' वापस भेज दे हावव..... .काबर बाबू साहब.....का कमी रहि गईस हावय मोर कागज म.....''

–'' उसमें खसरा नम्बर गलत लिखाये हैं.....''।

–'' हमन तो साहब सबो कागज ल ऑफिस म बाबू साहब करा जमा कर दे रहेन अउ बाबू साहब हमला कहय रहिस के सबो कागज ठीक हावय कोनो कमी नई हावय.....फेर का हो गईस..... .....'' वह हाफ रहा था। कुछ पल रूककर वह बोलने लगा–'' दो साल से ऊपर हो गये साहब मोर कागज ल जमा किये बर, और कतका समय लगही साहब''।

मैंने उस बूढ़े को समझाते हुए कहा –'' तुम सीपत ऑफिस चले जाओ वहाँ तुम्हें साहब सब समझा देंगे.....''।

दोनों बहुत देर तक मेरी तरफ देखते रहे। मुझे उन दोनों का इस तरह मेरी तरफ देखना कोई नई बात नहीं लगी। विगत आठ–दस सालों से मैं इस सीट पर काम कर रहा हूँ। न जाने कितने गरीब, असहाय, बीमार किसानों की गिड़गिड़ाहटे, विनती और कातर स्वर सुनता रहा हूँ लेकिन मैं सरकारी मुलाजिम हूँ। सरकारी नियम के अनुसार ही मैं काम कर रहा हूँ इसलिए मुझ पर उस बूढ़े की कातर दृष्टि का कोई असर नही हुआ। जब वह बहुत देर तक उस जगह से नहीं उठा तब मुझे उसकी तरफ

देखकर बोलना पड़ा–'' यहीं बैठे रहने से कोई काम नहीं होगा। तुम सीपत ऑफिस चले जाओ और अपना कागज ठीक करवाकर जमा करो.....''।

अभी तक वह औरत चुप खड़ी थी एकाएक मेरी तरफ देखकर विनती के स्वर में बोलने लगी–'' बाबू साहब हमर खेत म पानी लेबर कोनो साधन नई हावय,। तीर म कोनो नदिया, तरिया घलो नई हावय। खेतो ह ऊँच डहर हावय। बरसात के पानी ह खेत म नई रूकय। तोर सोज विनती हवय साहब तै ह जल्दी से हमर कागज ल ठीक करके खेत म पम्प ल चालू करवा दे। तै ह अतका एहसान कर दे, हमन ह जिनगी भर सुरता रखबो.....''।

औरत की बाते सुनकर मैं कुछ उखड़ने लगा था। तभी वह अपनी साड़ी के पल्लू के अंदर जिस पोटलीनुमा चीज को छुपा रखी थी उसे निकालकर मेरे टेबल पर रख दी। वह गमछे में बँधा पोटलीनुमा सामान था। उस औरत की इस हरकत से मैं हैरान रह गया।

–'' यह क्या कर रहे हो.....इसमें क्या है.....?

औरत बोली–'' बाबू साहब ये तोर बर लाये रहेव एला तै लेबर मना झन करबे.....''।

–'' मगर इसमें है क्या चीज.....? मैंने आश्चर्य से पूछा।

–'' ए म थोरकिन भुँजे तिवरा हावय.....''। मोर खेत के, तै ह अपन लईका मन ल खेला देबे.....हमर करा तोला देबर अउ का रहि साहब कुछु नई हावय दो हजार रुपये पहले से ही सीपत वाले साहब को दे डरे है अब और नगद पैसे नहीं हावें हमर पास न ही पैसे.....''। मैंने उसे लेने से साफ मना कर दिया–'' नहीं मुझे यह सब सामान नहीं चाहिए.....''। यह सुनकर वह बूढ़ा जमीन पर हाथ के बल उठ खड़ा होने लगा। फिर मेरी तरफ दोनों हाथ जोड़कर कातर स्वर में कहने लगा–'' ए ह तोला बने नई लगिस..... मैं ह तोला पाछू छोटे भाई के खेत ले हरियर मटर खेलाहूँ। अभी ए ला रख ले हमन ल बने लगही.....''।

''मैंने कहा न यह दफ्तर है। यहाँ यह सब नहीं चलता। इस पोटली को उठाओ और बाहर जाओ.....''। मैंने गुस्से से कहा।

बूढ़ा थोड़ा–सा झेंप गया। उसने पोटली पत्नी के हाथों में देते हुए दरवाजे की तरफ चलने लगा। शायद वे दोनों यह सोचकर गाँव से निकले थे कि शहर जाकर दफ्तर के बाबू साहब को प्यार से देंगे तो बाबू साहब बहुत खुश होंगे और उसके कागज जल्दी से तैयार कर देंगे और जल्दी से उसके खेत में मोटर पम्प का पानी मिलने लगेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं चाहता तो भी उनके लिए कुछ नहीं कर पाता। यह दफ्तर है और दफ्तर किसी की विनती या करूणा से नहीं चलता, नियम और साहब लोगों के निर्देशों से चलता है। उसके कागज में जो कमी थी उसे मैं सुधार नहीं सकता था।

न जाने क्या सोचकर मैंने मोबाइल पर सीपत वाले साहब से उस बूढ़े के प्रकरण के बारे में बात की और कहा कि उसके फाइल को जल्दी सुधार कर इस कार्यालय को भेज देंवें। तभी उसने मुझसे पूछा कि इस केस के लिए उस बूढ़े ने मुझे कितने पैसे दिए हैं। मैंने गुस्से से फोन काट दिया। एकबार सोचा कि उस अफसर से यह कहूँ कि पैसा ही सब कुछ नहीं होता इंसानियत भी कोई चीज होती है लेकिन यह सोचकर चुप रहा कि मुझ जैसा संवेदनशील इंसान का भ्रष्ट अफसर से क्या कहना, चुप रहना ही बेहतर है।

मैं अपने काम में व्यस्त हो गया। थोड़ी देर बाद दफ्तर के बाहर एकाएक चीखने चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी। मैं दरवाजे की तरफ लपका। पास गया तो देखा वह कोई और नहीं वही बूढ़ा आदमी था, बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा है। धूप के कारण उसका सिर चकरा गया होगा। उसकी औरत वहीं पास बैठी जोर–जोर से चीख रही थी। दफ्तर का एक चपरासी उसके चेहरे पर पानी के छीटें मार रहा था। यह सोच कर की थोडी ही देर में उसे होश आ जाएगा।

तभी अचानक फोन की घंटी बजी। फोन सीपत वाले साहब का था उसने कहा–'' आप फोन क्यों काट दिए ? क्या आप मेरे बातों से नाराज हो गए ? अरे मैं तो यूँ ही कह रहा था। मैं उस प्रकरण को जल्दी भेज दूँगा.....''। मेरे मुँह से शब्द नहीं निकले। मैंने फोन काट दिया।

बहुत देर तक जब बूढ़े को होश नही आया, तब सभी सकते में आ गए। एकाएक वह औरत बूढ़े के सीने पर दहाड़ मारकर रोने लगी। यह दृश्य देखकर मैं स्तब्ध रह गया। मुझे विश्वास नही हो रहा था कि वह बूढ़ा मर चुका है। पोटली में बँधा सारा भूँजा तिवरा उस बूढ़े के चारों तरफ बिखरा पड़ा था।

एक और भारतीय किसान की मौत हो गई है। यह आत्महत्या तो नहीं है। इस बूढ़े किसान की मौत को हम सामान्यतः मौत भी नहीं कह सकते हैं और न ही हत्या, यही सोचकर मैं परेशान होने लगा।

तभी एक युवा प्रेस फोटोग्राफर भीड़ में से उस बूढ़े की लाश के सामने खड़े होकर अपने अखबार के लिए बढ़िया–सा एंगल ढूँढ़ने लगा। मैं उस दृश्य से बाहर निकल आया।

❐❐❐

*गायत्री विहार, विनोबा नगर,
बिलासपुर–495004, छ.ग.

हरी चूड़ियाँ

रंगनाथ द्विवेदी*

अरुणा ने अपने पति कैप्टन अर्जुन के मोबाइल पर जैसे ही काल किया तो उधर से कैप्टन अर्जुन ने दो–तीन घंटी बजने के तुरंत बाद ही काल रिसीव की और हमेशा की तरह अपने खूबसूरत और दिलकश अंदाज में चहकते हुए बोला– हाय जानू ! और बताओं कैसी हो ? मम्मी, पापा, और अपना छोटा कैप्टन कैसा है। सब ठीक तो है ना। तो अरुणा बोली जी ! बिल्कुल सभी लोग ठीक हैं। अब तो आपका छोटा कैप्टन स्कूल भी जाने लगा है। अरे वाह ! ये तो बड़ी खुशी की बात है, अनु, दरअसल अरुणा को प्यार से कैप्टन अर्जुन अनु कह कर ही बुलाते थे। फिर इन सारी बातों से खाली होने के बाद कैप्टन अर्जुन ने अरुणा से पूछा और बताओ कि, आखिर आज मेरी जानू ने मुझे किसलिए याद किया है। तो अनु इतना सुनकर कैप्टन अर्जुन से झूठ–मूठ तुनकने और नाराज होने का ड्रामा करते हुए बोली कि क्या मैं आपको बिना किसी कारण के फोन नहीं कर सकती या याद नहीं कर सकती। ठीक है जब आपको मेरा फोन करना इतना ही अच्छा नहीं लग रहा है तो मैं अब आज के बाद से कभी भी आपको बिना किसी कारण के ना तो फोन करूँगी और ना ही आपसे बात करूँगी। कैप्टन अर्जुन ने तुरंत ही कहा अरे ! अरे ! फोन मत काटना भाई मैं तो बस यूँ ही तुमसे मजाक कर रहा था। मुझे क्या पता था कि मेरी जानू मेरी इतनी सी बात पर मुझसे नाराज हो जाएगी। चलो ! अच्छा भाई लो मैं दोनों हाथों से अपने कान पकड़ता हूँ और तुमसे सॉरी बोलता हूँ। अब तो गुस्सा थूक दो। अनु प्लीज ! कैप्टन अर्जुन ने यह बात इस स्टाइल से कही कि अनु खिलखिला के हँस पड़ी और बोली अरे ! अरे ! कैप्टन साहब आप तो सीरियस हो गए भला मैं भी कभी आप से नाराज हो सकती हूँ। कैप्टन अर्जुन ने कहा, सच ! अनु तुम्हारी यही वह मुस्कुराहट और खिलखिलाहट है जिसे मैं कश्मीर की इन बर्फीली वादियों में भी नहीं भूल पाता। अक्सर ! मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मेरी जानू मेरे आस–पास ही कहीं खिलखिला और मुस्कुरा रही हो। चलिए ! अच्छा छोड़िए मेरे कैप्टन साहब ! अगर आप अपने इस रोमांटिक शेरो–शायरी से खाली हो गए हों तो मेरी वे बात सुनिए जिसके लिए मैंने सच में आपको फोन किया था। बताओ अनु। दरअसल मैंने आपसे यह पूछने के लिए फोन किया था कि क्या आप इस मर्तबा करवा चौथ पे छुट्टी लेकर घर आ रहे हैं कि नहीं। फिर उधर से जैसे अनु को कैप्टन अर्जुन के गहरी सांस लेने की आवाज आई हो, वाकई कैप्टन अर्जुन ने गहरी सांस ली थी और वे अनु से बोले, तुम तो जानती हो अनु की इस समय सरहद पर हमारे दुश्मन मूल्क ने घुसपैठ बढ़ा दी है इसलिए मुझे छुट्टी नहीं मिल सकती। सच तो यह है यह है अनु की ना जाने कब घुसपैठ करते हुए आतंकवादियों से हमारी सैनिक टुकड़ी की मुठभेड़ हो जाए। उम्मीद है तुम मेरी यह मजबूरी समझोगी। लेकिन हाँ ! अनु तुम मुझसे एक वादा करो कि करवा चौथ के दिन तुम वही मेरी महबूब हरी चूड़ियाँ पहनोगी जिसे मैं अक्सर अपने हाथों से

तुम्हारी कलाइयों में पहनाता था। जब छत पर चाँद निकले तो उस समय मुझे वीडियो कॉलिंग करना मैं तुम्हें उसी पहले करवा चौथ की तरह देखना चाहता हूँ। चाँद के सामने व्रत तोड़ते हुए ताकि तुम्हें मैं उस रात अपनी बाहों में महसूस कर सकूँ। अनु ने अपने रुधे हुए गले से कहा, ठीक है मेरे कैप्टन ! लेकिन आपको भी मुझसे एक वादा करना होगा कि, जब आप इस मर्तबा छुट्टियों में घर आएंगे तो वीडियो कॉलिंग से मेरे सजे–सवरे हुए मुँह को देखने की एवज में आपको मेरी मुँह दिखाई में कुछ ना कुछ देना पड़ेगा। कैप्टन ने हँसते हुए कहा, ठीक है मेरी जानू ! मैं तुम्हें निश्चित ही कोई ना कोई तोहफा तुम्हारी मुँह दिखाई के बदले में दूँगा। तुमने तो सिर्फ मुँह दिखाई माँगी है। अरे ! अनु अगर तुम इसके बदले में मेरी जान भी माँग लो तो मैं उफ भी ना करूँ। नहीं इस तरह की अशुभ बातें अपने मुँह से नहीं निकालते। आपको तो भगवान करें मेरी भी उम्र लग जाए फिर इसके बाद अनु ने फोन काट दिया। इसके दस दिन बाद करवा चौथ को अनु ने खुद को खूब सजाया–सँवारा और बड़े ही प्यार से अपनी कलाई में वे एक–एक कर हरी चूड़ियाँ पहनती रही उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वे सारी हरी चूड़ियाँ उसकी कलाई में वे नहीं पहन रही थी बल्कि उसे उसके पति कैप्टन अर्जुन पहना रहे हों। सच तो यह है कि इस बार अनु पिछले करवा चौथ से भी कहीं ज्यादा अच्छे तरीके से सजी और सँवरी थी। सजने–सवरने के बाद अनु शर्माती–सकुचाती हुई छत पर पहुँची तो उसे ऐसा लगा कि जैसे इस बार करवा चौथ का चाँद पिछले करवा चौथ के चाँद की अपेक्षा ज्यादा चमकदार निकला हो। उसने अपने शर्म से थरथराते और सकुचाते हुए हाथ से मोबाइल निकालकर कैप्टन अर्जुन को वीडियो कॉलिंग की। वीडियो कॉलिंग के स्विच को ऑन करते ही उसने अपनी आँखों को किसी नई–नवेली दुल्हन की तरह से बंद कर लिया तो कुछ देर बाद उस तरफ से एक कराहती सी आवाज आई ये आवाज तो उनकी है ! जिनकी आवाज को अनु लाखों की भीड़ में बिना अपनी आँख खोले भी पहचान सकती है। अतः इस कराहती आवाज को सुनकर झट से उसने वीडियो काल की तरफ देखा तो खून से लतपथ कैप्टन अर्जुन को देखकर वह चीख उठी। अरे ! आपको क्या हुआ ? हे भगवान ! आपको तो ढ़ेर सारी गोलियाँ लगी है। सच ! अनु

मैं अब बचूँगा नहीं। लेकिन अनु, अपने खून से सने होठों को साफ कर हल्के से मुस्कुराते हुए कैप्टन अर्जुन ने कहा कि आज तुम बहुत खुबसूरत लग रही हो अनु। प्लीज ! जानू तुमरोना मत। कैप्टन अर्जुन की आँखे लगातार खुल और बंद हो रही थी और खून शरीर से लगातार बहता ही जा रहा था, रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। सच तो ये था की दुश्मन की इतनी गोलियाँ शरीर में लग जाने पर तो अब तलक कैप्टन अर्जुन के प्राण पखेरू उड़ जाने चाहिए थे। लेकिन ना जाने वे कौन सी शक्ति थी जिसकी वजह से अभी तक उसकी साँसे चल रही थी। वे शक्ति शायद अनु को आखिरी मर्तबा हरी चूड़ियाँ पहने हुए उसकी कलाई को देखने की थी। अनु को जी भर देखने के बाद एक घायल मुस्कुराहट के साथ कैप्टन अर्जुन ने कहा, अनु ! मुझे अपने मरने और शहीद होने का कोई गम नहीं बल्कि ये खुशी है कि मैंने अपनी मौत से ठीक पहले करवा चौथ के दिन तुम्हारी हरी चूड़ियों से भरी हुई उस कलाई को देखने की थी। अनु को जी भर देखने के बाद एक घायल मुस्कुराहट के साथ कैप्टन अर्जुन ने कहा, अनु ! मुझे अपने मरने और शहीद होने का कोई गम नहीं बल्कि ये खुशी है कि मैं अपनी मौत से ठीक पहले करवा चौथ के दिन तुम्हारी हरी चूड़ियों से भरी हुई उस कलाई को देख रहा हूँ जो कि हमेशा से मेरी महबूब ख्वाहिश रही है। इतना कहते ही कैप्टन अर्जुन की साँसों ने उसका साथ छोड़ दिया और अनु हलो–हलो कहती रही। उधर से कोई जवाब नहीं मिला। फिर वह बहुत जोर से चिखी और वही छत पर बेहोश होकर गिर पड़ी और उसके कलाई में पहनी हुई सारी हरी चूड़ियाँ खनखनाकर वही छत पर टूटकर इधर–उधर बिखर गई शायद अनु की कलाई से हमेशा के लिए।

❐❐❐

*जज कॉलोनी, मियांपुर, जौनपुर–222002, उ.प्र.

लघु कथा

गरीबी

सावित्री शर्मा "सवि"

गरीबी अपने आप में ही श्राप है। लेकिन दृढ़ निश्चय व आत्म विश्वास पत्थरों से भी पानी निकाल देता है। अनहोनी को होनी में परिवर्तित कर देता है।

मजदूर सेवा लाल की तीन बेटियाँ मेहनती बहुत बुद्धिवाली। दिन रात पसीना बहाते देखती थीं। जानती थी जीवन में रोटी की कीमत और पेट की आग, वो आग जब बरसात पूरा दिन टूट कर बरसे तब ये आग और भड़क जाती है, नहीं मिलता पिता को काम और मजदूरी के पैसे, उस बरसात से बुझ जाता है घर का चूल्हा। इन परिस्थियों ने बेटियों के अंदर भी आग पैदा कर दी है, संघर्षों से लड़ने की। वे अपने पिता की पीठ पर और बोझ बनना नहीं चाहतीं बल्कि पिता के कंधों का सहारा बनना चाहती हैं। इतना आसान नहीं था गीले पंखों से उड़ना, जबकि बारिश भी तेज हो। पर जानती थी, मन और मन की ताकत ही है जो किसी तरह के प्रचंड का सामना कर सकती है।

गाँव में सरकार के अनुदान से दसवीं तक का स्कूल खुला था, बालिकाओं के लिए। कुछ पुस्तक आदि तो स्कूल से मिल जाती लेकिन महंगी किताबों का प्रबंध स्कूल की तरफ से नहीं हो पा रहा था। समस्या थी बिना पुस्तक पढ़ाई कैसे हो। गाँव सूखे की चपेट में था। पानी बहुत दूर से लाना पड़ता। गाँव में कुछ समृद्ध लोग भी थे। वो लोग पैसे देकर पानी मँगवाया करते थे। सेवा लाल की बेटियों ने पुस्तकों के प्रबंध के लिए पानी भर कर पहुँचाने का कार्य किया। ये धन उनकी पुस्तकों के लिए पर्याप्त हो जाता था। उन्हें अपने पिता से पैसे लेने की जरूरत नहीं पड़ती थी। तीनों बेटियाँ पिता की मजबूरी समझती थी। उनसे पैसे माँग शर्मिंदा नहीं करना चाहती थीं।

लगन सच्ची हो, मन से मेहनत की जाए तो किस्मत भी आशीर्वाद देती है। ठान लिया था इन तीनों बेटियों ने हाथ की लकीरों में लिखवा लेंगी अपनी नई किस्मत। कठिन परिश्रम और लगन ने उनके भाग्य को बदल दिया। गृह कार्य के साथ गाँव में जो भी काम मिला करती, हारना इन तीनों ने सीखा ही नहीं था, परेशनियाँ इनकी परीक्षा लेते नहीं थकती थीं और ये सामना कर आगे बढ़ विजयी रहतीं, होतीं भी क्यूँ ना बेटियाँ थी आखिर, धरती के समकक्ष, और वो दिन भी आया जब सेवा लाल के बदन से निकले पसीने को बेटियों की कामयाबी के दुशाले ने पोंछा। गर्व से मुस्करा उठा सेवा लाल। आज तीनों बहनें वापिस इसी गाँव आई हैं। सबसे बड़ी पुलिस में, एक इंजीनियर, सबसे छोटी महाविद्यालय में प्रोफेसर बन कर पैदल फिर उन्हीं रास्तों पर चल रही हैं जिन रास्तों की खुशबू में उनका बचपन गुजरा और इन्हीं पथरीले रास्तों ने उनकी किस्मत चमकाई थी। रेत से छान मेहनत की उँगलियों से पानी भर अपना भविष्य स्वर्ण अक्षरों में लिख मुकाम हासिल किया। तीनों एक बार एक–दूसरे को देख फिर बचपन की तरह जोर से खिलखिला हँस पड़ी।

एक निश्चय और इन तीनों के मन में था। इस गाँव की काया पलटने का और अपने माता–पिता के पाँव को सुख के मखमल पर चलाना।

❐❐❐

*देहरादून, उत्तराखण्ड

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और झारखण्ड

डॉ.ममता बनर्जी 'मंजरी'*

कभी स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस झारखण्ड के टाटा स्टील यूनियन के प्रेसिडेंट के पद पर थे। बाद में उनकी सिंह गर्जना राँची की पहाड़ियों के सीने में सीधे आ टकराई थी। समय था सन् 1940 में रामगढ़ में 53वें अधिवेशन का। यह वही समय था जब नेताजी अपने ओजपूर्ण भाषण से रामगढ़ की जनता के हृदय में ओज, उमंग, उत्साह और शौर्य का संचार किए थे।

'दिल्ली चलो'–का नारा लगाते हुए मार्च की शुरुआत उन्होंने यहीं से की थी और उनके साथ कदम मिलाकर चल पड़े थे उनके परम मित्र श्रीमान् फणीन्द्रनाथ आयकत, डॉ. एफ. एन. चटर्जी और डॉ. एस. मुखर्जी, चेला स्वरूप मुरली मनोहर बोस, यदुगोपाल मुखर्जी सहित हजारों झारखण्ड (तत्कालीन बिहार) की जनता।

सबके आँखों में एक ही सपना था–भारत की आजादी।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान नेताजी कई बार झारखण्ड आए। उन दिनों ब्रॉड गेज लाइन नहीं होने के कारण उनकी ट्रेन चक्रधरपुर में ही रुकती थी। नेताजी वहीं उतरते और अपने राँची के मित्र डॉ. पी.एन. चटर्जी की फिएट कार में चढ़कर वन्य संस्कृति की रुपहली तस्वीर देखते–देखते सीधे राँची के लालपुर स्थित फणीन्द्रनाथ आयकत जी के बंगले में पधारते। फणीन्द्रनाथ आयकत जी सपरिवार नेताजी का गर्मजोशी के साथ स्वागत करते और नेताजी के यात्रा की थकान पल भर में उड़नछू हो जाती। घर की महिलाएँ नेताजी के सामने पारंपरिक भोजन की थालियाँ परोसती। उसके बाद शुरू होती रामगढ़ अधिवेशन की रूपरेखा तैयार करने का सिलसिला। इस महान वार्ता में नेताजी के साथ शामिल होते उनके परम मित्र फणीन्द्रनाथ आयकत जी, डॉ. एफ. एन. चटर्जी, डॉ. एस. मुखर्जी और कई आत्मीय जन।

रामगढ़ अधिवेशन के लिए प्रचुर मात्रा में धनराशि की जरूरत थी। कहाँ से जुटेगी धनराशि ? एक बड़ा प्रश्न चिन्ह सामने खड़ा था। पेशे से कांट्रेक्टर फणीन्द्रनाथ जी आगे आए और इस महत काम में नेताजी का साथ देने का संकल्प लिया। हालाँकि अंग्रेजों ने उन्हें पश्चिम बंगाल से राँची बुलाकर 3.5 एकड़ परिसर वाला बड़ा बंगला में उनके ठहरने की व्यवस्था कर रायबहादुर की पदवी से नवाजा था लेकिन उन्होंने देश की आजादी के लिए नेताजी का साथ देना अपना पहला कर्त्तव्य समझा और चालीस हजार की धनराशि दान में दे दी।

रामगढ़ अधिवेशन की तैयारियाँ होने लगी। इसी बीच राँची के कचहरी रोड स्थित स्वतन्त्रता सेनानी अब्दुल बारी पार्क में नेताजी का नागरिक अभिनंदन किया गया और फिरायालाल

के निकट लोहरदगा लॉज में उन्होंने कई साहित्यकारों और शिक्षाविदों के साथ बैठक की। राँची की जनता नेताजी से मिलकर मानो निहाल हुई। जैसे–जैसे अधिवेशन का समय करीब आ रहा था वैसे–वैसे बैठकों का सिलसिला बढ़ता गया। नेताजी अपने तथाकथित मित्रों के साथ हजारीबाग गए और तीन दिनों तक वहाँ स्थित बी.एन. घोष लॉज में ठहरकर रामगढ़ और खूंटी के देशभक्तों से मिले। बैठके की।

रामगढ़ का अधिवेशन सफल रहा और नेताजी अपने घर वापस लौटे। इसके बाद नेताजी पुनः झारखण्ड पधारे लेकिन इस बार उनका ठिकाना झरिया और धनबाद रहा। यहाँ रहकर उन्होंने धनबाद की जनता के हृदय में आजादी की लौ जलाई। कभी कॉस्मो पॉलीटन होटल में रहकर तो कभी धनबाद के स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर प्रसाद जी के घर पर स्वाधीनता आंदोलन की रणनीति बनाई। कॉस्मो पॉलीटन होटल के संचालक भी इनके खास करीबी रहे।

नेताजी की इच्छा थी कि दोनों उनके साथ जर्मनी जाए मगर धनबाद में आंदोलन की गति तेज करने के लिए वे धनबाद में ही रुकना वाजिब समझा और नेताजी 28 जनवरी 1941 में एक बैलगाड़ी पर सवार होकर गोमो के लिए रवाना हुए। गोमो के पुराना बाजार में स्थित अब्दुल्ला के घर में रुककर इन्होंने स्वतन्त्रता आंदोलन सम्बंधित कार्यक्रम की तैयार रूपरेखा पर विचार–विमर्श किया और एकदिन काबुलीवाला का पोशाक धारण कर गोमो स्टेशन में वे पेशावर एक्सप्रेस (आज के कालका एक्सप्रेस) में सवार हुए। उसके बाद कहां गए इसका पता आज तक नहीं चल सका। कहा जाता है कि कालका मेल से वो पहले दिल्ली उतरे. वहाँ से पेशावर होते हुए काबुल पहुंचे। वहाँ से बर्लिन और कुछ समय बाद पनडुब्बी का सफर तय कर जापान पहुंचे।

जहाँ भी पहुँचे होंगे नेता जी लेकिन भारतीय जनता पलक–पाँवड़े बिछाकर इनका इंतजार करती रही। इंतजार करते रहे झारखण्ड में रहने वाले इनके तथाकथित मित्र मण्डली और लाखों चहेते।

आज भी झारखण्ड की पहाड़ियों और जंगलों में इनकी सिंह–गर्जना की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है– 'दिल्ली चलो।'

भारत के वीर सपूत को कोटिश नमन

❑❑❑

*गिरिडीह (झारखण्ड)

इंसान से बेहतर जानवर

विवेक कुमार पाठक*

''रॉकी, जॉकी'' रामदीन घर पहुँचते ही बड़ी जोर से चिल्लाया। तभी रामदीन की पत्नी–''मर गए दोनों।'' रामदीन (हँसते हुए)–''ऐसा क्रूर मजाक मत किया करो, भागवान !'' तभी रॉकी और जॉकी आकर रामदीन को चूमने लगे। रामदीन भी उन दोनों को सहलाने लगा। तभी रामदीन की पत्नी (गुस्से में)–''ये बंदर और कुत्ते जब से मेरे घर में आये हैं। तबसे अशांति है।'' रामदीन–''क्या अशांति है ? मुझे भी तो बताओ।'' ''अशांति ही अशांति है। आप इन जानवरों को जितना प्यार करते हैं। उतना अपने इकलौते बेटे रामू को नहीं। कभी ऑफिस से वापस आने के बाद रामू को पूछा। हमेशा रॉकी और जॉकी का रट लगाए रहते हैं।''– रामदीन की पत्नी मुँह बनाते हुए कही। रामदीन समझाते हुए–''प्राण प्रिये ! रामू के साथ – साथ ये भी अपने ही बच्चे हैं। इनका कौन है इस दुनिया में। हम सब के सिवाय। इन्हीं के भरोसे तो तुम्हें और रामू को छोड़ जाते हैं।'' शांति झल्लाते हुए–''खबरदार ! जो इन आवारों की तुलना रामू से की।'' रामदीन पहली बार रॉकी कुत्ता और जॉकी बंदर को ठंड से ठिठुरते हुए सड़क के किनारे देखा था। कम्पायमान तिमिर में स्ट्रीट लाइट के खंभे के नीचे एक–दूसरे से लिपटे रॉकी और जॉकी को देखकर रामदीन के पैर थम से गए थे। बंदर और कुत्ते से इतनी हमदर्दी रामदीन को क्यूँ हो गयी थी, वह आज तक समझ नहीं पाया। वह उन दोनों को अपनी ऊनी शॉल में लपेटकर घर लाया था। जब दोनों को घर लेकर आया था, तब शांति भी बहुत खुश हुई थी। अलाव के पास दोनों को अपने हाथों से दूध पिलाया था। उस समय शांति के पास भी कोई औलाद नहीं थी। कुछ दिन बाद शांति को एक पुत्र हुआ। नाम रखा गया रामू। शांति का समय रामू के साथ बीतने लगा। धीरे–धीरे दोनों से मोह कम होने लगा। जैसे ही रॉकी और जॉकी रामू के पास दिखते, शांति डंडा लेकर धमक पड़ती। कभी रॉकी और जॉकी दुःखी भी होते, लेकिन रामदीन का प्यार व स्नेह हर जख्म पर मरहम लगा देता था। रॉकी और जॉकी बड़े ही अद्‌भुत थे। उनके कारनामे और कौशल देखकर हर कोई हैरान रह जाता। वे हमेशा रामू के साथ–साथ घर की भी देखभाल करते थे। कोई सामान बाहर पड़ा हो तो उसे घर में लाकर रख देते थे। एकबार तो घर में घुसे चोरों को भागने पर मजबूर कर दिया था। अपने प्राणों पर खेलकर परिवार की रक्षा की थी। रामू जैसे–जैसे बड़ा होने लगा, वैसे–वैसे रामदीन को उसके पठन–पाठन की चिंता होने लगी। शहर के मशहूर विद्यालय में दाखिला दिला दिया। अब उसे रॉकी और जॉकी को प्रशिक्षण दिलाना था लेकिन शहर में कोई ऐसा प्रशिक्षण संस्थान नहीं था, जो उन दोनों को प्रशिक्षित कर सके। रामदीन स्वयं उन दोनों को प्रशिक्षित करना शुरू किया। रामदीन भी सेना से सेवानिवृत्त थे।

प्रशिक्षण के बाद तो रॉकी और जॉकी की प्रतिभा में चार चाँद लग गए। समय बीतता गया। रामू बारहवीं कक्षा पास हो गया। मुश्किल से द्वितीय श्रेणी में पास हुआ। रामदीन उसे विज्ञान से स्नातक में दाखिला दिलाना चाहता था लेकिन शांति और रामू की जिद की वजह से इंजीनियरिंग की तैयारी के लिए कोटा, राजस्थान भेजना पड़ा। वहाँ जाकर रामू तैयारी करने लगा। यहाँ रामदीन डबल ड्यूटी करने लगा। औकात से ज्यादा पैसे खर्च हो रहे थे।

हर पिता की यहीं लालसा होती है कि उसका पुत्र पढ़–लिख कर नाम करे। हर पिता इसी लालसा में जीता है। रामदीन जो भी कर सकता था, वह अपने पुत्र के लिए कर रहा था। रामू तैयारी के बाद विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभाग किया लेकिन कहीं भी सफल स्थान नहीं बना पाया। फिर भी रामदीन ने रामू को कुछ नहीं कहा। दुःख तो हुआ। होना भी स्वभाविक था। मेहनत की कमाई बर्बाद हुई और बेटे का एक साल। रामदीन ने रामू को समझाते हुए कहा–''बेटा चिंता मत करो ! स्नातक में दाखिला ले लो। बहुत सारे अवसर मिलेंगे।'' तभी शांति बात काटते हुए–''कभी नहीं। मेरा बेटा तो सिर्फ अपने मामा की तरह इंजीनियरिंग करेगा। चाहे जैसे।'' रामू अपनी माँ से लिपट गया। रामदीन भी बिना कुछ बोले ड्यूटी पर चला गया। रामू स्थानीय कोचिंग सेंटर में पढ़ने लगा। इस वर्ष इंजीनियरिंग की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभाग किया। मुश्किल से सिविल इंजीनियरिंग के लिए निजी विद्यालय मिला। पाँच लाख फीस सुनकर रामदीन के होश उड़ गए। रामदीन इतने रुपये जुटा पाने में असमर्थता व्यक्त की लेकिन शांति गुस्से से आग बबूला हो गयी। दो टूक कह दी–''बेटा तो इंजीनियर ही बनेगा।'' रामदीन ने कहा– ''कैसे ? कहाँ से लाओगी इतनी रकम।'' शांति–''मैं नहीं जानती। कुछ भी करो। लोन लो, चाहे घर बेचो।'' रामदीन–''घर बेच दोगी तो कहाँ रहोगी ?'' शांति–''सड़क पर रह लेंगे, लेकिन बेटा इंजीनियरिंग करेगा।'' रामदीन गुस्से में बाहर चला गया। बरामदे में बैठे रॉकी और

जॉकी को सहलाने लगे। तभी शांति आई। रॉकी और जॉकी को देखकर गुस्सा हो गई। नाक सिकोड़ते हुए–''यहीं तो हैं आपकी औलाद। इन्हीं की वजह से माँ और बेटे पराये हो गए हैं आपके लिए। मन करता है दोनों को जहर दे दूँ।'' रामदीन गुस्से से–''जहर मत दे पापिन। तेरी जिद पूरी करूँगा। चाहे जैसे।'' रामदीन ड्यूटी पर चला गया। दिन भर सोच–विचार करता रहा। जीवन भर की पूँजी पर निगाह दौड़ाता रहा। सेना से सेवानिवृत्ति के बाद मिली राशि और कुछ छोटी–छोटी बचतों से मुश्किल से चार लाख हो रहे थे। बैंक से पहले से ही लोन ले रखा था। दिन भर उधेड़बुन में लगा रहा। शाम को थके–मांदे सिपाही की तरह घर पहुँच कर रामदीन ने शांति से कहा– ''देखो ! मैं ज्यादा–से–ज्यादा चार लाख की व्यवस्था कर सकता हूँ। एक लाख की व्यवस्था तुम अपने मायके से कर लो।'' शांति (प्रसन्न मुद्रा में)–''आप एक लाख मुझ पर छोड़ दीजिए। पिता जी से ले लेंगे।'' रामदीन रॉकी और जॉकी के साथ खेलने लगा। सुबह हुई। रोज की तरह रामदीन रॉकी और जॉकी के साथ घूमने चला गया। वापस आने के बाद स्नान–ध्यान कर ऑफिस के लिए तैयार होते हुए–''आज बात कर लेना। कल तक पैसे की व्यवस्था हो जानी चाहिए। परसों ही एडमिशन कराना है।'' शांति रसोई से ही चिल्लाई–''ठीक है । व्यवस्था हो जायेगी।'' रामदीन ऑफिस चला गया। शांति भी बरामदे में आकर बैठ गयी। रॉकी और जॉकी सामने ही खेल रहे थे। पिता जी को फोन करने के लिए जैसे ही उठी, वैसे ही पीछे से आवाज आई–''बहन जी ! ये बंदर और कुत्ते आप के हैं।'' शांति–''हाँ, मेरे ही हैं। क्यूँ ?'' व्यक्ति–''मैं तो ऐसे ही पूछ रहा था। क्या आप बेचेंगी ?'' बेचने का नाम सुनते ही मुँह से तपाक से निकला–''कितना देंगे ?'' व्यक्ति–''आप बताइये। आप का सौदा है।'' शांति– ''नहीं। आप बताइये।'' व्यक्ति–''पचास हजार'' पचास हजार सुनते ही शांति के होश उड़ गए। सोचने लगी कि इन आवारों की कीमत पचास हजार क्यों दे रहा है ? कुछ बात तो है। शांति ने कहा–''नहीं। पचास नहीं डेढ़ लाख।'' व्यक्ति–''नहीं मैडम जी। इतना नहीं दे पाऊंगा।'' शांति–''तो कितना देंगे ?'' व्यक्ति–''नब्बे हजार से एक पैसा ज्यादा नहीं। देना हो तो बताइये। नहीं तो मैं जाऊँ।'' शांति एक लाख की जिद करती रही लेकिन वह व्यक्ति टस से मस न हुआ। शांति की सौदेबाजी रॉकी और जॉकी बखूबी समझ रहे थे। दोनों भागने के लिए सोचने लगे लेकिन अगले ही क्षण सोचने लगे कि हम दोनों की वजह से ही परिवार में कलह है। शांति के अपमान के बावजूद मालिक के अगाध प्रेम और स्नेह का बंधन उन्हें जकड़ रखा था। आज समय था प्रेम और स्नेह का मोल चुकाने का। समय था परिवार की परेशानियाँ दूर करने का लेकिन रामदीन के विषय में सोच कर भी रॉकी और जॉकी का हृदय काँप उठता। अंत में, नब्बे हजार में सौदा तय हो गया। आदमी ने झटपट गले में पट्टा डाल लेकर चल दिया। रॉकी और जॉकी ने एकबार मुड़कर घर की ओर देखा। शांति की ओर देखा। शांति ने दोनों को देखकर हाथ हिलाया। वे दोनों तब तक पीछे मुड़कर देखते रहे, जब तक घर दिखा। शाम हो गई। रामदीन घर वापस आया। रॉकी और जॉकी नहीं दिखे। रामदीन बहुत हैरान। बड़ी जोर से चिल्लाया–''रॉकी, जॉकी'' रामदीन घर के आँगन में गया, छत पर गया लेकिन दोनों वहाँ भी नहीं थे। शांति को बड़ी जोर से पुकारा। पड़ोसी के घर से बोली–''आ रही हूँ। क्यूँ गला फाड़ रहे हैं ? ''शांति को देखते ही–''कहाँ हैं रॉकी और जॉकी'' शांति–''शांत हो जाइए ! बता रही हूँ।'' रामदीन–''जल्दी बताओ'' शांति–''नब्बे हजार में दोनों को बेच दिया।'' रामदीन–''अरे पापिन ! ये क्या किया ? तुमने तो अनर्थ कर दिया। जिसे कभी बेटे जैसा पाला था। उसे बेच दिया। बेचते समय तेरे हाथ नहीं काँपे। जानवर थे लेकिन तुझ जैसे इंसान से बेहतर थे। भूल गयी। प्राणों पर खेलकर हम सब के प्राण बचाये थे। हे भगवान ! ये क्या हो गया ! आज समझ गया। पैसा ही इंसान को हैवान बनाता है। इंसान से बेहतर जानवर होते हैं।'' शांति हाथ पकड़कर समझाने की कोशिश की लेकिन रामदीन हाथ झटक कर चला गया।

❐❐❐

*ग्राम–गोपालपुर, पो.–मीरगंज, जनपद–जौनपुर (उ.प्र.)।

हिन्दी गुणों की खान है, हर भाषा में महान है, भारत की यही पहचान है।

रूममेट

महेश कुमार केशरी*

कमबख्त कुछ भी तो नहीं बदला है। सारी चीजें ज्यों–की–त्यों अपनी जगह पर जमा हैं। लगता है जैसे कैलेण्डर को उठाकर एक आले से दूसरे आले पर रख दिया गया हो। रोशनी में क्या बदला है ? सबकुछ तो वैसा ही है। अलबत्ता बालों के बीच से कुछ सफेदी झाँकने लगी है लेकिन वो पहले की तरह ही खुबसूरत है। नख से शिख तक। गोरा रंग, लम्बी नाक, कत्थई आँखें ईश्वर ने जैसे उसे बहुत ही मेहनत से बनाया है। ''अरे तुम... कैसे हो ..? बहुत दिनों के बाद....।'' रमेश बस मुस्कुरा कर रह भर जाता है। उसके साथ एक चार–पाँच साल का बच्चा भी है। चेहरा कुछ–कुछ रौशनी से ही मिलता–जुलता है। ये शायद दूसरा बच्चा है क्योंकि जहाँ तक रमेश को उससे मिले कुछ बीस–बाईस साल तो हो ही गये होंगे।'' ये .. दूसरा .. वाला है। मेरा छोटा बेटा।'' उसने तस्दीक की।'' कितने साल का है ?'' इस साल पाँच साल का हो जायेगा।'' कुछ देर उनके बीच चुप्पी के कतरे तैरते रहते हैं। समय का हर एक सेकेंड जैसे किसी राक्षस की तरह रमेश को अपने जबड़े में खींच लेने को तैयार है लेकिन, ये भारी पल रौशनी को भी उसके सीने पर किसी पत्थर की मानिंद लगते हैं। शायद वे दोनों ही इस स्थिति के लिये तैयार नहीं हैं। कभी–कभी हमारे जीवन में हम ऐसे पलों को भी महसूस करते हैं जिसमें हम ईश्वर से ये कामना करते हैं कि ये पल हमारी जिंदगी से अगर निकाल दिये जायें तो हम ईश्वर के आजीवन ऋणी रहेंगे। तभी रौशनी ने बच्चे को सम्बोधित किया – 'अर्णव...। 'अर्णव अपनी माँ की तरह ही समझदार है। झुककर रमेश के पैरों को छूता है। रमेश बच्चे को पुचकारता है – 'अरे, नहीं बेटा ... ! ये सब नहीं। ''बड़ा प्यारा नाम है, अर्णव और उतने ही प्यारे हो तुम। खूब पढ़ो, खूब तरक्की करो तुम। भगवान से यही प्रार्थना है मेरी।' रमेश, रौशनी को आँखें कड़ी करके देखता है – 'तुम्हें तो पता ही है। मुझे शुरू से ही ये सब पसंद नहीं है।' रौशनी बस मुस्कुरा कर रह भर जाती है। रमेश खिलौने की दुकान से एक चॉकलेट खरीद कर अर्णव की ओर बढ़ा देता है। वो माँ की तरफ देख रहा है, मानों उसे माँ से इजाजत चाहिये। रौशनी मुस्कुराते हुए अपनी मौन स्वीकृति दे देती है। अर्णव चॉकलेट लेकर खाने लगता है।'' और क्या हो रहा है ? अभी दिल्ली में ही हो या...।'' जैसे रौशनी पूछना चाह रही हो। अभी भी सिविल सर्विसेज की तैयारी में ही लगे हो, रमेश...या....। सकुचाते हुए रमेश जबाब देता है– 'नहीं अब मैं मास्को में रहता हूँ। यहाँ पर जे. एन. यू. के रुसी भाषा विभाग के सालाना वार्षिकोत्सव में भाग लेने आया था। हर साल आता हूँ। यहाँ के प्रोफेसर, सब मुझे जानते हैं। वहाँ मैं रुसी भाषा और साहित्य पढ़ाता हूँ। कुछ साल प्राग में भी रहा। वहाँ बच्चों को रूसी भाषा और साहित्य पढ़ाता था।

'रमेश अपने शब्दों के सिरे को एकबार फिर से जोड़ता है – 'मैं अब भारतीय नहीं हूँ। मैंने रूसी नागरिकता ले ली है। अब रूस में ही मेरा घर है। ''ओह ! इसलिये तुम्हारे चेहरे का रंग इतना लाल हो गया है और तुम्हारे बाल भी तो ललिहाँ भूरे दिख रहे हैं लेकिन, तुम, तब भी खुबसूरत थे और आज भी हो। रमेश के दिल में एकबार आया कि वो कह दे कि तब तुम्हें कहाँ मेरी खुबसूरती दिखी थी ? लेकिन इन सब बातों का अब कोई मतलब भी नहीं है।

'शादी हो गई या ऐसे ही हो अब तक..?' वो शायद ऐसे ही पूछती है लेकिन उसके लिए इसका उत्तर देना आसान नहीं होता। 'हाँ, रूस में एक सर्लिन कुरसोवा नाम की लड़की है, मैनें उससे शादी कर ली है। वो भी रूसी भाषा और साहित्य मॉस्को यूनिवर्सिटी में पढ़ाती है। ''फिर वो आगे जोड़ता है – तुमसे कुछ दस – एक साल छोटी ही होगी। दरअसल वो मेरी छात्रा थी। मैं उसे रूसी भाषा पढ़ाता था। 'वो रौशनी को जलाने के लिए कहता है –' दरअसल वो मेरे रूसी भाषा के ज्ञान और व्याकरण की शुद्धि के कारण ही मुझसे प्रभावित हुई थी। मैंने कई देशों की यात्राएँ की, कुछ साल फ्राँस में भी रहा। कुछ साल जर्मनी और अमेरिका के विश्वविद्यालयों में भी प्रोफेसर रहा। वहाँ, मैं, रूसी भाषा और साहित्य पढ़ाता रहा। वो, अतीत के किसी पतझड़ वाले साल के पत्ते बटोरने लगता है जिसके पत्तों में उसके आँखों की नमी जज्ब है। रौशनी के शब्दों में तो उसने यही कहा था – 'प्रैक्टिकल बनो यार, प्रैक्टिकल ! इतना मन–मसोसने की जरूरत नहीं है, तुम्हें मुझसे भी अच्छी लड़की मिल जायेगी। अगर, घर वालों का दबाव ना होता तो मैं तुमसे ही शादी करती लेकिन, मम्मी –पापा का दबाव है। मैं अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर रही हूँ। तुम्हें तो पता है कि हम मिडिल क्लास लोग हैं। आज भले ही मेरा यू.पी.एस.सी. क्रैक हो गया है। लेकिन, अपने मम्मी– पापा को मैं ना नहीं बोल सकती। 'किसी ने सही कहा है वक्त इंसान और आदमी के हालात बदलते रहते हैं। रमेश के मन में उस वक्त ये ख्याल आया था कि वो कह दे कि ना तो सिर्फ तुम मुझे ही कह सकती हो। तुम्हारे लिये ये आसान भी है लेकिन तुम ये क्यों नहीं समझती कि हम एक–दूसरे से प्यार करते हैं ? लेकिन यहाँ प्यार कौन कर रहा था ? सही बात यह है कि पद और प्रतिष्ठा मिलते ही आदमी अपनी औकात भूल जाता है। उसको अपने खुद के जैसे साधारण लोग भी बेहद घटिया और दो कौड़ी के लगने लगते हैं, तो क्या रमेश भी रौशनी की नजरों में दो कौड़ी का आदमी था ? नहीं, उसे वो

पिछले सात–आठ सालों से जानता है। उसकी बातों से कभी उसे ऐसा नहीं लगा कि वो इस तरह से बदल जायेगी कि एक सिरे से उसके और अपने रिश्ते को खारिज कर देगी। कभी–कभी रमेश ये भी सोचता कि बेकार ही वो रौशनी से मिला। बेकार ही उसने रौशनी को रूम पार्टनर बनाया। अगर, रूम पार्टनर भी बनाया तो एक दूरी बनाकर रखता उससे लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सका। शुरुआती दिनों से ही वो रौशनी को दिल से चाहने लगा था। वो देवी की तरह उससे प्रेम करता था। रौशनी उसके लिये प्रेम की नहीं, श्रद्धा की वस्तु थी। अगर, वो रौशनी से नहीं मिलता या अगर वो उसकी रूम पार्टनर नहीं होती तो क्या वो उससे प्यार कर पाता ? नहीं ना। दिल्ली बहुत बड़ा शहर है। सैकड़ों–लाखों लड़कियाँ आती हैं। इस शहर में क्या उसे सब लड़कियों से प्रेम हो जाता ? नहीं ना। ये तो संयोग ही था कि उससे रौशनी की मुलाकात हो गई और वो उसकी रूम पार्टनर बन गई। क्या कोई और लड़की उसकी रूम पार्टनर होती तो क्या वो, उससे भी प्रेम कर बैठता ? नहीं उसे पता नहीं। वो, कुछ भी सोचना नहीं चाहता था या वो इस सवाल को टाल जाना चाह रहा था। उन दिनों उसकी हालत बिल्कुल पागलों की तरह हो चुकी थी। रौशनी से ब्रेकअप के बाद उसने सिविल सर्विसेज की तैयारी करना ही छोड़ दिया था। उसे रौशनी नाम और सिविल सेवा की तैयारी से चिढ़ सी हो गई थी। उसका आत्मविश्वास जाता रहा था। उसने मुखर्जी नगर के अपने उस पुराने फ्लैट को भी छोड़ दिया था। अब वो भाषा और साहित्य को पढ़ने लगा था। अब उसे लुशून, मैक्सिम गोर्की, विक्टर ह्यूगो को पढ़ना अच्छा लगता था। अब उसे चीनी, रूसी, जापानी भाषा का साहित्य पढ़ना–लिखना बहुत भाने लगा था। इस घटना के बाद उसने जे.एन.यू. के भाषा विभाग में दाखिला ले लिया था। वहीं उसने कई विदेशी भाषाओं का अध्ययन किया। उनके साहित्य के अध्ययन में जुट गया। बाद में उसे मास्को यूनिवर्सिटी में बतौर प्राध्यापक की नौकरी मिल गई थी। बहुत साल रूस में रहा। वहाँ अध्यापन का कार्य किया। प्राग से जब रूसी भाषा पढ़ाने का उसको सामने से मौका मिला तो वो टाल ना सका। वो, कभी–कभी अखबार के कतरनों के कोनों– अंतरों में ये खबर पढ़ता कि अमुक लड़के ने अमुक लड़की के चेहरे पर तेजाब से हमला कर दिया या किसी लड़के ने लड़की को चाकू मार दिया और पुलिस ने लड़के को गिरफ्तार कर लिया है। कैसे करते होंगे ऐसा लोग ? खासकर तब, जब वे एक– दूसरे से प्रेम करते हों। क्या उनकी भी ऐसी ही मनोदशा होती होगी ? उस समय उस प्रेमी को वैसा ही लगता होगा जैसा अभी रमेश को लग रहा है या कि जैसी उसकी मनोदशा अभी है। अखबार में कभी–कभी ये भी छपा होता कि लड़के ऐसा एकतरफा प्रेम में पड़कर करते हैं और कभी–कभी वो बलात्कार की घटनाओं के बारे में भी पढ़ता तो उसको लगता कि क्या ऐसी मनोदशा में ही लोग बलात्कार भी करतें हैं। क्या उसकी मनोदशा भी एक एसिड अटैकर की या एक बलात्कारी की हो गई है ? क्या वो इतना क्रूर हो गया है कि वो रोशनी के ऊपर तेजाब फेंक देगा या उसके साथ बलात्कार करेगा। क्या वो इतना कुँठित हो गया है ? लेकिन उसे वो इतनी आसानी से भूल भी तो नहीं पायेगा। प्रेम को पगने में समय लगता है। आठ साल, अट्ठारह साल, ..या फिर एक सदी.. या कई–कई सदी...लेकिन ये तो बिछोह था... । किसी जन्म में अनकिये या किये का प्रतिदान लेकिन इस किये–अनकिये का दुःख अकेले वो ही क्यों भोगे ? जबकि प्रेम, उसने अकेले थोड़े ही किया था। जो अकेले ही प्रतिदान पाता। रौशनी को भी तो प्रतिदान मिलना चाहिए। प्रेम के तो नायाब उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं। उसका प्रेम उदात्त प्रेम है। जैसे कृष्ण जी और राधा जी ने किया था। रोमियो और जूलियट ने, हीर और राँझा ने किया था। प्रेम में केवल लेना नहीं होता, देना भी होता है। धरती पर ऐसे कई उदाहरण हमें मिलते हैं जो सशरीर कभी मिले ही नहीं लेकिन, आज भी जमाना उनकी मिसाल देता है। वो जितना प्रेम के बारे में सोचता है उतना ही उलझता जाता है। लगता है दिमाग के तंतु फट जायेंगे लेकिन वो कभी–कभी लचीला भी हो जाता है। वो मठो–मंदिरों के बारे में सोचता है कि वो कहीं काशी, मथुरा, हिमालय या बनारस चला जाये। मोक्ष की नगरी जहाँ चितायें जलती हों, जहाँ जीवन का सार पता चले वो, अपनी चिता खुद जलती देखे, समझे इस निस्सार दुनिया को। जलते हुए वो लोगों के सच–झूठ को समझे। आखिर, ईश्वर से प्रेम भी तो प्रेम ही है। अलमस्त हो जाये। पीरों की तरह। भूल जाये घर–द्वारा, माँ–बाप की चिंता। जोगियों या साधुओं की तरह जाति–पाँति, ऊँच–नीच, धर्म–मजहब से ऊपर उठ जाये। लोग कहतें हैं ये जो हट्टे–कट्ठे योगी हैं, महात्मा हैं, ये लोग अकर्मण्य लोग हैं। काम से भागने वाले। फिर काम कौन करता है? महलों के धन्ना सेठ या राजनेता। सारी जिंदगी वे दूसरों के श्रम पर पलते हैं लेकिन जिनके श्रम पर पलते हैं उनको ही हेकड़ी दिखाते हैं। सुबह से शाम तक इनका कॉलर कभी गंदा नहीं होता लेकिन, ये मालपुये और छप्पन भोग खाते हैं। श्रम करके खाने वाला दिहाड़ी मजदूर अगले दिन क्या खायेगा ? इस बाबत वो सोचता है। ऐसे देखा जाये तो, ये जो अलमस्त जोगी हैं, इन्होंने जीवन के सार को जान लिया है तभी तो वे खानाबदोश हैं, बिल्कुल नदी की तरह! नदी भी तो प्रेम की तरह है, उन्मुत–उश्रृंखल। नयी लयात्मकता के साथ आगे रास्ता तलाशती हुई। ऊँचे–पहाड़, पठार–मैदानी–भूभाग सबको फलाँगती हुई ! कोई सीमा–रेखा नहीं। ना कोई देश, ना कोई धर्म, ना कोई जाति, ना इंसानों की तरह नफरती सोच, ना लोभ , ना लालच ! प्रेम भी नदी की तरह ही होता है। बहता जाता है, नदी की तरह स्वायत्त ! देश, नागरिकता, धर्म, मजहब से दूर। सरहदों से परे इसे बाँधा नहीं

जा सकता। सीमाओं में प्रेम संगीत की तरह होता है। आप किसी दूसरे देश में चले गये हैं। आपको कोई संगीत सुनाई पड़ता है और आपकी ऊँगलियों और पैरों में जुँबिश होने लगती है। अपनी कुँठा के कारण ही आदमी देश, समाज, जाति–पाँति, ऊँच–नीच, छोटे–बड़े, अमीर–गरीब में बँटा हुआ है। साधुओं–पीरों को कभी देखा है, चिंतित होते हुए ? उन्हें नहीं पता कल क्या होगा ? कल वो क्या खायेंगे ? कल उनका ठौर कहाँ होगा ? लेकिन, चिंता मुक्त हैं। आज यहाँ रूके, कल वहाँ। ना कोई स्थायित्व ना कोई झमेला। झमेला तो दुनियादारी से जुड़े लोगों का है। दिनभर तनाव में बिताते हैं, नमक रोटी की जुगाड़ में। जिंदगी भर दौड़ते रहो, लेकिन कहीं शाँति नहीं मिलती। दम भरने की भी फुरसत नहीं। जैसे जिंदगी की रेस में बेवजह दौड़ रहे हों। आखिर, क्या हासिल कर लेंगे ? वो जिंदगी के सबसे आखिरी छोर पर जब, वो ये बात सोचता है कि वो बनारस या काशी या मथुरा चला जाये और अपना दाह –संस्कार होते देखे तो उसके शरीर में कोई झुरझुरी पैदा नहीं होती। कभी–कभी उसको लगता है कि वो कोई दार्शनिक हो गया है। अरस्तू, सुकरात की तरह। आखिर, ऐसी बहकी–बहकी बातें भला कौन करता है ? कोई है, जो उसके तर्कों को काटकर दिखाये ? वो झूठ भी तो नहीं कह रहा। इतनी माथा–पच्ची के बाद भी वो किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाता। ये जिंदगी भी कितनी ऊहा–पोह से भरी पड़ी है ! लेकिन, बलिदान आखिर, रमेश ही क्यों दे और लालच क्या रौशनी के मन में नहीं आ गया था ? वो पद–प्रतिष्ठा और रुपये–पैसों को ही बहुत ज्यादा अहमियत नहीं देने लगी थी। क्या हुआ अगर वो यू.पी.एस.सी. क्रैक नहीं कर पाया । बहुत सारे लोग हैं जो यू.पी.एस.सी. क्रैक नहीं कर पाते तो, क्या उनके साथ किया हुआ लोगों का कमिटमेंट लोगों को भूल जाना चाहिए ? और, पैसा आदमी के जीवन में आता–जाता रहता है लेकिन प्यार नहीं। हरीश ने बेशक यू.पी.एस.सी. क्रैक कर लिया हो लेकिन प्यार तुम उससे नहीं करती, ये तुम भी जानती हो और तुमने तो सिविल सर्विसेज की परीक्षा पास कर ली है। तुम आज की नारी हो। आधुनिक काल की। तुम पर कोई अपने विचार थोप नहीं सकता। तुम स्वायत्त हो। कुछ दिनों में तुम्हारी ज्वाइनिंग किसी बड़े शहर में हो जायेगी। तुम प्रशासनिक अमले की प्रमुख होगी। तब भी प्रशासन को चलाने के लिये, जिले को संभालने के लिये, तुम अपने मम्मी–पापा से सहयोग माँगोगी? नहीं ना ...! उस समय तुम्हें अपने बुद्धि और विवेक का उपयोग करना होगा। क्या कोई प्रशासनिक अधिकारी कोई फैसला लेते समय अपने घरवालों से पूछता है या खुद फैसले लेता है? .. प्रशासन संभालना और शादी–ब्याह दोनों अलग–अलग मामले हैं। प्रशासनिक व्यवस्था संभालते हुए हम निजी नहीं होते लेकिन शादी–ब्याह नितांत पारिवारिक और निजी मामले होते हैं। घर वालों की मर्जी के बगैर मैं कोई फैसला नहीं कर सकती। बावजूद इसके कि हम सात–आठ सालों तक अच्छे दोस्त रहें हैं। भविष्य में भी हम अच्छे दोस्त बने रह सकतें हैं लेकिन हम दोस्ती के रिश्ते से बहुत आगे बढ़ चुके हैं। इन सात–आठ सालों में हम केवल रूम–पार्टनर ही नहीं रहे हैं बल्कि हम दोनों एक–दूसरे के सुख– दुःख के साथी भी रहे हैं और हम सिर्फ दोस्त ही नहीं हैं। ये बात तुम्हें भी अच्छी तरह पता है। अगर, मैं भी यू.पी.एस.सी. क्रैक कर लेता तो, आज की तारीख में हम दोनों शादी कर रहे होते। ''कर लेते तब ना .. !'' रौशनी की आवाज अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा ही तेज हो गई थी। ''तो क्या तुम मुझसे प्यार भी नहीं करतीं....?'' ''बी, प्रैक्टिकल यार । डोंट बी फूल। प्यार पहले करती थी लेकिन, अब नहीं। लोग क्या कहेंगे ? वैसे भी मुझे अब ट्रेनिंग के लिये जाना होगा। फिर मैं तुम्हें कहाँ–कहाँ लेकर जाऊँगी ? उसके बाद मेरी पोस्टिंग होगी। फिर उसी समय रौशनी का फोन बजता है। रौशनी फोन लेती है। फोन उसके पिता ने ही किया था । शायद फोन पर आवाज कुछ स्पष्ट नहीं है, रौशनी कई बार हैलो– हैलो कहती है लेकिन आवाज फिर भी नहीं आती। शायद नेटवर्क खराब था या शायद फोन ही खराब था। रौशनी फोन को स्पीकर पर ले लेती है। एक बूढ़ी आवाज स्पीकर से कौंधती है – 'क्या कर रही हो, अब तक तुम वहाँ ? यहाँ हरीश के पापा का बार–बार फोन आ रहा है। उन्हें हाँ, कहूँ या ना। 'आखिर के लाईन रमेश की छाती में शूल की तरह पैवस्त हो जाते हैं – 'उस कँगले रमेश को साफ मना कर देना शादी के लिये। हाँ मत कह देना। तुम बहुत भावुक हो, बेटी।' रौशनी बाप की बात पूरी होने से पहले ही फोन काट देती है। 'चलती हूँ मेरी शॉपिंग हो गई।' रौशनी की बात से रमेश की तँद्रा टूट जाती है। हाँ, चलो फिर मिलते हैं। 'अचानक से रमेश के दिमाग में हरीश का ख्याल आता है। वो, हरीश के बारे में रौशनी से पूछता है– 'तुम्हारा पति हरीश नहीं दिख रहा, वो कहाँ है ?' रौशनी के स्वर में उदासी कहीं गहरे तक उतर आती है – 'पिछले साल कोविड में वो नहीं रहे। ''ओह ! ''तुम ठीक से रहना। मॉस्को में भी बहुत से लोग मर रहे हैं । मैनें पति को तो खो दिया है लेकिन अब एक बहुत अच्छे दोस्त को नहीं खोना चाहती। अपना ख्याल रखना। दरअसल मेरी तकदीर ही खराब है।'' वो रोने लगी थी। 'मैं तुम्हारी, अपराधिनी हूँ । मुझे मेरे किये की सजा मिल रही है।' रमेश, आज अपने–आप को बहुत छोटा महसूस कर रहा था। वो सोच रहा था बेकार ही वो मॉस्को गया। बेकार ही रूसी भाषा सीखी। बेकार ही प्रोफेसर बना। तभी उसे प्रतिदान का ख्याल आया। किसी किये–अनकिये का प्रतिदान वो अकेले कहाँ भोग रहा था ? कभी–कभी मिथक भी सच हो जाते हैं !

❐❐❐

*श्री बालाजी स्पोर्ट्स सेंटर, मेघदूत मार्केट फुसरो,
बोकारो–829144, झारखंड

अलविदा..... मास्क भाई

एस.के.घोष*

हे मास्क भाई, तुमसे विदा होने की घड़ी अब पास आती मालूम होने लगी है। यह सोच–सोचकर ही मेरा दिल बैठा जा रहा है कि दो सालों/वर्षों का अपना साथ वर्तमान काल से भूतकाल में परिवर्तित हो जायेगा। अभी दो वर्ष पहले ही तुमसे पहली मुलाकात हुई थी। उस पहली मुलाकात में ही तुम इतने अपने लगने लगे थे कि उसके बाद तुम्हारे बिना घर से बाहर कभी निकलना न हुआ। यहाँ तक कि घर से कभी बाहर जाते वक्त एक अदद 'स्पेयर' मास्क भी स्टेपनी की तरह हमेशा अपने साथ रखा ताकि अगर अचानक तुममें कोई गड़बड़ी आ जाए तो तुरन्त तुम्हारे साथी–उतराधिकारी को धारण कर सकूँ। मास्क पहनकर घर से बाहर निकलते समय इस बात की कोई चिन्ता नहीं होती थी कि हमने दाढ़ी बनाई है या नहीं। मास्क पहने होने पर सामने वाले पर व्यंग्य से बेखटके मुस्कुरा भी लेते थे और चाहे तो जीभ भी चिढ़ा लिया करते थे। यहाँ तक कि कभी–कभी तो हम बिना नकली दाँतों की बत्तीसी लगाये उस मास्क के सहारे ही घर से कूच कर लिया करते थे। मास्क के अंदर छुपे हमारे पोपले मुँह तथा पान–गुटखा–खैनी के कारण बदरंगे बेअदब दाँतों के बारे में किसी को भी कुछ खबर ही नहीं लग पाती थी। अब जब मास्क के बिना ही घर से बाहर जाना होगा तो न शेव किए बगैर काम चलेगा और न ही बत्तीसी लगाये बिना। मास्क मुँह पर उगे उन कील–मुहांसों की पैदावार एवं पिचके गाल पर भी परदा डाल देता था, मगर मास्कविहिन मुखमंडल पर कील–मुहांसों की चित्रकारी के बिना टिकट ही हर कोई दर्शन कर पाएगा। आने वाले समय में जब मास्क लगाने की जरूरत नहीं रहेगी तब बहुत याद आयेगी मास्क भाई तुम्हारी। मास्क के साथ तो हम कभी–कभी अपने–आप को डॉक्टर भी समझ लिया करते थे। आपका विदाई समारोह अब निकट है। घर में पड़े मैचिंग कलर के मास्क व विभिन्न डिजाइन के मास्क कबर्ड में एक–दूसरे पर व्यंगात्मक टीक–टिप्पणी करना शुरू कर दिए हैं। आने वाली नस्लें हमारे फोटो अचरज से देखेगी जिसमें हमारा चेहरा मास्क के पीछे छुपा हुआ है। उन लोगों के लिए अपने मास्कधारी परदादा और परनाना में फर्क करना एक पहेली से कम नहीं होगा। होगा या नहीं ? दूर एक गाना बज रहा है–''जा मुझे ना अब याद आना, मुझे भूल जाने दे।''

❐❐❐

*सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (प्रशा. व लेखा), सिविल लाइन्स, बंगाली पारा, रायगढ़–496001, छत्तीसगढ़

काव्य कोना

विलासी पौधे

सविता दास सवि*

कुछ पौधे आलीशान
घरों के गमलों में
प्यार, दुलार और
स्प्रे बोतल के पानी की
मीठी बौछार पाकर
विलासिता की
पहचान बनकर
उग जाते हैं
ये पौधे धरती
के सीने में
जड़ों का फैलना
कैसा होता है
नहीं जानते
तूफान के बाद
आत्मविश्वास से
खड़े रहने का स्वाद
नहीं जानते
बिना किसी की
दृष्टि में आये भी
किसी बड़े अरण्य
का अखण्ड हिस्सा
बनना किसे कहते हैं
नहीं जानते
बनावट के साँचे
में ढलकर खुश
होते हैं
इतराते हैं
किसी शहर के
किसी आलीशान
फ्लैट की
बालकॉनी में .....

❐❐❐

*लचित चौक, तेजपुर, शोणितपुर, असम

ख्वाहिशें

नेतलाल यादव*

समय के अंतराल में
कुछ ख्वाहिशें जिंदा हैं
अब भी
दिल के पिंजरे में
जो सिर निकाल कर
पक्षी की भाँति
करता है कोशिश
भरना चाहता है
नीले गगन में उड़ान
जिसके पंखों में
अब भी जान बाकी है
कुछ ख्वाहिशें तो
घायल हैं
परिस्थितियों के गुलेल से
जिनका इलाज
संभव नहीं है, इलाज में
खुद डॉक्टर को बीमार
होने की संभावना
बढ़ जाती है
कुछ ख्वाहिशों ने तो
दम तोड़ दिया है
जिन्हें यादकर आँखों में
बह जातें हैं आँसू
जेब से निकल जाता है
खूबसूरत रुमाल
हो जाता है गीला
तभी एकाएक मन
झकझोरता है कि
ख्वाहिशें सबकी पूरी नहीं होती है
बहुत लोग ख्वाहिशों के
बोझ से दबे
सीने में दफनाए
रोज दफन हो रहे हैं
इसलिए जितना बन सके
मेहनत से कुछ काम करो
चार दिन की चाँदनी है
जग में रहकर नाम करो ।।

❐❐❐

*चरघरा नावाडीह, पंचायत–जरीडीह, थाना–जमुआ,
गिरीडीह, झारखंड

रेशम

अमीन मल्ला*

रेशम कपड़ा विश्व के सभी कपड़ों में सबसे अच्छा एवं पवित्र कपड़ा माना जाता है। इसीलिए रेशम को कपड़ों की रानी कहा जाता है। यों तो रेशम को विश्व के लगभग कई देशों में पैदा किया जाता है लेकिन रेशम की पैदावार में चीन सबसे आगे और हमारा देश भारत दूसरे नम्बर पर है। इस समय विश्व में 609332 टन की रेशम पैदा की जा रही है जिसमें 60 प्रतिशत अकेला चीन और 161127 टन की रेशम भारत में पैदा की जाती है। वैसे यह कहा जाता है कि रेशम पहले चीन में पाया गया लेकिन रेशम का जिक्र बहुत पुरानी धार्मिक किताबों जैसे ऋग्वेद में 6500 बी.सी. रामायण में 2450 बी सी और कुरान में 572 ए सी में है। कपड़ों के अलावा रेशम से बहुत सारी चीजें जैसे कालीन, पर्दे, कुशन, सर्जरी में उपयोग होने वाला धागा, पैराशूट, बुलेटप्रूफ जैकेट आदि बनाये जाते हैं इसके अलावा रेशम के प्यूपा से बहुत सारी दवाइयाँ एवं कॉस्मेटिक भी बनाई जाती है। हमारा देश भारत के रेशम उत्पादित राज्यों में रेशम की पैदावार बढ़ाने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं विभिन्न कार्यालय एवं स्वयं सेवी संस्था काम कर रही है। लेकिन रेशम की पैदावार में भारत को विश्व का नम्बर एक देश बनाने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड विभिन्न आर एण्ड डी स्कीमों का प्रयोग कर राज्य सरकारों के साथ पूर्ण प्रयास कर रहा है। इसलिए हम सभी को चाहिए कि भगवान के दिए गए अनमोल रत्न रेशम की कद्र करें और अपने देश भारत को विश्व का सबसे बड़ा रेशम उत्पादित देश बनाने में अपना पूर्ण योगदान दें।

❐❐❐

*वरिष्ठ तकनीकी सहायक, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल।

वो रोटियाँ

गीता चौबे गूँज*

याद बहुत आतीं हैं हमको, घी–चुपड़ी हुई रोटियाँ ।
वो माटी के मोहक चूल्हे, जलती हुई अंगीठियाँ।।
साधन अधिक नहीं थे लेकिन, स्वाद बहुत था भोजन में।
केक–पेस्ट्री में मिलेगा क्या, मिले जो खीर मोहन में।।
भोजन संग चौपाल भी होती, होती रहीं सरगोशियाँ,
याद बहुत आतीं हैं हमको, घी–चुपड़ी हुई रोटियाँ ।
महक फैलती घर में पूरे, गर्म–गर्म रोटी की जब।
मैं पहले तो मैं पहले का, शोर गूँजने लगता तब।।
सब्जी की भी फिक्र नहीं थी, नमक मिला कर खाते थे।
फिर तो भर दिन तक मस्ती में, खूब खेलते जाते थे।।
सखियों की भी याद अभी तक, जब थी खेलती गोटियाँ,
याद बहुत आतीं हैं हमको, घी–चुपड़ी हुई रोटियाँ ।
इन्हीं रोटियों की खातिर ही, कितने–कितने कर्म हुए।
ममता तक भी बिकती जाती, जाने कई अधर्म हुए।।
भाई, भाई का दुश्मन है, मूल यही बस रोटी है।
प्रेम–मिलन में अक्सर बाधक, बनती बस यह रोटी है।।
पिज्जा–बर्गर के अंदर अब, भरने लगे सब बोटियाँ,
याद बहुत आतीं हैं हमको, घी– चुपड़ी हुई रोटियाँ ।
दर–दर की ठोकर खिलवाती, क्षुधा मिटाती रोटी ये।
घर से भी बेघर करवाती, पापन भी है रोटी ये।।
रोटी! रोटी! रोटी! रोटी! हाहाकार मचे जग में।
मुश्किल है रोटी का मिलना, शूल भरे कितने मग में।।
इस रोटी के कारण ही तो, सहनी पड़ती कुबोलियाँ,
याद बहुत आतीं हैं हमको, घी–चुपड़ी हुई रोटियाँ ।

❐❐❐

*फ्लैट नं. 1013 R.R.सिगनेचर अपार्टमेंट बालाजी लेआउट,
चौकन्ना हल्ली थानीसंद्रा, मेन रोड, बेंगलूर–560064

बुनते रिश्ते

वीणा कुमारी*

जाड़े की ठिठुरन के बीच
जैसे ही धूप आँगन में पाँव पसारती
अम्मा जल्दी–जल्दी काम निपटा
बालकनी में बैठ जाती
सलाई और ऊन लेकर
हर बुनते फंदे के साथ बुनने लगती
नए–नए सपने
हम चचेरी, मौसेरी बहनों को
आपस में बतियाते देख कहती
बहनों की जिंदगी तो नदियों से भी कठिन है
नदियाँ भी एक दिन सागर में मिल जाती है
अपने दुख–सुख बाँट लेती है
पर बहनें जो एकबार अपने घर की हुई
फिर न मिल पाती एक–दूसरे से
मिलती भी है तो
दुख–सुख बतियाने का समय न रहता
फिर कहती....
जी भर बतिया ले बिटिया तुम सब
फिर तो ऊन सलाई के साथ ही
दुख–सुख बतियावे पड़े हैं
यही रिश्तेदार बहन भाई सब हो जावे हैं
अनुभवी अम्मा की निस्तेज आँखें
तब डबडबा आती थी
और मैं सोचती
कुछ रिश्ते ऐसे भी निभते हैं

❐❐❐

*फ्लैट सं.1204, प्रथम तल, गंगोत्री अपार्टमेंट, विष्णुपुर रोड,
झुमरी तिलैया, कोडरमा, झारखण्ड

गरीब घर की लड़कियाँ...

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव*

लड़कियाँ होना तो वैसे भी अभिशाप माना जाता है..
लड़कियों को वैसे भी गर्भ में पलने के पहले ही
प्रायः मार दिया जाता है..
उस पर भी यदि लड़की ने गरीब घर में जन्म लिया..
तो जैसे उसने सिद्ध महात्मा का श्राप पा लिया..
माँ का जब दूसरे के घर चौका–बरतन करने जाना..
तो साथ में जाकर काम में हाथ बटाना..
ऐसे लड़कियों को पढ़ने–लिखने के सपने न होते हैं पूरे..
सरकारी प्राइमरी में पाँचवीं या आठवीं के बाद..
पढ़ने के सपने अक्सर रह जाते हैं अधूरे..
हालाँकि ये लड़कियाँ भी चाहती हैं उड़ना
ख्वाबों को चाहती हैं पूरा करना..
पर उन्हें डाँट–डपट कर बता दी जाती हैं उनकी सीमाएँ..
ऐसे हजारों लड़कियों की मृतप्राय हो जाती अभिलाषाएँ..
तुम्हें तो शादी के बाद चूल्हा–चौका ही करना है..
पढ़–लिखकर कहाँ तुम्हें कलेक्टर बनना है
गरीब घर की लड़कियाँ को खेलने–कूदने की उम्र में
डाल दी जाती है पैरों में लोहे के जंजीरों की बेड़ियाँ..
घर व घर से बाहर के कामों की जिम्मेदारियाँ..
चौका–बेलन, कटाई–दवाई, झाड़ू–बुहारू, कंडा–गोबर व न जाने क्या क्या..
चहकने–फुदकने की आयु में ही अक्सर उनकी कर दी जाती है शादी..
सृष्टि से मिले सुंदर जीवन की हो जाती है बर्बादी..
क्या समता का दंभ भरने वाला समाज करेगा विचार..
ऐसी गरीब घर के लड़कियों पर करेगा उपकार..
उन्हें भी अपना मिलेगा अधिकार..
क्या उनके उड़ने के सपने होंगे साकार..
खुशियों से जीवन निर्वाह का मिलेगा पुरस्कार..
या केवल मंचों के भाषणों तक..
लड़के–लड़कियों की समानता की होगी जय–जय कार...

❐❐❐

*ग्राम–कैतहा, पोस्ट–भवानीपुर, बस्ती 272124, उत्तर प्रदेश

दो गजलें

डॉ. राजीव गुप्ता*

जीत हमारी होगी

संघर्षों से यारी होगी,
निश्चित जीत तुम्हारी होगी।
अँधियारे को दिया दिखाओ,
रात बहुत उजियारी होगी।
जीने की सौगात खत्म अब,
मरने की तैयारी होगी।
कदम बढ़ाओ हार न मानो,
दुनिया अपनी सारी होगी।
दिल जिसको तुम दे बैठे हो,
चैक वहीं से जारी होगी।
ठुकराओ मत प्रेम किसी का,
भूल बहुत यह भारी होगी।
शामिल हूँ मैं सबके सुख में,
दुख में हिस्सेदारी होगी।
यूँ ही जग में रम जाओगे,
मरने में दुश्वारी होगी।
मुश्किल में जो मिल जाएगा,
हर धड़कन आभारी होगी।
राज सफलता का जो समझा,
जीती बाजी हारी होगी।
बात उसूलों की जब होगी,
तब–तब बात हमारी होगी।

❐❐❐

धनवान हुआ हूँ

मैं कितना हैरान हुआ हूँ,
जब तेरा मेहमान हुआ हूँ।
सबसे पहले नजर मिली थीं,
फिर मैं तेरी जान हुआ हूँ।
अब तक मैं ही समझ न पाया,
पागल हूँ, नादान हुआ हूँ।
जिस महफिल में शिरकत की है,
उस महफिल की शान हुआ हूँ।
मुझसे मिलकर दिल बहलायें,
खुशियों का सामान हुआ हूँ।
जिस दिन से तू हुई पराई,
मैं भी तो वीरान हुआ हूँ।
जीवन के सुख–दुःख से इतना,
क्यों आखिर अनजान हुआ हूँ।
हुस्न तुम्हारा, दौलत तेरी,
मैं तो बस दरबान हुआ हूँ।
जब से तूने मुझको परखा,
मैं हीरे की खान हुआ हूँ।
जीवन सबका क्षणभंगुर है,
मैं ही क्या शमशान हुआ हूँ।
मानो या मत मानो लेकिन,
मैं तुझ पर कुर्बान हुआ हूँ।
जब से तू जीवन में आई,
तब से मैं इंसान हुआ हूँ।
तुझ को छू कर यूँ लगता है,
मैं भी अब धनवान हुआ हूँ।

❐❐❐

*5/11, बाग कूँचा, फर्रुखाबाद–209625, उत्तर प्रदेश

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान द्वारा होटल एवीएन ग्रांड होटल, राँची में होने वाले वन्य रेशम उत्पादन : प्रचुर अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु समीक्षा बैठक करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार।

संस्थान द्वारा होटल एवीएन ग्रांड होटल, राँची में आयोजित वन्य रेशम उत्पादन : प्रचुर अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण का सम्बोधन।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते मुख्य अतिथि डॉ. एस. अय्यपन एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन करते मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में संस्थान द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका रेशम वाणी–55 का विमोचन करते मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

संस्थान में आयोजित नेशनल यूनिटि दिवस का एक दृश्य।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित प्रेस मिलन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण

उत्तर प्रदेश प्रौद्योगिकी प्रसार एवं अनुभव साझाकरण पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला को सम्बोधित करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण

राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन में इस संस्थान को वर्ष 2020–21 हेतु पूर्वी क्षेत्र में क्षेत्रीय राजभाषा प्रथम पुरस्कार मिला, पुरस्कार प्राप्त करते संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण।

राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन में क्षेरेउअके, बारीपदा को वर्ष 2021–22 हेतु पूर्वी क्षेत्र में क्षेत्रीय राजभाषा द्वितीय पुरस्कार मिला, पुरस्कार प्राप्त करते बी.डी..पटनायक, वरिष्ठ तकनीकी सहायक।

राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन में इस संस्थान को वर्ष 2021–22 हेतु पूर्वी क्षेत्र में क्षेत्रीय राजभाषा प्रथम पुरस्कार मिला, पुरस्कार प्राप्त करते संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण।

राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन में इस संस्थान को वर्ष 2021–22 हेतु पूर्वी क्षेत्र में प्रशस्ति–पत्र मिला, पुरस्कार प्राप्त करते संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री के. के. बडोला।

772_(0123) Anapurna Press and Process 6287999194 e-mail : appranchi.1969@gmail.com